अमर वाणी

संसार के महान विचारकों के सैकड़ों ग्रन्थों में से चुनी हुई सूक्तियों का संचय

विभिन्न देशों के संत-महात्माओं और विद्वानों की अमर वाणियां इस पुस्तक में संगृहीत हैं। जीवन के कठिन क्षणों में ये मार्ग-दर्शन करेंगी और अवकाश के क्षणों में स्वस्थ व ज्ञान-वर्धक मनोरंजन प्रदान करेंगी।

अमर वाणी

'अमर वाणी' गागर में सागर है। विभिन्न देशों के संतों, विचारकों और विद्वानों ने हर विषय पर कुछ न कुछ कहा है। उस सारे विचार-सागर का मंथन जन-साधारण के लिए सम्भव नहीं। योग्य सम्पादक ने आपके लिए उसमें से अमृत निकालकर रख दिया है।

यह अमूल्य कोष आपको हर समय काम देगा। सूक्तियां पढ़िए। जीवन के कठिन क्षणों में ये आपको मार्गदर्शन देंगी और अवकाश के समय स्वस्थ और ज्ञान-वर्धक मनोरंजन प्रदान करेंगी।

'अमर वाणी' में,
जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में
सफलता और यश प्राप्त करनेवाले
आदर्श पुरुषों की मार्मिक,
सारगर्भित सूक्तियां संकलित हैं।
प्रत्येक सूक्ति दिशादर्शक
और प्रकाश-स्तम्भ का काम देनेवाली है।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

अमर वाणी

AMAR VANI

QUOTATIONS

MANASHANS

मूल्य : दो रुपये

विषय-सूची

पद्य-भाग

अमर वाणी

अवसर

सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बाट जोहते हैं, अपितु वे हैं जो अवसर को अपना दास बना लेते हैं।

—ई० एच० चेपिन

हमेशा भाग्य के धागों को कौन देख सकता है! क्षण-भर के लिए हितकारी अवसर आता है, हम उसे खो देते हैं और महीनों तथा वर्षों का नाश हो जाता है। —कार्लाइल

आज का अवसर घूमकर खो दो—कल भी वही बात होगी और फिर अधिक सुस्ती आएगी। —शेक्सपियर

ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नहीं है जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो; परन्तु जब वह देखता है कि वह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं है, तो वह उलटे पैरों लौट जाता है। —कार्डिनल

कई लोग असाधारण अवसरों की बाट जोहा करते हैं। किन्तु वास्तव में कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं है। छोटे से छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसमें भिड़ा देने से वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है। —स्वेट मार्डेन

हरेक के हाथ में अपने को उपयोगी, कीर्तिवान और सुखी बनाने के साधन हैं। बुद्धि-सुधार के द्वारा गृद्धदृष्टि से सुधार के प्रत्येक अवसर की ताक में रहने, विकारों को तुच्छ समझने और इन्द्रियजनित सुखों को घृणा की दृष्टि से देखने से उपर्युक्त बातें हो

सकती हैं। —एडवर्ड एव्हरेस्ट

इसकी कल्पना भी मत करो कि अवसर तुम्हारे द्वार पर दुबारा पुकारेगा। —चैम्फर्ट

जब तक आलसी निद्रालीन है तब तक गहरी भूमि जोत लो। —अनाम

बुराई करने के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं, पर भलाई का अवसर वर्ष में एक बार आता है। —वाल्टेयर

अध्ययन

मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की। —जोज़ेफ एडीसन

अध्ययन के प्रति प्रेम व्यक्तियों को जीवन में आनेवाले विषाद और क्लान्ति के क्षणों को आनन्द और प्रसन्नता के क्षणों में परिणत करने में सक्षम बनाता है। —माण्टेस्की

अध्ययन हमें आनन्द प्रदान करता है, अलकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है। —फ्रांसिस वेकन

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन के द्वारा अधिक व्यक्ति महान वने हैं। —सिसेरो

अत्यधिक अध्ययन भी शरीर की क्लान्ति है। —वाइवल

पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई खुशी उतनी स्थायी। —लेडी मौंटैग्यू

आज पढ़ना सब जानते हैं, पर क्या पढ़ना चाहिए, यह कोई नहीं जानता। —बर्नार्ड शॉ

अमरत्व

जो कुछ मानवीय है, वह सभी अमर है। —बुल्वर लिटन

अमरत्व की भावना ही मनुष्य के जीवन को सौंदर्य तथा माधुर्य से पूर्ण बनाती है। यह भौतिक स्वर्ग या उस पार का

बहिश्त, एक ही भावना हैं। चिरसुख की इच्छा ही उनमें पाई जाती है। —डा० रघुवीर

श्रेष्ठ व्यक्ति कभी नहीं मर सकता। —कैली माकस

हमारा जीवन तो हमारे अमरत्व का शैशव-मात्र है। —गेटे

हमारी अमरत्व की मधुर आशा किसी धर्म से उद्भूत नहीं होती, अपितु सारे धर्म इसीसे उद्भूत होते हैं। —इन्जरसोल

विना अमरत्व की भावना से प्रेरित हुए आज तक किसीने अपने देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग नहीं किया। —सिसेरो

अज्ञानता

अपनी अज्ञानता का आभास ही बुद्धिमत्ता के मंदिर का प्रथम सोपान है। —स्पर्जन

जो कुछ मुझे ज्ञात है वह यही कि मेरे पास रंच-मात्र भी ज्ञान नहीं है। —सुकरात

अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है जिसमें न चांद हो, न तारे। —कन्फ्यूशियस

ऐसा भी समय आता है जब अज्ञानता भी वरदान सिद्ध होती है। —डिकेन्स

अज्ञानी रहने की अपेक्षा उत्पन्न ही न होना कहीं श्रेयस्कर है, क्योंकि अज्ञानता ही दुर्भाग्य का मूल है। —प्लेटो

अज्ञान की सबसे बड़ी संपत्ति होती है मौन, और जब वह इस रहस्य को जान जाता है तब वह अज्ञान नहीं रह जाता। —सादी

अज्ञानता ही मोह और स्वार्थ की जननी है, अतः अज्ञानी ही दुष्ट या कापुरुष होते हैं। —महात्मा गांधी

जो कुछ मैं नहीं जानता उसके विषय में अपनी अज्ञानता स्वीकार करने में मुझे तनिक लज्जा नहीं आती। —सिसेरो

अज्ञानता से कभी कोई समस्या नहीं सुलझती।

—डिज़राइली

जहां अज्ञानता ही वरदान हो वहां बुद्धिमानी दिखाना भी

मूर्खता है। —ग्रेविल

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर के घर का दरवाज़ा किसीके लिए बन्द नहीं ; और यदि वह बन्द हो जाए तो परमेश्वर परमेश्वर नहीं, ऐसा मैं मानता हूं। —तिलक

मनुष्य जन्म से ही न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न यज्ञोपवीत। जो सत्कार्य करता है वह द्विज है, और जो कुकर्म करता है वह नीच। —बुद्ध

मनुष्य के साथ प्रेम करने का ही पाठ शास्त्रों ने बताया है, घृणा करना तो पाप है। महात्मा गांधी ने कहा है कि छुआछूत हिंदू धर्म के लिए कलंक है ; हिन्दू जाति इसे मिटाने में जब तक सफल नहीं होती, हिन्दू धर्म खतरे में है। —ठक्कर बप्पा

अहंकार

मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। —रोमो

दम्भ का अन्त सदैव अहंकार होता है और अहंकारी आत्मा सदैव पतित होती है। —बाइबल

नाश के पूर्व व्यक्ति अहंकारी हो जाता है, किन्तु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है। —बाइबल

मेरे लिए मुझसे अधिक बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है। —स्टर्नर

प्रेमी एक-दूसरे से क्यों नहीं ऊबते, इसका कारण है कि वे सदा अपने विषय में ही बातचीत करते हैं। —ला रोश फूको

क्या तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हें भला कहें ? तो तुम स्वयं को भला मत कहो। —पैस्कल

अभ्यास (आदत)

आदत रस्सी की तरह है। पर रोज़ इसमें हम एक बट देते हैं, और अन्त में इसे तोड़ नहीं सकते। —मान

बुरी आदतों से हमारी क्षुद्रता का आभास मिलता है।

—डा० एडलर

आदतों को यदि रोका न जाए तो वे शीघ्र ही लत बन जाती हैं। —सन्त आगस्तिन

लोमड़ी अपनी खाल बदलती है, आदतें नहीं। —सेटोनियस

अतिथि

अतिथि-सत्कार से इंकार करना ही सबसे बड़ी दरिद्रता है।

—इमर्सन

मैं क्षुधात्रसित था और तुमने मुझे खाद्य प्रदान किया; मैं पिपासाकुल था और तुमने मुझे पेय प्रदान किया; मैं एक अजनबी था, तुमने मुझे आश्रय प्रदान किया। —बाइबल

काश, वन की शान्त छाया में मेरी एक कुटी होती, जिसमें पथ-गामी रुककर विश्राम ले पाते! —बाइबल

हृदय गुफा थी शून्य, रहा घोर सूना।
इसे बसाऊं शीघ्र, बढ़ा मन दूना॥
अतिथि आ गया एक, नहीं पहचाना।
हुए नहीं पद-शब्द, न मैंने जाना॥—'प्रसाद'

अभिनय

किसी भी सुखान्त अभिनय में सबसे कठिन भूमिका है मूर्ख की, और उसको खेलनेवाला कदापि मूर्ख नहीं होना चाहिए।

—सर्वेण्टिस

जब एक अभिनेता के पास धन होता है, तब वह पत्र न भेजकर

तार ही भेजता है। —एण्टन चेखव

अनुपस्थिति

अनुपस्थिति में हृदय की जिज्ञासा और भी तीव्रतर हो जाती है। —थामस बेली

किसीको भी अनुपस्थित व्यक्ति की निन्दा करने को उत्सुक नहीं होना चाहिए। —प्रापर्टियस

अंधकार

जुगनू तभी तक चमकता है जब तक उड़ता है, यही हाल मन का है। जब हम रुक जाते हैं तो अंधकार में पड़ जाते हैं। —बेली

अरुणोदय के पूर्व सदैव ही सघन अंधकार होता है।
—थामस फुलर

असफलता

केवल जीवन की असफलताएं ही सद्गुणों से वंचित रखती हैं।
—महात्मा गांधी

असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है। —साउथ

उज्ज्वल मनुजत्व के लिए संचित यौवन के शब्दकोष में 'असफल' नाम का कोई शब्द नहीं होता। —बुल्वर लिटन

असफलता का प्रधान कारण प्रायः धनाभाव नहीं, अपितु शक्ति और सामर्थ्य का अभाव होता है। —डेनियल वेब्स्टर

असन्तोष

नदी का एक किनारा निःश्वास लेकर कहता है—"सम्पूर्ण

सुख सामने के किनारे पर ही है !" नदी का दूसरा किनारा आहें भरकर कहता है—"दुनिया में जितना सुख है वह सब पहले ही किनारे पर है !"
—रवीन्द्र

असन्तोष पराजय का दूसरा नाम है। —बीरजी

असन्तुष्ट व्यक्ति के लिए सभी कर्तव्य नीरस होते हैं। उसे तो कभी भी किसी वस्तु से सन्तोष नहीं होता। फलस्वरूप उसका जीवन असफल होना स्वाभाविक है। —विवेकानन्द

असन्तोष ही किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की उन्नति का प्रथम चरण है। —वाइल्ड

नील नभ में शोभित विस्तार,
प्रकृति है सुन्दर, परम उदार।
नर-हृदय, परिमित, पूरित स्वार्थ;
बात जंचती कुछ नहीं यथार्थ।
जहां सुख मिला न उससे तृप्ति,
स्वप्न-सी आशा मिली सुषुप्ति।—'प्रसाद'

आपत्ति

आपत्ति में मनुष्य स्वयं को पहचान लेता है। —अनाम

ईश्वर मनुष्य को गम्भीर जल में इसलिए नहीं डालता कि वह डूब जाए, अपितु उसे पुनीत बनाने के लिए। —ऑहे

सतत सफलता हमें संसार का केवल एक पक्ष दिखाती है; आपत्तियां उस चित्र का दूसरा पक्ष भी दर्शाती हैं। —कोल्टन

ऐश्वर्य एक महान शिक्षक है, आपत्तियां महत्तर।
—हैज़लिट

जिस प्रकार टोड विषमय होते हुए भी अपने मस्तक में एक रत्न प्रच्छन्न रखता है, उसी प्रकार आपत्तियां भी दुःखमय प्रतीत होते हुए भी मधुमय हैं। —शेक्सपियर

आपत्तियों से बढ़कर और कोई बड़ी शिक्षा नहीं है।
—डिज़राइली

हरएक आपत्ति अभिशाप नहीं होती। जीवन की प्रारम्भिक आपत्तियां अनेक बार आशीर्वाद सिद्ध होती हैं। —शार्प

हर आपत्ति एक को दृढ़ता सौंपती है तथा दूसरे को निर्बलता एवं शिथिलता। —लेनिन

आकांक्षा

जब तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की आकांक्षा रखते हो, उस समय दूसरे या तीसरे स्थान तक पहुंच जाना भी पर्याप्त श्रेयस्कर है। —सिसेरो

बहुत-से व्यक्ति यदि महान आकांक्षाओं से पूर्ण न होते, तो छोटी बातों में सफल हो जाते। —लांगफेलो

यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो। —साइरस

महत्त्वाकांक्षा अपने स्वामी को नष्ट कर देती है।

—तालमद

यदि आकांक्षाएं घोड़े बन पातीं तो भिखारी भी उनपर सवार हो जाते। —लोकोक्ति

यदि मनुष्य अपनी आकांक्षाओं को आधा कर लेता, तो उसकी कठिनाइयां दुगुनी हो जातीं। —फ्रैंकलिन

जो कुछ तुम इच्छा करते हो यदि तुम वह कर नहीं सकते तो वही इच्छा करो जो तुम कर सकते हो। —टेरेन्स

आलोचना

दूसरे तुम्हारे विषय में क्या सोचते हैं, इसकी अपेक्षा तुम्हारे विषय में अपने विचार अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। —सेनेका

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्रायः फूल और कीड़े दोनों को ही अलग कर देती है। —रिश्टर

आलोचक प्रायः वे ही व्यक्ति बनते हैं जो कला और साहित्य

के क्षेत्र में असफल रहते हैं। —डिज़राइली

जिस प्रकार एक निराश चोर चोरों को पकड़नेवाला बन जाता है, उसी प्रकार निराश होकर लेखक आलोचक बन जाते हैं।

—शैली

एक शेर को भी मक्खियों से अपनी रक्षा करनी पड़ती है।

—जर्मन लोकोक्ति

आलस्य

आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा है। —म० गांधी

आलस्य जीवित व्यक्ति की मृत्यु है। —जेरिमी टेलर

मोर्चा लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस-घिसकर मिटना कहीं श्रेयस्कर है। —विशप कम्बरलैंड

कुछ व्यक्तियों में तत्परता से कुछ न करने की पूर्ण प्रतिभा होती है। —हैलीबर्टन

खोया समय कभी प्राप्त नहीं हो सकता। —अनाम

आलस्य मूर्खों का अवकाश-दिवस है। —चैस्टरफील्ड

जो कुछ नहीं करता, केवल वही आलसी नहीं है, आलसी वह भी है जो अपने काम से भी अच्छा काम पा सकता था।

—सुकरात

आलस्य दरिद्रता का दूसरा नाम है। —तिरुवल्लुवर

आत्मा

आत्मा, जो हमारा आध्यात्मिक जीवन है, हमारा अमरत्व अपने में छिपाए हुए है। —म० गांधी

विश्व में एक मूल्यवान वस्तु केवल आत्मा है। —इमर्सन

उस व्यक्ति को क्या लाभ जो सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त कर ले किन्तु स्वयं अपनी आत्मा को खो दे। —बाइबल

इसे (आत्मा को) न शस्त्र काट सकते हैं, न इसे आग जला

सकती है; न इसे पानी गीला कर सकता है और न इसे हवा सुखा सकती है। —गीता

समुद्रों से बड़ी एक चीज़ है—आकाश। आकाश से बडी एक चीज है मनुष्य की आत्मा। —विक्टर ह्यूगो

अपनी आत्मा को कोसने से बचना मनुष्य की पहली एहतिहात होनी चाहिए और संसार की बदनामी से बचना दूसरी।

—एडीसन

आवश्यकता

हमारी आवश्यकताएं जितनी ही कम होंगी हम उतने ही देवताओं के निकटतम होंगे। —सुकरात

आवश्यकता किसी वियम का पालन नहीं करती। —अनाम

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। —अनाम

आवश्यकता ही प्राय: प्रतिभा की प्रेरक है। —बाल्ज़क

आवश्यकता दुर्बल को भी साहसी बना देती है। —सालस्त

आश्चर्य

मनुष्य आश्चर्य पर मुग्ध होते हैं और यही तो हमारे सम्पूर्ण विज्ञान का मूल आधार है। —इमर्सन

आश्चर्य ही उपासना का आधार है। —कार्लाइल

कोई आश्चर्य भी तीन दिन से अधिक नहीं टिकता।

—इटालियन लोकोक्ति

इतिहास

इतिहास-निर्माताओं के पास इतना समय नहीं कि वे इसे लिपिबद्ध कर सकें। —मैटनिच

वास्तव में इतिहास क्या है—परिवर्तन का एक लेखा-

मात्र । —पं० नेहरू

इतिहास ऐसी घटनाओं का लेखा है जो कभी नहीं घटीं और उसका लेखक ऐसा व्यक्ति है जो घटनाओं के समय कभी उपस्थित नहीं था। —अनाम

इतिहास केवल श्रुतिकथाओं का लेखा-मात्र है। —कार्लाइल

नर-संहार ने कभी संसार के इतिहास को नहीं बदला है।

—डिज़राइली

जीवन-कथाओं के अतिरिक्त और कुछ सत्य इतिहास नहीं है। —इमर्सन

वास्तव में इतिहास मानवता के अपराधों, मूर्खताओं, एवं दुर्भाग्यों के लेखे से अधिक कुछ नहीं है। —गिबन

इतिहासज्ञ एक ऐसा भविष्यवक्ता है जो भूत को निहारता रहता है। —श्लीगैल

सम्पूर्ण इतिहास असत्य है। —राबर्ट वालपोल

मानव-इतिहास प्रधान रूप में विचारों का इतिहास है।

—एच० जी० वेल्स

प्रत्येक ऐतिहासिक घटना कुछ इस प्रकार के अमिट चिह्न अंकित करती है जो किसी राष्ट्र की अमूल्य निधि बनकर भावी पीढ़ियों को युग-युग तक प्रेरणा और चेतना प्रदान किया करते हैं। —अनाम

इच्छाएं

इच्छा से दुःख आता है; इच्छा से भय आता है; जो इच्छाओं से मुक्त है वह न दुःख जानता है न भय। —बुद्ध

तुम अपनी इच्छाओं को जितना घटाओगे, उतने ही परमात्म-पद के निकट होगे। —सुकरात

जीवन के केवल दो स्थल ही दुःखमय होते हैं—प्रथम तो इच्छाओं की पूर्ति हो जाना और द्वितीय इच्छाएं अपूर्ण रहना।

—बर्नार्ड शॉ

बाद में उत्पन्न होनेवाली सारी इच्छाओं की पूर्ति करने की अपेक्षा पहली इच्छा का दमन कर देना कहीं सरल और श्रेयस्कर है। —फ्रैंकलिन

जो व्यक्ति इच्छाओं से मुक्त है, सदैव स्वतन्त्र रहेगा। —लेबूलेय

इच्छा पर विचार का शासन रहे। —सिसेरो

ईमानदारी

यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहनें हैं। —इमर्सन

जो यह कहता है कि 'ईमानदार व्यक्ति' नाम की कोई वस्तु है ही नहीं, वह स्वयं धूर्त है। —बर्कले

ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है। —सर्वेण्टिस

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। —पोप

ईश्वर

ईश्वर अपने बच्चों के नेत्रों को कभी-कभी आंसुओं से धोता है ताकि वे उनकी प्रकृति और आदेशों को सही-सही पढ़ सकें। —काइलर

ओम्—यही वास्तविक ब्रह्म है, चरम सत्य। —उपनिषद्

एक सत्यस्वरूप परमेश्वर को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं। —ऋग्वेद

ईश्वर के अगणित नाम हैं, क्योंकि उसकी लीलाएं अगणित हैं। —म० गांधी

ईश्वर ही सर्वज्ञान-सम्पन्न है, महान प्रेमी और संकल्पस्वरूप है। —राधाकृष्णन्

प्रत्येक व्यक्ति ही ईश्वर की लघु प्रतिमा-मात्र है।—मेनीलियस

ईश्वर ही हमारा आश्रयदाता और शक्तिप्रदाता है। वही आपत्काल की सबसे बड़ी सहायता है। —साम

ईश्वर उन्हींकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। —अनाम

यदि ईश्वर न भी होता तो उसका आविष्कार करना हमारे लिए परम अपेक्षित हो जाता। —वाल्टेयर

दृश्य ईश्वर क्या है ! गरीब की सेवा। —गांधी

ईश्वर-भक्ति

एक कवि ने ईश्वर-भक्ति की तुलना बाघ से की है। जिस प्रकार बाघ पशुओं का भक्षण करता है, उसी प्रकार ईश्वर-भक्ति भी मनुष्यों को फंसाने वाले सारे शत्रुओं का भक्षण कर जाती है—लोभ और क्रोध पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। —रामकृष्ण परमहंस

एक पवित्र हृदय भक्ति का मन्दिर होता है, वहां साधक त्याग की पवित्र अग्नि प्रज्वलित करता है, जो अदृश्य होती है, किन्तु फिर भी अनुभव-योग्य होती है। —हन्ना मोर

स्वयं के सत्य की अथक खोज ही भक्ति है। —शंकराचार्य

सर्वात्मभाव मेरा, हां कौन छीन ले अब;
तेरी ही भक्ति में मन मेरा रँगा हुआ जब ? —अनाम

रुक्मिणी ने एक ही तुलसी-दल से तोला प्रभु गिरधर को।
—अनाम

को जानै को जैहै जमपुर को सुरपुर पर धाम को।
तुलसिहि बहुत भलो लागत जगजीवन राम गुलाम को।
—तुलसी

मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला।।
—तुलसी

ईर्ष्या

ईर्ष्या करनेवाले मनुष्य में स्वयं कुछ बनने की महत्त्वाकांक्षा नहीं होती, अपितु उसकी अभिलाषा होती है कि दूसरा भी मार्ग-

पतित होकर उसके समान हो जाए। इसीलिए ईर्ष्या को पाप माना गया है। —'चढ़ती कला' से

जिस प्रकार कीट वस्त्रों को कुतर डालता है, उसी प्रकार ईर्ष्या मनुष्य को नष्ट कर देती है। —संत क्रिसोस्तम

पूर्वी लोकोक्ति है कि पड़ौसी की मुर्गी भी हमें हंस प्रतीत होती है। —मदाम डेलुज़ी

दयापात्र बनने की अपेक्षा ईर्ष्या का पात्र बनना कहीं श्रेयस्कर है। —हीरोडोटस

महान पुरुषों पर अधिकांश व्यक्ति भौंकते ही हैं जैसेकि किसी अजनबी को देखकर कुत्ते भौंकते हैं। —सेनेका

उद्‍बोधन

उठो नई किरण लिए जगा रही नई उषा
उठो, उठो, नये संदेश दे रही दिशा-दिशा
खिले कमल अरुण तरुण प्रभात मुस्करा रहा
गगन विकास का नवीन साज है सजा रहा
उठो, चलो, बढ़ो, समीर शंख है बजा रहा
भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।

—सत्यनारायण लाल

उन्नति

बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असंभव है। —रामकृष्ण परमहंस

मैं संस्कारों में विश्वास नहीं करता, स्वाभाविक उन्नति का विश्वासी हूं। —विवेकानन्द

प्रत्येक को अपनी ही उन्नात में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। —ऋषि दयानन्द

नवीन घटनाएं नये कर्तव्यों का सृजन करती हैं और पुरानी भली बातें भी भद्दी प्रतीत होने लगती हैं। किन्तु जो सत्य को हृदयस्थ करके चलते हैं वे निरन्तर ही उन्नति के पथ पर अग्रसर होते जाते हैं।

—लावेल

आधुनिक उन्नति से जो संपत्ति बढ़ रही है, जब तक वह पूंजी का निर्माण और विलासिता की उत्पत्ति में लगी रहेगी, तब तक उन्नति सच्ची और स्थायी नहीं बन सकती। —हेनरी जार्ज

तुम्हारे मार्ग में चाहे गुलाब के फूल आएं चाहे कांटे, किन्तु निरन्तर चलते रहो, झंझावात उठे अथवा हिमपात होने लगे, किन्तु निरन्तर बढ़े चलो; क्योंकि तुम्हारी मछलियां तट के निकट ही नहीं रखी हैं। अपनी बंसी को संभालो और बढ़े चलो। —स्टैण्टन

उपदेश

यदि तुम मुझे उठाना चाहते हो तो तुम्हारा उच्च स्तर पर होना आवश्यक है। —इमर्सन

किसी उपदेशक के दोषों पर प्रायः जल्दी ही ध्यान आकर्षित होता है। —लूथर

जैसा हम कहते हैं वैसा करना चाहिए, जैसा करते हैं वैसा नहीं। —वॉकेशियो

उपदेशकों की जांच यह कहने में नहीं है कि अमुक उपदेश कितना सुन्दर है, अपितु यह कहने में है कि ऐसा करके दिखाऊंगा।

—संत फ्रांसिस

प्रिय शिष्यो, मैंने तुम्हें जीवन के विगत तीस वर्षों में यह सिखाया है कि जीवित कैसे रहा जाए। अब मैं तुम्हें शीघ्र ही यह सिखाऊंगा कि मरा कैसे जाए। —सैण्डीज

दूसरे को उपदेश देना सरल है। —पंचतन्त्र

जिसे हर कोई देने को तैयार रहता है पर लेता कोई नहीं, ऐसी वस्तु क्या है? उपदेश, सलाह। —स्वामी रामतीर्थ

उद्देश्य

जो नाविक अपनी यात्रा के अंतिम बंदरगाह को नहीं जानता, उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहती। —लोकोक्ति

ऊंची से ऊंची चोटी पर पहुंचना हो तो अपने उद्योग को निचली से निचली सतह से आरम्भ करो। अपने काम से जिसका सम्बन्ध हो, ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और अनुपयोगी न समझो, उसका पूरा ज्ञान प्राप्त करो। —स्वेट मार्डेन

महान उद्देश्य से शासित व्यक्ति को भाग्य नहीं रोक सकता। —अनाम

जिसका उद्देश्य ऊंचा है, उसे आरामतलबी और हरदिल-अज़ीज़ी से खौफ खाना चाहिए। —इमर्सन

उद्योग

क्या तुम सच्चे हृदय से उद्योगी हो ? तो इस क्षण को व्यर्थ मत जाने दो। जिस बात को तुम कर सकते हो अथवा जिस बात का तुम स्वप्न देख सकते हो, उसे प्रारम्भ कर दो। —वरले

मैं मार्ग खोज लूंगा अथवा अपना मार्ग स्वयं बना लूंगा।—वरले

यदि तुममें उद्योगी बनने की क्षमता है तो अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित कर अपने उद्देश्य की पूर्ति में निरत हो जाओ, बाधाओं और विरोधों से भयभीत मत बनो। सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी। —अनाम

उपासना

किसी राष्ट्र के लिए इससे अधिक दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि वहां के व्यक्तियों में उपासना का अभाव हो। —इमर्सन

जब मनुष्य उपासना प्रारम्भ करते हैं, तभी वे बढ़ने लगते हैं। —कैल्विन कूलिज

एकाग्रता

जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति है—किसी विशेष बात की प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना। उसीकी पूर्ति करने में मनुष्य को सुख मिलता है। —इमर्सन

मैं एक आवाज़ सुन रहा हूं, उसे तुम नहीं सुन सकते। वह मुझसे कह रही है—'रुको मत'। मुझे कोई हाथ उठाकर बुला रहा है, परन्तु तुम उस हाथ को नहीं देख सकते। —टिकेल

जिसमें तुम्हारी प्रवृत्ति है, उसीमें लगे रहो। अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोड़ो। प्रकृति तुम्हें जो कुछ बनाना चाहती है, वही बनो। तुम्हें विजय प्राप्त होगी। इसके विपरीत यदि तुम और कुछ बनना चाहोगे तो कुछ भी न बन सकोगे। —सिडनी स्मिथ

संसार का संचालन करने के लिए मैं बंधा हुआ नहीं हूं, लेकिन ईश्वर ने मेरे लिए जो काम बनाया है, उसे अपनी सारी शक्ति लगाकर पूर्ण करने के लिए मैं बंधा हुआ हूं। —जीन एंजिलो

जो व्यक्ति जीवन में एक बात खोजता है, वह आशा कर सकता है कि जीवन समाप्त होने से पूर्व वह उसे प्राप्त हो जाएगी। —थोएन मेरेडिथ

यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात है तो वह अपनी शक्तियों को बिखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इससे क्या। —इमर्सन

दौड़ना व्यर्थ है, मुख्य बात तो समय पर निकलना है। —ला फांते

एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है। —चार्ल्स बक्सटन

जब मैं किसी काम में लग जाता हूं, उस समय संसार की और कोई बात मेरे सामने नहीं रहती। यह उपयोगी पुरुष बनने की कुंजी है; परन्तु लोग इसे अपने मनोरंजन के समय भी साथ नहीं रख सकते। —चार्ल्स किंग्सले

औषध

सभी औषधों में सर्वोत्तम हैं : विश्राम और निराहार।
—फ्रैंकलिन

चिकित्सक केवल चिकित्सा करता है, अच्छा करनेवाली प्रकृति है।
—अरस्तू

प्रकृति, समय और धैर्य—ये तीन सर्वश्रेष्ठ और महान चिकित्सक हैं।
—एच० जी० बौन

सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वही है जिसको तुम खोजते हो किन्तु पाते नहीं।
—डाइडरॉट

ईश्वर अच्छा करता है और फीस डाक्टर ले जाता है।
—फ्रैंकलिन

सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वही है जो अधिकांश औषधों को व्यर्थ समझता है।
—फ्रैंकलिन

मेरा विश्वास है कि आज का सम्पूर्ण चिकित्साशास्त्र यदि समुद्र में डुबो दिया जाए तो यह मनुष्यों का परम सौभाग्य होगा, किन्तु मछलियों का परम दुर्भाग्य।
—होम्स

पथ्य से रहनेवाले रोगी के लिए औषध की आवश्यकता नहीं है और पथ्य से न रहनेवाले रोगी के लिए भी औषध की आवश्यकता नहीं है।
—अनाम

कला

कला के लिए आवश्यकता बुद्धि और हृदय की है, रुपये की कदापि नहीं।
—म० गांधी

कला अनन्त है और समय तीव्रगामी। —लांगफेलो

मानव-संयुक्त प्रकृति का नाम ही कला है। —बेकन

कला की सृष्टि कला के लिए है। —विक्टर कज़िन

कला, जहां तक सम्भव होता है, प्रकृति का अनुकरण करती है, उसी प्रकार जिस प्रकार एक शिष्य अपने गुरु का अनुकरण

करता है। अतः तुम्हारी कला ईश्वर की अनुकृति होनी चाहिए।
—दान्ते

एक चित्र बिना शब्दों के लिखित कविता के समान है।
—होरेस

कला का एकमात्र शत्रु है अज्ञानता। —बेन जॉनसन

कला जीवन का खाद्य नहीं अपितु पेय है। —रश्टर

कला अत्यन्त कठिन है और उसका पुरस्कार है नश्वर।
—शिलर

कलाकार जैसी वस्तुएं हैं, उनको वैसा नहीं देखता, अपितु वैसा देखता है जैसाकि वह स्वयं होता है। —अल्फ्रेड टानेल

कलाकृति का मूल्यांकन कभी उसके दोषों से मत करो।
—वाशिंगटन एल्सटिन

संगीत और कला की उपासना करो और भावना के धर्म को उन्नत करो। —राधाकृष्णन्

सच्ची कला श्रद्धा से प्रस्तुत की गई ईश्वर की अनुकृति है।
—टायरन एडवर्ड्स

सबसे महान कलाकार वह है जो अपने जीवन को ही कला का विषय बनाए। —थोरो

कला की पूर्णता कला को गुप्त रखने में ही है।—क्विण्टीलियन

कला अति सूक्ष्म और कोमल है, अतः अपनी गति के साथ यह मस्तिष्क को भी कोमल और सूक्ष्म बना देती है।—अरविन्द

कला जीवन की प्रकाशिका कही गई है, अतएव जीवन-वैचित्र्य के कारण कला-वैचित्र्य सदैव रहेगा। वैचित्र्य के अभाव में कला का अभाव होता है। —पदुमलाल पन्नालाल बख्शी

कला के साथ हमारे जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मानव-जीवन से पृथक् कर देने पर कला का महत्त्व नहीं रहता।
—अनाम

चित्त को क्षुद्र वासनाओं से विरत करने का एक बहुत बड़ा साधन कला है। काव्य, चित्र, संगीत आदि का जिस समय रस मिला करता है उस समय शरीर और इन्द्रियों के बन्धन ढीले पड़ गए होते

हैं और चित्त आध्यात्मिक जगत् में खिच जाता है।—सम्पूर्णानन्द

कवि

कवि सृष्टि के सौन्दर्य का मर्मज्ञ होता है। वह एक ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा सृष्टि के सौंदर्य को देखा जाता है। कवि सौंदर्य का उपभोग करता है और जब उन्मत्त हो जाता है तब उसके प्रलाप-रूप में उसकी उन्मत्तता का कुछ प्रसाद सहृदय जनों को मिल जाता है। —रामनरेश त्रिपाठी

ऐसा कोई व्यक्ति आज तक महान कवि नहीं हुआ जो कवि होने के साथ-साथ प्रकाण्ड दार्शनिक न हुआ हो। —कालरिज

हृदय से सभी व्यक्ति कवि होते हैं। —इमर्सन

आधुनिक कवि अपनी मसि में पानी अधिक मिश्रित कर देते हैं। —गेटे

कवि होने के पश्चात् दूसरी महानता है काव्य को समझना। —लांगफेलो

सभी राष्ट्रों के कवियों में जो कुछ श्रेष्ठ है वह उनके राष्ट्र का नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व का है। —लांगफेलो

प्रणय के समय प्रत्येक व्यक्ति कवि बन जाता है। —प्लेटो

संसार में जो बात जैसी दीख पड़े, कवि को वही वैसे ही वर्णन करनी चाहिए। उसके लिए किसी भी रोक या पाबन्दी का होना अच्छा नहीं। —महावीरप्रसाद द्विवेदी

कवि का सबसे बड़ा गुण नई-नई बातों का सूझना है। कवि का काम है कि वह प्रकृति-विकास को खूब ध्यान से देखे।

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

जो प्रकाश, जल और थल में कहीं नहीं है, वह सौंदर्य पवित्र होकर केवल कवि के स्वप्नों में बसता है। —अनाम

कवि कविता करता है, परन्तु उसका स्वाद रसज्ञ विद्वान ही जानते हैं। कुमारी के लावण्य को पति ही जानता है, पिता नहीं। —अनाम

उन सुकृति रससिद्ध कवियों की जय हो जिनके यश-रूपी शरीर को बुढ़ापे और मौत का भय नहीं है। —भर्तृहरि

कठिनाई

हमेशा आगे बढ़ते रहने और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देनेवाली असम्भाव्यता नष्ट हो जाती है। —जेरिमी कोलियर

प्रकृति जब कठिनाइयां बढ़ाती है तो बुद्धि भी बढ़ाती है। —इमर्सन

जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयां मनुष्य को शक्ति-सम्पन्न बनाती हैं। —सेनेका

कठिनाइयों में ही सिद्धांतों की परीक्षा होती है: बिना विपत्तियों में पड़े मनुष्य नहीं जान सकता कि वह ईमानदारी है या नहीं। —फील्डिंग

सत्य की ओर ले जाने वाला प्रथम प्रशस्त मार्ग कठिनाइयां हैं। —बायरन

कठिनाई क्या है? केवल एक शब्द जो किन्हीं विशेष कार्यों को पूर्ण करने के लिए अपेक्षित शक्ति की मात्रा बतलाता है, श्रम करने की आवश्यकता की सूचना-मात्र; बच्चों और मूर्खों को डराने के लिए एक हौआ और पुरुषों के लिए एक प्रेरणा। —सेमुएल वारेन

सबसे कठिन तीन वस्तुएं हैं—एक रहस्य को अप्रकट रखना, कष्ट को भूल जाना और अवकाश का सदुपयोग करना। —चिलो

बहुत-सी वस्तुएं, जो आकार में कठिन प्रतीत होती हैं, करने में उतनी ही सरल निकलती हैं। —सेमुएल जानसन

कर्तव्य

सबसे अच्छा यही है कि तू अपना कर्तव्य कर और शेष ईश्वर

के अधीन छोड़ दे। —लांगफेलो

दूसरे कर्तव्य को पूर्ण करने की क्षमता ही एक कर्तव्य की पूर्ति का पुरस्कार है। —जार्ज इलियट

जो व्यक्ति सत्य के साथ कर्तव्यपरायणता में लीन है, उसके मार्ग में बाधक होना कोई सरल कार्य नहीं है। —रवीन्द्र

जो अपना कर्तव्य करने से चूकता है, वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है। —थियोडोर पार्कर

अपना कर्तव्य करने से हम उसे करने की योग्यता प्राप्त करते हैं। —ई० वी० पूसे

एक सार्वजनिक कर्तव्य को सम्पन्न करते समय व्यक्तिगत विचार कदापि बाधक नहीं होना चाहिए। —एस० ग्रांट

कर्तव्य में मिठास है। —गांधी

कर्म

कुछ भी कार्य विशेष रूप से नहीं किया और जो किया अत्यन्त श्रेष्ठ ढंग से किया। —गिल्बर्ट

तुम उचित रूप से भलाई करो और संसार को डूबने दो। —हर्बर्ट

किसी भी कार्य के आरम्भ से पूर्व सुसम्मति प्राप्त कर लो और जब करने का निश्चय कर लो, तो पूर्णतः उसमें लग जाओ। —सालस्ट

स्वर्ग कभी भी उस व्यक्ति की सहायता नहीं करता जो कर्म नहीं करता। —साफोक्लीज़

कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। —गीता

कल्पना

अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी है जितना बुरा अपवित्र कर्म। संयमित इच्छा ही सर्वोच्च परिणाम पर ले जाती है। —विवेकानन्द

सभी महान वैज्ञानिक आविष्कारों की खोज में संयत कल्पना का वास रहा है। —के० पियर्सन

हमें कल्पना-शक्ति प्रकृतिप्रदत्त है और इसी शक्ति से हम दृश्य जगत् के अंधकार को प्रकाशमय बना सकते हैं। बुद्धि एवं चिन्तन से मिश्रित कल्पना भौतिक अन्वेषणकर्ता का सर्वाधिक शक्तिशाली यन्त्र है। —जे० टिण्डल

कल्पना ज्ञान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। —आइन्स्टीन

कल्पना आत्मा का नेत्र है। —जूबर्ट

जो बिना अध्ययन के केवल कल्पना का आश्रय लेता है, उसके पंख अवश्य हैं किन्तु पग नहीं। —जूबर्ट

मानवता अपनी कल्पना से ही शासित होती चली आ रही है। —नेपोलियन

कल

स्वयं को कल पर आश्वस्त मत कर, क्योंकि मुझे नहीं मालूम कि कोई दिवस तेरे लिए क्या लाएगा। —बाइबल

गहन तमिस्रा में भी मुकुलित 'कल' निहित है। —कीट्स

जो कुछ तुम आज कर सकते हो, उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोड़ो। —फ्रैंकलिन

कल उठने की आशा पर सोया हुआ कोई भी आज तक नहीं जाग सका। —अनाम

आज नहीं कल, कल'—यही आलसी व्यक्तियों का गान है। —वेइज्र

कर्महीनता

तुम्हें एक कर्महीन जीवन व्यतीत करते देख मुझे अपार दुःख की अनुभूति होती है। —विवेकानन्द

कुछ भी न बनने का सरल मार्ग है—कुछ न करना।—हावी

केवल कर्महीन ही ऐसे हैं जो भाग्य को कोसते हैं और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य है। —नेहरू

कटुता

संसार की कटुताओं के सम्पर्क में आकर हृदय या तो सदा के लिए भग्न हो जाता है या फिर सदा के लिए कड़ा। —चेम्फर्ट

किसी भी तलवार का आघात इतना तीव्र नहीं होता जितना कि कर्कश जिह्वा का। —सर फिलिप सिडनी

क्षुद्रता

क्षुद्र आत्मा कभी भी महान आशा का आवास नहीं बन सकती। —जे० एल० जोन्स

कायरता

यह संसार कापुरुषों के लिए नहीं है। पलायन करने का प्रयास मत करो। —विवेकानन्द

कापुरुष अपनी मृत्यु से पूर्व ही अनेकों बार मृत्यु का अनुभव कर चुकते हैं किन्तु वीर कभी भी एक बार से अधिक नहीं मरते। —शेक्सपियर

कापुरुष डगमगा जाते हैं किन्तु साहसी बहुधा आपदाओं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। —रानी एलिज़ाबेथ

आप कायरता से मरें इसकी अपेक्षा बहादुरी से प्रहार करते हुए मरना मैं पसंद करूंगा। —म० गांधी

जहां सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो, वहां मैं हिंसा के पक्ष में राय दूंगा। —म० गांधी

जब किसीपर भयानक आपदा आ पड़ती है, तब वह पैरों से सोचने का काम लेता है। —बायर्स

जो युद्धक्षेत्र से भाग जाता है वह दूसरे दिन लड़ने को जीवित रह सकता है, किन्तु जो अपने-आपको युद्ध की भेंट कर देता है वह कभी भी दुबारा युद्ध के लिए नहीं उठ सकता। —गोल्डस्मिथ

एक कायर कुत्ता उतनी तीव्रता से काटता नहीं जितनी तीव्रता से भौंकता है। —रूफस

कायर तभी धमकी देता है जब सुरक्षित होता है। —गेटे

कानून

कानून तो जैसे मकड़ी के जाले हैं। छोटे-छोटे जीव उनमें फंसकर प्राण खो बैठते हैं जबकि बड़े जीव तो उन्हें भी फाड़ फेंकते हैं। —लोकोक्ति

नियमों का विधान मनुष्य के लिए हुआ है, मनुष्य का निर्माण नियमों के लिए नहीं। —रामतीर्थ

कानून निर्धनों पर शासन करता है और धनी कानून पर शासन करते हैं। —ओलिवर गोल्डस्मिथ

कानून एक ऐसे गढ़े के समान है जिसकी कोई थाह नहीं। —अर्बूथनॉट

तर्क ही कानून का जीवन है; यही नहीं, सामान्य कानून स्वयं ही तर्क के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। —सर एडवर्ड कोक

कभी अपने-आपको इतना उच्च मत समझो। कानून तुमसे भी ऊपर है। —थामस फुलर

अत्यन्त शिष्ट कानूनों का पालन प्रायः कम ही होता है, जबकि अत्यन्त कठोर नियमों का उल्लंघन बहुत कम होता है।—फ्रैंकलिन

यदि कानून केवल शासकीय अधिकारियों के पास रहे तो कानूनों का शीघ्र अन्त हो जाए। —हर्बर्ट हूवर

कानून कभी-कभी निद्रालीन हो जाते हैं, मरते नहीं। —लोकोक्ति

हर चीज कुछ निश्चित नियमों का पालन करती है। —मैनीलियस

छोटे-छोटे कानून बड़े अपराधों को जन्म देते हैं। —उइदा

संसार में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अपने जीवन के सारे विचारों और कर्मों का कानून के आधार पर मूल्यांकन करे और उसे कम से कम दस बार फांसी पर न चढ़ना पड़े। —मानटेन

जहां नियमों के विपरीत आचरण होता है, वहीं क्रूरता का आरम्भ होता है। —विलियम पिट

कानून हमको गैर-कानूनी आचरण से रोक सकता है; लेकिन ऐसे अनाचार से नहीं रोक सकता जो कानून के दायरे से बाहर हो।
—दादा धर्माधिकारी

कानून मनुष्य को अधिकार देता है, लेकिन उस अधिकार के उपयोग की शक्ति नहीं देता; कानून मनुष्य को बहुत हुआ तो मौका देता है, लेकिन मौके से फायदा उठाने की कूवत नहीं पैदा कर सकता। कानून घोड़े को पानी दिखा सकता है, पिला नहीं सकता। —दादा धर्माधिकारी

कारण

सम्पूर्ण कार्य (प्रभावों) का मूल कारण एक ही है। —ब्रूनो

युद्ध में अत्यधिक महत्त्व की घटनाएं प्रायः छोटी-छोटी घटनाओं का परिणाम-मात्र होती हैं। —शेक्सपियर

क्योंकि हमारा कारण (पक्ष) न्यायसंगत है, अतः ईश्वर हमारी सहायता करे। —शेक्सपियर

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु एक कारण है जिसका कुछ न कुछ परिणाम (प्रभाव) अवश्य होता है। —स्पिनोज़ा

जिस प्रकार महान नदियों का उद्गम अत्यन्त छोटा होता है, उसी प्रकार महान घटनाओं का कारण भी अत्यन्त क्षुद्र होता है।
—स्विफ्ट

कृषि और कृषक

यहा की भूमि इतनी कृपालु है कि उसे फावड़े से कुरेदो और

वह फसलों से भरकर मुस्कराती है। —जेराल्ड

प्रशंसा भले ही विशाल साम्राज्य की करो, किन्तु कृषि सदैव छोटी-सी भूमि में करो। —वर्जिल

जब कृषि होती है तभी अन्य कलाएं भी पनपती हैं, अतः कृषक लोग ही मानव-सभ्यता के निर्माता हैं। —डेनिएल वेब्स्टर

बरसा रहा है रवि अनल भूतल तवा-सा जल रहा।
है चल रहा सन सन पवन तन से पसीना ढल रहा॥
तब भी कृषक मैदान में, करते निरन्तर काम हैं।
किस स्वार्थ के हित वे अहो, लेते नहीं विश्राम हैं॥
—मैथिलीशरण गुप्त

मध्याह्न उनकी स्त्रियां ले रोटियां पहुंचीं वहीं।
हैं रोटियां रूखी खबर है शाक की उनको नहीं॥
सन्तोष से खाकर उन्हें फिर, काम में वे लग गए।
भरपेट भोजन पा गए तो भाग्य मानो जग गए॥
—मैथिलीशरण गुप्त

कृषक तपस्वी तपते रहते स्वेदित रहता तन। —अनाम

उत्तम कृषि, मध्यम बनिज, निकृष्ट चाकरी, भीख निदान।
—लोकोक्ति

क्रांति

क्रान्ति का हारना अपराध नहीं है, अपितु उसकी हार के कारणों को आम जनता से छिपाना अपराध है। —लेनिन

क्रांतियां उत्पन्न नहीं की जातीं; वे स्वतः होती हैं।
—वैण्डेल फिलिप्स

क्रांतियां छोटी-छोटी बातों के विषय में नहीं होतीं, किन्तु छोटी-छोटी बातों से उत्पन्न होती हैं। —अरस्तू

सुधार तो त्रुटियों का संशोधन-मात्र है; क्रांति शक्ति का परिवर्तन है। —बुलवर लिटन

अन्त में मैं विश्वास करता हूं कि क्रान्तियों में सर्वोच्च शक्ति

अंत में सबसे त्याज्य व्यक्ति के हाथों पहुंच जाती है। —डाण्टन

क्रान्ति की गति और समय के विषय में भविष्यवाणी करना असम्भव है। यह स्वयं अपने नियमों से शासित होती है; किन्तु जब यह फूटती है तो सब बाधाओं को ठुकराती चली जाती है।

—लेनिन

एक साम्यवादी क्रान्ति से शासकवर्ग को कंपा दो। दलितवर्ग के पास अपनी शृङ्खलाओं के अतिरिक्त और कुछ खो जाने योग्य है ही नहीं। विजय के लिए उनके सम्मुख पूर्ण विश्व है। समस्त देशों के श्रमिको, एकत्र होओ। —कार्ल मार्क्स

क्रान्ति में महत्त्व सामाजिक परिवर्तन का है, न कि संघर्ष और रक्तपात का। —दादा धर्माधिकारी

जहां सशस्त्र क्रान्ति होती है वहां भी हारा हुआ पक्ष बदला लेने की तैयारी में लग जाता है, वह शस्त्रास्त्र तथा फौज का संग्रह करने की फिराक में रहता है। —दादा धर्माधिकारी

हम क्रान्ति चाहते हैं। एक ऐसा समाज कायम करना चाहते हैं, जिसमें जरूरत की चीज़ उसको मिलेगी जिसको उसकी जरूरत है। —दादा धर्माधिकारी

क्रान्ति की प्रतिक्रिया अनिवार्य नहीं है। प्रतिक्रिया से जो क्रान्ति होती है उसकी कोख से प्रतिक्रांति पैदा होती है। इस क्रांति और प्रतिक्रांति की परम्परा का कभी अन्त नहीं आता।

—दादा धर्माधिकारी

क्रोध

स्मरण रखिए कि आप क्रोध की दशा ही में अत्यन्त निर्बल एवं क्षीणकाय रहते हैं। कारण यही है कि क्रोध का अस्त्र स्वयं चालक को ही घायल करता है। —'आरोग्य' से

जिस समय क्रोध उत्पन्न होने वाला हो, उस समय उसके परिणामों पर विचार करो। —कन्फ्यूशियस

क्रुद्ध होने का अर्थ है दूसरों की त्रुटियों का प्रतिशोध

स्वयं से लेना। —पोप

संपूर्ण संसार को एकता के सूत्र में बांधने की योजनाएं बनाना सरल है, किन्तु अपने हृदय में रहने वाले क्रोध पर विजय पाना अत्यन्त कठिन है। —आचार्य विनोबा

जिस क्षण क्रोध मस्तिष्क पर अपना शासन जमा लेता है, उसी क्षण विचारशक्ति शून्य हो जाती है। —एम० हेनरी

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है, वही दूसरों के क्रोध से बच सकता है। वही अपने जीवन को सुखी बना सकता है। —सुकरात

जो अपने क्रोध पर उचित नियन्त्रण रख सकते हैं, वे ही स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं। —कुरान

आत्मा को पतनोन्मुख बनाने वाले तीन ही मार्ग हैं।—कामातुरता, क्रोध और मोह; अतः ये तीनों ही त्याज्य हैं। —गीता

जो क्रोध करने में शिथिल है वह महान् शक्तिशाली व्यक्ति से भी अधिक श्रेष्ठ है और जो स्वयं पर शासन करता है वह नगर-विजेता से भी कहीं अधिक श्रेयस्कर है।

—बाइबल, लोकोक्ति १६–३२

जो क्रोध करने में विलम्ब करता है वह महान विवेक से सम्पन्न है, किन्तु जिसमें उतावलापन है वह मूर्खता का उपासक है।

—बाइबल, लोकोक्ति १४–२९

क्रोध आत्मा का एक तन्तु है। —फुलर

क्रोध की सर्वोत्तम औषध है विलम्ब। —सेनेका

क्रोध मनुष्य को पशु बना देता है और वह पशुवत् व्यवहार करने लगता है; स्वयं को दूसरों की दृष्टि में पतित बना देता है।

—के० बी० नारायण

जो क्रोधाग्नि तुम अपने पशुओं के लिए प्रज्वलित रखते हो, तुम्हारे लिए सबसे अधिक दाहक वही होती है।—चीनी लोकोक्ति

क्रोध तो बरैया के छत्ते में पत्थर फेंकने के समान है।

—मालाबार लोकोक्ति

सज्जनों का क्रोध जल पर अंकित रेखा के समान है जो शीघ्र

ही विलुप्त हो जाती है। —रामकृष्ण परमहंस

रोष मिटै कैसे कहत, रिस उपजावत बात।
ईंधन डारे आग में, कैसे आग बुझात॥

क्रुद्ध व्यक्ति का मुख तो खुला रहता है किन्तु नेत्र बन्द रहते हैं। —कैटो

क्रुद्ध अवस्था में कभी भी किसी पत्र का उत्तर मत दो।
—चीनी लोकोक्ति

क्रोध एक क्षणिक पागलपन है। इसे वश में करो नहीं तो वह तुम्हें वश में कर लेगा। —होरेस

क्रोध मस्तिष्क के दीप को बुझा देता है। अतः किसी महत्त्व-पूर्ण परीक्षा में हमें सदैव शान्त व स्थिर होना चाहिए।—इन्जरसोल

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चात्ताप पर खत्म होता है। —पिथागोरस

क्रोध समझदारी को घर से बाहर निकाल देता है और दरवाज़े की चटखनी लगा देता है। —प्लुटार्क

काम क्रोध के खड़े हैं पहाड़,
रहा है अनंत पल्ले पार। —अनाम

ख्याति

महत्त्वाकांक्षी के लिए प्रसिद्धि खारे जल के समान है। जितना ही वह पीता है उसकी पिपासा उतनी ही बढ़ती है। —इवर्स

एक प्रातःकाल जब मैं उठा तो स्वयं को विख्यात पाया।
—बायरन

बहुतों को ख्याति अत्यन्त विलम्ब से प्राप्त होती है।
—कैमोएन्स

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे मरते ही संसार तुम्हें न भूल जाए तो या तो पढ़ने योग्य रचनाओं की सृष्टि करो या वर्णन करने योग्य कर्म करो। —फ्रैंकलिन

मनुष्य उनपर अधिक ध्यान देते हैं जो अत्यन्त शीघ्रता से

ऊपर उठते हैं जबकि धूल, भूसे और पंखों से अधिक शीघ्र कोई वस्तु ऊपर नहीं उठती। —हेयर

वह नाम कितना भारस्वरूप होता है जो अति विख्यात हो जाता है। —वाल्टेयर

ग्राम और ग्राम्य जीवन

मनुष्य ने नगरों का निर्माण किया है किन्तु ग्राम सृष्टिकर्ता की कृति हैं। —कूपर

अहा ! ग्राम्य जीवन भी क्या है !
क्यों न इसे सबका मन चाहे ! —गुप्तजी

उस ओर क्षितिज के कुछ आगे, कुल पांच कोस की दूरी पर;
भू की छाती पर फोड़ों से हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर।
मैं कहता हूं खंडहर उसको, पर वे कहते हैं उसे ग्राम;
जिसमें भर देती निज धुंधलापन, असफलता की सुबह-शाम।
—भगवतीचरण वर्मा

जगमग नगरों से दूर कहीं, हैं जहां न ऊंचे खड़े महल,
टूटे-फूटे कुछ कच्चे घर, दिखते खेतों में चलते हल।
पुरई पालों खपरैलों में, रहिमा रमुआ की नावों में,
है अपना हिंदुस्तान कहां ? वह बसा हमारे गांवों में !
—सोहनलाल द्विवेदी

शिक्षा की यदि कमी न होती
तो ये ग्राम स्वर्ग बन जाते
पूर्ण शान्ति-रस में सन जाते —मैथिलीशरण गुप्त

ज्ञान

जितना ही अधिक हम अध्ययन करते हैं, उतना ही अधिक ज्ञान आता है। जितनी अधिक हम तपस्या करते हैं, हमें यह ज्ञात होता जाता है कि हम कितने अल्पज्ञानी हैं। —वाल्टेयर

ज्यों-ज्यों हम ज्ञान प्राप्त करते जाते हैं, त्यों-त्यों हम अपने पूर्वजों को अपनी अपेक्षा मूर्ख एवं अल्पज्ञ समझते जाते हैं, किन्तु निःसन्देह हमारी आनेवाली पीढ़ी हमारे प्रति भी यही विचार करेगी। —पोप

ईश्वर का भय ही ज्ञान का प्रथम चरण है। —साम; बाइबल

अतीव ज्ञान भी दुःख का मूल है। —बाइबल

ज्ञान तो अजस्र प्रवाहित स्रोतों से पूर्ण कूप के समान है, और तुम्हारा मस्तिष्क एक छोटी-सी बाल्टी के समान। तुम उतना ही प्राप्त कर सकते हो जितनी तुम्हारी ग्रहण-शक्ति हो।

—डा० हरदयाल

जिस प्रकार जीवन बचपन से आरम्भ होता है, उसी प्रकार ज्ञान वैराग्य से उत्पन्न होता है। —'संत वचन' से

ज्ञान इच्छा की आंख है, यह आत्मा की किश्ती को पार करने वाला बन सकता है। —विल ड्यूरेण्ट

यदि तुमने ऋक्-मंत्र जान लिया है तो तुमने देवताओं का रहस्य जान लिया है; यजुर्वेद जान लिया है तो यज्ञों का रहस्य जान लिया है, और यदि तुमने सामवेद जान लिया है तो तुमने सारे वेद जान लिए हैं। किन्तु मनुष्य-मात्र में निहित अन्तर्वेद को जानकर ही तुम ब्रह्म को जान सकोगे। —'कूटवेद' से

मैं सम्पूर्ण ज्ञान को अपना प्रदेश मानता हूं। —बेकन

ज्ञान स्वयं एक शक्ति है। —बेकन

ज्ञान ही सबसे बड़ी अच्छाई है और अज्ञानता ही सबसे बड़ी बुराई। —डायोजेनीस

जो अतीव ज्ञान को बढ़ाता है, वह अपने दुःखों को भी बढ़ाता है। —बाइबल

एक व्यक्ति सब कुछ नहीं जान सकता। —हारेस

जो दूसरों को जानता है वह शिक्षित है, किन्तु जो स्वयं को पहचानता है वह बुद्धिमान है। —लाओ-जे

बहुत-सी वस्तुओं का अपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा अज्ञानता में विचरना श्रेयस्कर है। —नीत्शे

अपनी अज्ञानता का भास ज्ञान का प्रथम सोपान है।

—डिज़राइली

स्वयं को जान! —सुकरात

घमण्ड

पार्थिव घमण्ड उस नाशवान पुष्प के समान है, जो झड़ जाने के लिए उत्पन्न हुआ है, और जो मुरझा जाने के लिए ही पुष्पित हुआ है। —अनाम

धुआं आसमान से शेखी बघारता है और राख पृथ्वी से कि वे अग्निवंश के हैं। —रवीन्द्र

दम्भ का अन्त सदैव नाश होता है और अहंकारी आत्मा सदैव पतित होती है। —बाइबल

नाश से पूर्व व्यक्ति घमण्डी हो जाता है किन्तु सम्मान सदैव व्यक्ति को नम्रता प्रदान करता है। —बाइबल

गर्व ने देवदूतों को भी नष्ट कर दिया। —इमर्सन

घमण्डी व्यक्ति दूसरों के घमण्ड को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

—फ्रैंकलिन

अत्यन्त क्षुद्र व्यक्तियों का घमण्ड अत्यन्त महान होता है।

—वाल्टेयर

घटनाएं

महान घटनाएं सदैव महान परिणामों की जन्मदात्री होती हैं।

—म०गांधी

होनहार बिरवान के होत चीकने पात। —लोकोक्ति

महान परिणामों की जन्मदात्री घटनाएं प्रायः निरर्थक परिस्थितियों से उत्पन्न होती हैं। —लिवी

घनिष्ठता

अधिक घनिष्ठता ही घृणा की जन्मदात्री है। —अनाम

चाहे घनिष्ठता घृणा न भी उत्पन्न करे, किन्तु प्रशंसा को खो बैठती है। —हैज़लिट

घनिष्ठता एक जादूगर है जो कुरूपता के प्रति तो दयालु है, लेकिन सौन्दर्य के प्रति कठोर। —उइदा

घृणा

हमारे हृदय का पागलपन ही घृणा है। —बायरन

घृणा के द्वारा कभी भी घृणा पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती, प्रेम के द्वारा घृणा पर विजय पाई जा सकती है—यही सनातन नियम है। —म० गांधी

घृणा मनुष्य का मौलिक पाप है। —जर्मन लोकोक्ति

किसीसे घृणा मत करो। व्यक्तियों के दुर्गुणों से घृणा करो; व्यक्तियों से नहीं। —जे० जी० सी० बर्नार्ड

घृणा करना शैतान का कार्य है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है, प्रेम करना देवताओं का गुण है। —भर्तृहरि

जो भी अपने बन्धु से घृणा करता है, अपराधी है। —बाइबल

जो घृणा हम शत्रुओं के प्रति रखते हैं, वह हमारी अपेक्षा उनकी प्रसन्नता को कम आघात पहुंचाती है। —जे० पेट्टिसेन

चरित्र

जीवन का तीन-चौथाई आधार नेक चाल-चलन है। —मैथ्यू आर्नल्ड

चरित्र ही सफलता अथवा असफलता का द्योतक है। चरित्र सफल है तो जीवन भी सफलता की ओर बढ़ेगा, किन्तु चरित्र असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य पतनोन्मुख होगा। —रोमो

प्रत्येक मनुष्य के चरित्र के तीन रूप होते हैं—एक तो जैसाकि वह स्वयं अपने को समझता है, दूसरा जैसाकि अन्य व्यक्ति उसको समझते हैं और तीसरा जैसाकि वह वास्तव में होता है।

—अलफॉन्सी कर

सच्चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव के समान है। —म० गांधी

चरित्र ऐसा हीरा है जो अन्य सभी पाषाण-खंडों को काट देता है। —बारटल

यदि मैं अपने चरित्र की परवाह करूंगा तो मेरी कीर्ति स्वयं अपनी परवाह करेगा। —डी० एल० मूडी

जो तुम जानते हो वही करो, विचार ही चरित्र में परिणत हो जाते हैं। —इमर्सन

समाज की महती आशा का केन्द्रबिन्दु व्यक्तिगत चरित्र ही है।

—मैनिंग

चरित्र के लिए उतनी घातक कोई वस्तु नहीं जितने अपूर्ण कार्य। —डा० ला० जार्ज

चरित्र एक श्वेत कागज़ के समान है। एक बार कलंकित होने पर इसका पूर्ववत् उज्ज्वल होना कठिन होता है। —जे० हावेज़

चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है; वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायता और संरक्षक प्राप्त करता है, और धन तथा सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है। —जे० हावेज़

समाज की अपूर्णता के विषय में नहीं, अपनी अपूर्णता के विषय में विचार करने वाला व्यक्ति एक दिन समाज की अपूर्णता दूर करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है। —धूमकेतु

चरित्र-निर्माण उससे होता है जिसके लिए आप दृढ़ता से खड़े होते हैं। सम्मान उससे जिसके लिए आप गिर पड़ते हैं।—वूलकोट

धनी-निर्धन दोनों ही चरित्र के अधिकारी हैं। समाज के लिए दोनों से सुन्दर चरित्र की अपेक्षा है, किन्तु धनी धन के घमण्ड में उसे खो बैठते हैं और निर्धन उसे ही अपना सर्वस्व समझकर संजोए रहता है। —स्वेट मार्डेन

मनुष्य का अनुमान कभी भी उसकी त्रुटियों से नहीं लगाना चाहिए। मनुष्य में जो महान सद्गुण होते हैं वे उसके हैं। किन्तु उसकी त्रुटियां मानवता की सामान्य दुर्बलताएं हैं, अतः उसके चरित्र के मूल्यांकन में उनका कोई महत्त्व नहीं होना चाहिए। —विवेकानन्द

शिक्षा नहीं अपितु चरित्र ही मनुष्य की सर्वोच्च आवश्यकता है और उसका सर्वाधिरक्षक। —स्पेन्सर

यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है। —विवेकानन्द

प्रवृत्तियों का सर्वोत्तम विकास एकान्त में होता है, किन्तु चरित्र का सुन्दर निर्माण विश्व के झंझावातों में ही हो सकता है। —गेटे

हम जिस चरित्र का निर्माण करते हैं, वह हमारे साथ भविष्य में भी रहेगा जब तक कि ईश्वर का साक्षात्कार कर उसमें लीन नहीं हो जाते। —डा० राधाकृष्णन्

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥—रहीम

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल-बल जल ऊंचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच॥—रहीम

दुष्ट न छांड़ै दुष्टता, कैसेहूं सुख देत।
धोयेहूं सौ बेर के, काजल होत न सेत॥ —वृन्द

तुम्हें व्यक्ति के अन्दर भी उतना ही झांकना चाहिए जितना उसके ऊपर। —चेस्टरफील्ड

जो कुछ हमने अपने चरित्र में संचित किया है, वह हम अपने साथ ले जाएंगे। —हेम्वोल्ट

हमारा चरित्र अच्छाई और बुराई के बीच किए गए जीवन में स्वतन्त्र चुनाव की हमारी आत्मा पर मुद्रा-मात्र है। —गोयकी

चरित्र प्रत्येक वस्तु की पोशाक और सहायक होना चाहिए। धर्म, उपदेश, कविता, चित्र, नाटक, बिना चरित्र के किसी भी वस्तु का रंच-मात्र भी मूल्य नहीं होता। —जे० जी० हालैण्ड

आदमी की खुशहालियां उसकी सच्चरित्रता का फल हैं। —इमर्सन

उत्तम व्यक्ति शब्दों मे सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।
—कन्फ्यूशियस

चिंता

चिन्ता एक प्रकार की कायरता है और वह जीवन को विषमय बना देती है।
—चैनिंग

चिन्तितमन शयन करने का अर्थ है हृदय पर एक बोझ लादकर सोना।
—हैली बर्टन

जीवन की असंख्य चिन्ताओं के संतुलनस्वरूप ईश्वर ने हमें आशा और निद्रा भी प्रदान की हैं।
—वाल्टेयर

चेहरा

तुम्हारा चेहरा प्रायः कपड़ों की अपेक्षा भी अधिक मन की दशा बता देता है।
—अनाम

चेहरों में सबसे भद्दा चेहरा मनुष्य का ही है।
—लैवेटर

ईश्वर ने तुम्हें केवल एक चेहरा दिया है और तुम स्वयं दूसरा बना लेते हो।
—शेक्सपियर

जीवन

जीवन कर्म का ही दूसरा नाम है। वह जोकि कर्म नहीं करता, उसका अस्तित्व है किन्तु वह जीवित नहीं।
—हिलार्ड

हम इस प्रकार जीवन व्यतीत करें कि हमारे मरने पर हमें दफनाने वाले भी दो आंसू बहा दें।
—पेट्रार्क

जितना अधिक जीवित रहना चाहते हो रहो, किन्तु स्मरण रखो कि जीवन के प्रारम्भिक बीस वर्ष जीवन की अधिकांश अवधि है।
—साउदी

प्रत्येक मनुष्य इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने

आता है। अपनी मन:प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दुहराता है—यही मनुष्य का जीवन है। —भगवतीचरण वर्मा

संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उच्च, सरल, सत्य एवं कर्मण्य जीवन के प्रभाव को कम कर दे। —बुकर टी० वाशिंगटन

मनुष्य-जीवन का अधिकांश भाग यही विचारते-विचारते निकल जाता है कि मैं अब जीवन को नाश से बचाऊंगा। फलतः जीवन नष्ट हो जाता है और हम जीवित रहने के उपक्रम मे व्यस्त रह जाते हैं। —इमर्सन

इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि मनुष्य मरता किस प्रकार है, अपितु महत्त्व की बात तो यह है कि वह जीवित किस प्रकार रहता है। —हज़रत अली

मनुष्य के जीवन की तीन बड़ी घटनाएं विवाद से पूर्णतः परे होती हैं—प्रथम जन्म, द्वितीय विवाह और तृतीय मृत्यु।

—आस्नि औमैले

वही सच्चा जीवन व्यतीत करता है जो अपनी जीवन-शक्ति भावी सन्तान के लिए व्यय कर देता है। —स्टिफेन ज्विग

धन का महत्त्व नहीं अपितु जीवन का है—प्रेम की समस्त शक्ति, प्रसन्नता और प्रशंसा से पूर्ण जीवन का। —रस्किन

जीवन का द्वार तो सीधा है किन्तु मार्ग अत्यधिक संकीर्ण है।

—सन्त मेथ्यू

जीवन एक गतिशील छाया-मात्र है। —शेक्सपियर

पुरुष जीवन को जल्दी पहचानते हैं, नारियां विलम्ब से।

—ऑस्कर वाइल्ड

स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्मसंयम ये तीन ही जीवन को अलौकिक शक्ति की ओर ले जाते हैं। —टेनीसन

चालीस वर्ष की अवस्था युवावस्था का वार्धक्य है और पचास वर्ष की अवस्था वृद्धावस्था का तारुण्य। —फ्रांसीसी लोकोक्ति

अधिकांश अवसरों पर साहस की परीक्षा जीवित रहना होती है, मरना नहीं। —अल्फेरी

मैं एक ही बार में इस संसार से होकर गुज़र जाना चाहता हूं।

अतः जो कुछ भी अच्छाई मुझे करनी है अथवा अपने साथियों के साथ जो दयापूर्ण व्यवहार करना है, मैं वह अभी कर डालना चाहता हूं, क्योंकि मैं फिर इस संसार में से होकर नहीं गुज़रूंगा। —अनाम

वे इसलिए जीवित हैं कि खा सकें किन्तु वह (सुकरात) इसलिए खाता है कि वह जीवित रह सके। —एथीनियस

हम आते हैं और रोते हैं, यही जीवन है; हम जंभाई लेते हैं और चल देते हैं, यही मृत्यु है। —असोन द' चांसेल

महत्त्व इसका नहीं है कि हम कितने अधिक जीवित रहते हैं, अपितु महत्त्व तो इसका है कि हम कैसे जीवित रहते हैं। —वेली

जीवन नम्रता का महान पाठ है। —बैरी

उत्पन्न होना एक मुसीबत है, जीवित रहना कष्ट और मृत्यु को प्राप्त होना एक परेशानी है। —सन्त बर्नार्ड

हमारा सम्पूर्ण जीवन क्रीड़ा के समान है। —बेन जॉनसन

जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक किसीको भी निराश नहीं होना चाहिए (जब तक सांस तब तक आस)। —इरासमस

एक व्यर्थ जीवन ही शीघ्र मृत्यु है। —गेटे

मैं अत्यन्त सरलता से जीवन-यापन की शिक्षा नहीं देना चाहता, अपितु मैं एक कठिन श्रमशील जीवन की शिक्षा देना चाहता हूं। —रूज़वेल्ट

ईसा का कथन था रहो और रहने दो। —शिलर

पत्रों के ऊपर नृत्य करती हुई ओस के समान अपने जीवन को भी समय के दलों पर नृत्य करने दो। —रवीन्द्र

इस जीवन में विजय केवल तभी हो सकती है जब मानव-शरीर सुख को, भोग की वासनाओं को भूलकर, मोह उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से ध्यान हटाकर केवल अपने लक्ष्य की ओर ध्यान दे। —अनाम

काष्ठ के संघर्षण से उत्पन्न चिंगारी की भांति ही हमारा जीवन है। यह प्रज्वलित होता है और शमित हो जाता है। हमें ज्ञात भी नहीं होता कि यह कहां से आता है और कहां जाता है। —एच० जी० वेल्स

जीवन सब कलाओं से ऊपर है, और मैं यह भी घोषित करता हूं कि जो व्यक्ति जीवन में पूर्णता लाने का प्रयास करता है वह एक महान कलाकार है। —म० गांधी

जीवनी (जीवन-चरित्र)

मानव-जीवन का एक संस्मरण भी जीवन-चरित्र के विशाल ग्रन्थ के समान है। —चैनिंग

पुरातनकाल के उच्च कोटि के महान व्यक्तियों के जीवन-चरित्र से अनभिज्ञ रहने का तात्पर्य है : आजीवन बालकों के समान अबोध रहना। —प्लूटार्क

झूठ

मनुष्य झूठ से मेल करके जीवन की कितनी महती सम्पदा नष्ट कर देता है। —शरत्

झूठ केवल सत्य से असामंजस्य ही नहीं है, अपितु वे आपस में भी वैभिन्य प्रकट करते हैं। —डैनियल वेब्स्टर

तलवार

जो तलवार धारण करते हैं वे तलवार के ही घाट उतरते हैं। —प्राचीन लोकोक्ति

किसी भी तलवार का आघात उतना तीव्र नहीं होता जितना कर्कश जिह्वा का। —सर फिलिप सिडनी

त्रुटियां

गलतियों की सबसे बड़ी औषध है उनको विस्मृत कर देना। —साइरस

भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है।

—म० गांधी

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे तो उसकी छोटी से छोटी गलती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

—'अनमोल रत्न' से

सब जानते हैं और मैं भी जानता हूं कि मैं यूरोप का कुशल जनरल हूं, फिर भी कोई दिन नहीं जाता जबकि मुझसे कम से कम दस गलतियां न होती हों।

—नेपोलियन

पुरुषों की त्रुटियों में उनकी स्वार्थपरता निहित रहती है, नारियों की त्रुटियों के मूल में उनकी दुर्बलता।

—मैडम द' स्टील

त्रुटियां करना मानवीय स्वभाव है, क्षमा कर देना स्वर्गीय।

—पोप

अपनी त्रुटियों के विषय में हम सदैव स्वयं को धोखा देते रहते हैं और अन्त में उन्हें ही अपना सद्गुण समझने लगते हैं।

—हेन

दु:ख

जिसने कभी दु:ख नहीं देखा वह सबसे बड़ा दुखियारा है।

—अनाम

दु:ख वर्षा की धारा की भांति पंक उत्पन्न करता है किन्तु गुलाब के फूल भी खिलाता है।

—ऑस्टिन मैले

दु:ख एक देवदूत है जिसके शीश पर कंटक-किरीट विराजमान है।

—हॉवेल

यह केवल अपना-अपना व्यक्तित्व है कि कहीं शब्द रोते हैं जबकि आंसू हंसते होते हैं और कहीं शब्द और आंसू दोनों हंसते रहते हैं जबकि अन्तरात्मा चुप-चुप रोती होती है।

—अनाम

इन कंकालों के दु:ख से ही विश्व-वेदना का उद्भव होता है और उन्हींके नि:श्वासों से संसार की दु:खमयी भावना उद्भूत होती है।

—डा० रघुवीर

अनन्त आलोकवान नक्षत्र तभी चमकते हैं जब अंधकार पर्याप्त

घनीभूत होता है। —कार्लाइल

व्यस्त व्यक्ति के पास अश्रु-प्रवाह के लिए समय नहीं होता।
—बायरन

सबसे सुन्दर किरीट पृथ्वी पर सदैव कण्टकों का रहा है और कण्टकों का ही रहेगा। —कार्लाइल

यदि भोजन मिलता रहे तो सारे दुःख सहे जा सकते हैं।
—सर्वेण्टिस

हमारा दुःख जितना ही तीव्र हो जिह्वा उतना ही कम व्यक्त करेगी। —तालमद

बिना झंझा और मेघ-मालाओं के कभी इन्द्रधनुष नहीं बन सकता। —जे० एच० विन्सेण्ट

दुर्भाग्य

यदि सारे दुर्भाग्य एक ही स्थान पर एक ढेर में रख दिए जाएं और सबको उनमें से समान भाग लेना पड़े तो हममें से अधिकांश अपना ही भाग्य ले सन्तुष्ट होकर विदा हो जाएंगे। —सुकरात

दुर्भाग्य सदैव उसी द्वार से आते हैं जो हम स्वयं उनके लिए अनावृत छोड़ देते हैं। —चेक लोकोक्ति

क्षुद्र मस्तिष्क दुर्भाग्य द्वारा दमित और क्षीण हो जाते हैं किन्तु विशाल मस्तिष्क दुर्भाग्य से भी ऊपर उठ जाते हैं।
—वाशिंगटन इर्विंग

दूसरों के दुर्भाग्य सहने के लिए भी हम सबमें पर्याप्त सहनशीलता है। —ला रोश फूको

दूसरों के दुर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए। —साइरस

दान

जो दान अपनी कीर्ति-गाथा गाने को उतावला हो उठता है

वह दान नहीं रह जाता, अपितु अहंकार एवं आडम्बर-मात्र रह जाता है।
—हुट्टन

जो कुछ मैंने दिया था वह मेरे पास अब भी है, जो कुछ व्यय किया वह विद्यमान था; जो संचित किया था वह मैंने खो दिया।
—प्राचीन स्मृतिलेख

दान स्वयं को समृद्ध बनाता जाता है, लालसा विपन्नता का संचय करती चलती है। इससे पूर्व कि धन तुम्हें लोभी बनाए, दानी बन जाओ।
—टी० ब्राउन

इस सनातन नियम को याद रखो—यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो।
—सुभाषचन्द्र बोस

किसी भी व्यक्ति के मरणासन्न होने पर सौ रजत-खंड दान करने की अपेक्षा जीवनकाल में एक रजत-खंड दान करना कहीं श्रेयस्कर है।
—ह० मोहम्मद

प्राप्त करने की अपेक्षा दान करना कहीं अधिक सौभाग्य का द्योतक है।
—ऐक्ट्स

दान का प्रत्येक कार्य स्वर्ग-पथ पर गतिशील होने का एक चरण है।
—बीचर

दान ही धर्म का पूर्णत्व और उसका आभूषण है। —एडीसन

यद्यपि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं पर्वतों को भी हिला सकता हूं, फिर भी मुझमें दाय-भावना नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं हूं।
—बाइबल

तीन सद्गुण हैं—आशा, विश्वास और दान। दान इनमें सबसे बढ़कर है।
—बाइबल

जो कुछ हम उन्मुक्त कर से दान कर देते हैं केवल वही हमारा है।
—जार्ज ग्रेनविल

ज्योंही पर्स (बटुआ) रिक्त होता है, हृदय समृद्ध होता जाता है।
—विक्टर ह्यूगो

जो कोई महान दान एकदम करने की प्रतीक्षा करता है वह कभी भी कुछ नहीं कर सकेगा।
—सेमुएल जॉनसन

दान असंख्य पापों का छादन कर देता है। —पीटर महान

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहिं मांगन जाहिं।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं॥
—रहीम

दार्शनिक

केवल दाढ़ी रखा लेने से ही कोई दार्शनिक नहीं हो जाता।
—अज्ञात

थोड़ी दार्शनिकता मनुष्य का मस्तिष्क नास्तिकता की ओर झुका देती है, किन्तु दार्शनिकता की गहनता में प्रवेश करने से मनुष्य का मस्तिष्क धर्म की ओर उन्मुख हो जाता है। —बेकन

एक शताब्दी का दर्शन ही दूसरी शताब्दी का सामान्य ज्ञान होता है। —हेनरी वार्डर बीचर

दर्शन—कलाओं की रानी और स्वर्ग की पुत्री। —बर्क

दर्शन में ध्येय की प्राप्ति का उतना महत्त्व नहीं है जितना कि उन वस्तुओं का जो हमें मार्ग में मिलती जाती हैं।
—हैवलॉक एलिस

दर्शन कभी भी सम्भावनाओं से आगे नहीं बढ़ पाता और उसकी प्रत्येक धारा में संदेह सुरक्षित रहता है। —फ्राउड

कहां से ? किधर ? क्यों ? कैसे ?—ये प्रश्न सम्पूर्ण दर्शन को आत्मसात् कर लेते हैं। —जूबर्ट

जो कुछ सत्य है उसका अन्वेषण और जो कुछ उचित है उसकी कार्य में परिणति, ये दर्शन के दो महान ध्येय हैं। —वाल्टेयर

द्वेष

द्वेष और कपट को त्याग दो। संगठित होकर दूसरों की सेवा करना सीखो, यही हमारे देश की महती आवश्यकता है।
—विवेकानन्द

दोष

जब कभी मुझे दोष देखने की इच्छा होती है तो मैं स्वयं से ही आरम्भ करता हूं और इससे आगे नहीं बढ़ पाता।

—डेविड ग्रेसन

दोष से ही हम सभी भरे हैं, मगर दोषमुक्त होने का प्रयास करना हम सबका कर्तव्य है। —म० गांधी

बुरा जो देखन मैं चल्या, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजूं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय॥

—कबीर

अपना ही दोष ढूंढ़ निकालना ज्ञानवीरों का काम है।

—विवेकानन्द

धर्म

धर्म अन्तःप्रकृति है, वही सारी वस्तुओं का ध्रुव सत्य है। धर्म ही वह चरम लक्ष्य है जो हमारे अन्दर काम करता है। —रवीन्द्र

धर्म वस्तुतः एक ही लक्ष्य की ओर ले जानेवाले विभिन्न मार्ग हैं, जब हम एक ही लक्ष्य पर पहुंचना चाहते हैं तो किसी भी मार्ग से जाने में क्या अन्तर पड़ता है। —म० गांधी

प्रत्येक धर्म उतना ही सत्य है जितना दूसरे धर्म। —बर्टन

यदि मनुष्य धर्म की उपस्थिति में इतने दुष्ट हैं तो धर्म की अनुपस्थिति में उनकी क्या दशा होती ? —फ्रैंकलिन

एक श्रेष्ठ जीवन ही एकमात्र धर्म है। —थामस फुलर

धर्म तो जनता के लिए निद्रा लानेवाली रसायन है।

—कार्ल मार्क्स

धर्म ईश्वर और मनुष्य के प्रति प्रेम से अधिक कुछ भी नहीं।

—विलियम पेन

सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है, सम्पूर्ण मानवता मेरा बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है। —थामस पेन

दूसरे का धर्म भले ही श्रेष्ठ मालम हो, उसे ग्रहण करने में मेरा कल्याण नहीं है। सूर्य का प्रकाश मुझे प्रिय है। उस प्रकाश में मैं बढ़ता रहा हूं। सूर्य मुझे वन्दनीय है। परन्तु इसीलिए यदि मैं पृथ्वी पर रहना छोड़कर उसके पास जाना चाहूंगा तो जलकर खाक हो जाऊंगा। —ग्राचार्य विनोबा

जो धर्म, जो नीति ग्रौर जो कानून ग्रन्न पर भूखों का ग्रधिकार बतलाने के बदले उसका ग्रधिकार बताता है जिसका पेट ठसाठस भरा हो, वह धर्म धर्म नहीं है, वह नीति नीति नहीं है, वह कानून कानून नहीं है। —दादा धर्माधिकारी

ग्रादमी धर्म के लिए झगड़ेगा, उसके लिए लिखेगा, उसके लिए मरेगा; सब कुछ करेगा पर उसके लिए जिएगा नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू

ग्रपना उल्लू सीधा करने के लिए शैतान भी धर्मशास्त्र के हवाले दे सकता है। —शेक्सपियर

वास्तविक धर्म यह है कि जिन बातों को मनुष्य ग्रपने लिए ग्रच्छा नहीं समझते, दूसरों के साथ भी वैसी बात हरगिज़ न करें।

—महाभारत

धैर्य

धैर्य के नेत्रों से व्यक्ति जिस महान से महान संकट की ग्रोर देखे, वही धूम्र के बादलों की भांति क्षण में ग्रदृश्य हो जाता है।

—बीरजी

प्रकृति के चरण-चिह्नों पर चलो। उसका रहस्य है धैर्य।

—इमर्सन

जिसके पास धैर्य है, वह जो कुछ इच्छा करता है प्राप्त कर सकता है। —फ्रैंकलिन

धैर्य ग्रौर परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति ग्रौर शीघ्रता से कभी नहीं। —ला फॉण्टेन

वे कितने निर्धन हैं जिनके पास धैर्य नहीं है! क्या ग्राज तक

कोई ज़ख्म बिना धैर्य के ठीक हुआ है ! —शेक्सपियर

धैर्य आशा करने की कला है। —वावे नार्गी

धोखा

व्यक्ति दूसरों के साथ विश्वासघात करते समय जितना धोखा खाता है, उतना कभी नहीं खाता। —लारोसो

जो व्यक्ति दूसरों के गुप्त भेद तुम्हारे सामने प्रकट करे उसे अपने गुप्त भेदों से कभी अवगत न होने दो। क्योंकि जो व्यवहार वह दूसरों के साथ कर रहा है वही तुम्हारे साथ भी करेगा। —हज़रत अली

जो यह कल्पना करता है कि यह दुनिया के वगैर भी अपना काम चला लेगा, वह अपने-आपको धोखा देता है; पर जो इस ख्याल में डूबा रहता है कि दुनिया का काम उसके बगर नहीं चल सकता वह तो एक और भी बड़े धोखे का शिकार है। —रोशे

व्यक्ति जितना कि स्वयं के द्वारा छला जाता है, दूसरों के द्वारा आज तक उतना कभी नहीं छला गया। —ग्रेनविल

मनुष्य अपने-आपको धोखा देने में कितना बुद्धिमान है ! देखो, एक मूर्ख से भी अधिक आशा की जा सकती है, किन्तु उस व्यक्ति से नहीं। —बाइबल

हमें कोई धोखा नहीं देता। हम स्वयं अपने-आपको धोखा देते हैं। —गेटे

तुम कुछ व्यक्तियों को सदैव मूर्ख बना सकते हो और सभी व्यक्तियों को कुछ समय के लिए मूर्ख बना सकते हो किन्तु तुम सब-को सदैव मूर्ख नहीं बना सकते। —लिंकन

धोखा देनेवाले को धोखा देने में दुगनी प्रसन्नता का अनुभव होता है। —ला फॉण्टेन

व्यक्ति जिसको प्रेम करता है उसके द्वारा सरलता से धोखा खा जाता है। —मोलियर

नम्रता

नम्रता सर्वोत्तम गुण है। जो काम स्त्री का सौन्दर्य करके दिखा सकता है वही नम्रता कर सकती है। उसका प्रभाव तत्काल ही दूसरों पर पड़ता है। —अनाम

महत्ता के सुमन में नम्रता का सौरभ ही शोभा पाता है।

—भर्तृहरि

नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या, देवता भी तुम्हारे वश में हो जाते हैं। —तिलक

कठिनाइयों और हानियों को सहन करने के पश्चात् मनुष्य विनीत और बुद्धिमान हो जाता है। —फ्रैंकलिन

नम्रता में यीशु और सुकरात का अनुकरण करो।

—फ्रैंकलिन

मेरा विश्वास है कि किसी महान व्यक्ति की प्रथम परीक्षा उसकी नम्रता है। —जॉन रस्किन

विनय पात्रता प्रदान करती है। —हितोपदेश

नर की अरु नल नीर की, एकै गति करि जोय।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊंचो होय॥

—विहारी

नारी

पुरुष किसी सुन्दरी के चरणों पर अपने जीवन को उसी प्रकार बलिदान कर देता है जिस प्रकार एक मर्कट अपने शिकारी के चरणों पर। —रामकृष्ण परमहंस

पुरुष नारियों के खिलौने हैं किन्तु स्वयं नारियां शैतान के खेलने के उपकरण हैं। —विक्टर ह्यूगो

संसार में एक नारी को जो कुछ करना है वह पुत्री, बहन, पत्नी और माता के पावन कर्तव्यों के अन्तर्गत आ जाता है।

—स्टील

जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहां देवता भी प्रसन्न रहते हैं।
—मनु

संपूर्ण महान वस्तुओं के मूल में नारी का वास होता है।
—लामारटाइन

जिस परिवार में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, वह पतन और विनाश के गर्त में लीन हो जाता है। —महाभारत

जिस समय स्त्री का हृदय पवित्रता का आगार बन जाता है उस समय उससे अधिक कोमल कोई वस्तु संसार में नहीं रह जाती।
—लूथर

ईश्वर के पश्चात् हम सर्वाधिक ऋणी नारी के हैं—प्रथम तो जीवन के लिए, पुनश्च इसको जीने योग्य बनाने के लिए। —बोवी

अधिकांश पुरुष नारियों में वह खोजते हैं जिसका स्वयं उनके चरित्र में अभाव होता है। —फील्डिंग

पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीव-मात्र के लिए करुणा संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है। —रमण

जीवन में जो कुछ पवित्र और धार्मिक है, स्त्रियां उसकी विशेष संरक्षिकाएं हैं। —म० गांधी

नारी का निर्माण जगत् को मुग्ध करने के लिए नहीं, अपने पति को सुख देने के लिए हुआ है। —एडमंड बर्क

स्त्रियों में शील का अभाव एक ऐसा अपराध है जिसका किसी भी क्रिया द्वारा मार्जन नहीं हो सकता। इसके अभाव में उनका सौंदर्य श्रीहत एवं चातुर्य घृणास्पद हो जाता है। —स्टील

स्त्री और पुरुष विश्व-रूपी अंकुर के दो पत्ते हैं। —जायसी

मुझे प्रसन्नता है कि मैं पुरुष नहीं हूं, क्योंकि उस दशा में मुझे विवाह करने के लिए एक नारी का आश्रय लेना पड़ता।
—मैडम द' स्टील

नारी-समाज को सामाजिक जीवन की परम अपेक्षित अप्रसन्नता का कारण समझो और यथासंभव इससे बचने का प्रयास करो।
—टॉल्स्टॉय

नारी या तो प्रेम करती है या फिर घृणा ही। इसके बीच का कोई मार्ग उसे ज्ञात नहीं। —साइरस

छलनामयी ! तेरा ही नाम औरत है ! —शेक्सपियर

स्त्रियों का सम्मान करो। वे हमारे पार्थिव जीवन को स्वर्गीय सुमनों से सुरभित एवं गुम्फित बनाती हैं। —शिलर

एक विशाल अट्टालिका में झगड़ालू स्त्री के संपर्क में रहने की अपेक्षा घर के ऊपर किसी एकान्त कोने में निवास करना कहीं अच्छा है। —लोकोक्ति

उसके (नारी के) क्रोध को जगा दो और वह कभी क्षमा नहीं कर सकती। उसे उपकृत कर दो और वह तुम्हें आजीवन घृणा करती रहेगी। —पोप

नारी उपासना के योग्य कितनी सौन्दर्यमय एवं प्रेम के योग्य कितनी स्वर्गीय है। —द' मैस्तरीं

नारी की महान त्रुटि है पुरुषों के अनुरूप बनने की इच्छा। —द' मैस्तरीं

स्त्रियां कुरूप कभी नहीं होतीं। हां, ऐसी स्त्रियां अवश्य होती हैं जो स्वयं को सुन्दर बनाने की कला नहीं जानतीं। —ला ब्रूयेर

नारी का अनुमान भी पुरुष के पूर्ण निश्चय से कहीं सत्य (उचित) होता है। —किपलिंग

स्त्रियां महान आघातों को क्षमा कर देती हैं किन्तु तुच्छ चोटों को नहीं भूलतीं। —हैली बर्टन

नारियों का संपर्क ही उत्तम शील की आधारशिला है। —गेटे

नारी पुरुष की छाया-मात्र है। उसको पाने का प्रयास करो तो वह दूर भागती है, यदि उससे पलायन करो तो वह अनुसरण करती है। —चैम्फर्ट

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी !
आंचल में है दूध और आंखों में पानी॥ —मैथिलीशरण

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत-नग पगतल में;

पीयूष-स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में !! —प्रसाद

स्त्रियों की अवस्था के सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई माग नहीं। किसी पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना नितान्त असम्भव है। —विवेकानन्द

नारी उस नरकुल के समान है जो प्रत्येक वायुवेग के साथ नत हो जाता है किन्तु विशाल झंझावात भी उसे तोड़ नहीं सकते।
—व्हैटले

पुरुष के सारे विचार नारी के एक भावुकता-कण की समता नहीं रखते। —वाल्टेयर

चन्द्रमा की कलाओं की भांति नारी का हृदय भी सदैव परिवर्तनशील होता है, किन्तु इसमें सदा ही एक पुरुष का वास रहता है। —पं॰

सर्प अत्यन्त निकट आने पर ही दंशन करता है, परन्तु नारी तुम्हें पर्याप्त दूरी से भी दंशित करती है। सर्प का विष इस शरीर-मात्र को नष्ट करता है, किन्तु वासना पारलौकिक जीवन में प्रवेश कर कई जन्मों का नाश कर देती है। वासना से घृणा करो, किन्तु नारी से नहीं। —स्वामी शिवानन्द सरस्वती

स्त्रियों के समान माधुर्ययुक्त एवं सारगर्भित बातें करना और कोई नहीं जानता। —विक्टर ह्यूगो

पवित्र नारी सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति होती है; वह सृष्टि के सपूर्ण सौंदर्य को आत्मसात् किए रहती है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

नारियों के रूप-मात्र में हमारे कानूनों से अधिक सरलता रहती है, और उनके अश्रुओं में हमारे तर्कों से अधिक शक्ति। —सेविली

पुरुषों के दृष्टि होती है, नारियों के अन्तर्दृष्टि! —विक्टर ह्यूगो

नारी प्रथम उत्तेजना में तो अपने प्रेमी को प्रेम करती है, किन्तु शेष सभी में केवल प्रेम को। —बायरन, डान जुआन

पुरुष स्त्रियों से वैसा कहते हैं जिसमें उन्हें प्रसन्नता होती है, नारियां पुरुषों से वैसा करती हैं जिसमें उन्हें प्रसन्नता होती है।
—द' सीगर

नारी एक ऐसा पुष्प है जो छाया में ही अपनी गन्ध फैलाता है। —लेमेनिस

कांटों-भरी शाखा को फूल सुन्दर बना देते हैं, और गरीब से गरीब आदमी के घर को लज्जावती स्त्री सुन्दर और स्वर्ग बना देती है। —गोल्डस्मिथ

नारी प्रकृति की बेटी है। उसपर क्रोध न करो। उसका हृदय कोमल होता है, उसपर विश्वास करो। —महाभारत

काव्य और प्रेम दोनों नारी-हृदय की संपत्ति हैं। पुरुष विजय का भूखा होता है, नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है, नारी लुट जाना। —महादेवी वर्मा

प्रेम किस प्रकार किया जाता है, इसे केवल स्त्रियां ही जान सकती हैं। —मोपासां

समाज के आचरण को बनाना, घर का प्रबन्ध करना तथा कोमलता, प्रेम और सहनशीलता से जीवन की विषम और कठिन यात्रा को सरल और सुखद बनाना स्त्री का कार्य है। —टॉमसन

जिस प्रकार तीर से घायल कपोत अपने डैनों से घाव ढक लेता है, उसी प्रकार नारी अपना संताप पुरुष से छिपा लेती है। —अनाम

जो अपने घर आता है, उसे मेहमान समझा जाता है, अतः स्त्री भी मेहमान है। —प्रेमचन्द

एक गुणवती नारी अपने पति के लिए किरीट के समान है।
—पुरानी बाइबल (पुरखों की बाइबल)

स्त्रियां पुरुषों से अधिक बुद्धिमती होती हैं, क्योंकि वे पुरुषों से कम जानती हैं किन्तु उनसे अधिक समझती हैं। —जेम्स स्टीफेन्स

नारी की महान शक्ति विलम्ब करने या अनुपस्थित होने में निहित है। —एलेन

यदि किसी नारी को प्राणदण्ड भी मिलता हो तो प्रथम वह अपने शृंगार-प्रसाधन के लिए कुछ क्षणों की याचना करेगी।
—चैम्फर्ट

नारी सृष्टि की परम सौन्दर्यमयी सर्वश्रेष्ठ कृति है। सृजन के आदि से विश्व उसकी गोद में क्रीड़ा करता आया है। उसकी

मधुमती मुस्कान में महानिर्माण के स्वप्न हैं और भ्रूभंग में विनाश की प्रलयंकारी घटाएं। —नलिन

जब मैं नारी-जाति को देखता हूं तो मेरा हृदय श्रद्धा से भर उठता है और मस्तक नत होने लगता है। एक नारी-रूप में विश्व की सारी प्रकृति समाविष्ट हो जाती है। मातृत्व की मधुमती आकांक्षा, प्रणय की पावनता और करुणा का असीम वरुणालय नारी-हृदय के ही पुष्प हैं। —नलिन

रमे ! तुम भू पर विमल विभूति, युगों के सीमा-बन्धन काट !
प्रणत जन रहा वासना-कीट, नारि, तुम उससे कहीं विराट !
—ब्रजवासीलाल शर्मा

तुम्हारे रोम-रोम से नारि ! मुझे है स्नेह अपार !
तुम्हारा मृदु उर ही सुकुमारि ! मुझे है स्वर्गागार !
... ...
तुम्हारी सेवा में अनजान ! हृदय है मेरा अन्तर्धान !
देवी ! मां ! सहचरि, प्राण ! —पन्त

या भव पारावार कौ, उलंघि पार को जाइ।
तिय छवि छाया ग्राहिनी, ग्रहै बीचहीं आइ।। —बिहारी

नास्तिक

ईश्वर को धन्यवाद कि मैं नास्तिक हूं। —अनाम

पुराने धर्म में उसे नास्तिक कहते थे जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता, किन्तु नया धर्म उसे नास्तिक कहता है जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं। —विवेकानन्द

सर्वप्रथम मैं ईश्वर से भय मानता हूं और उसके पश्चात् नास्तिक से। —सादी

वेदना और भय के समय कोई प्रकृति भी नास्तिक नहीं रहती —जो मस्तिष्क नहीं जानता कि कहां जाए, ईश्वर की शरण में पलायन करता है। —एच० मोर

दर्शन के अभाव में धर्म केवल अन्धविश्वास-मात्र बनकर रह

जाता है और धर्म का बहिष्कार करने पर दर्शन केवल शुष्क नास्तिकवाद बना रहता है। —विवेकानन्द

किसी मूर्ख ने अपने मन में सोचा : ईश्वर है ही नहीं।—साम

रात्रि के समय एक नास्तिक ईश्वर में आधा विश्वास करने लगता है। —यंग

निर्धनता

इसमें सन्देह नहीं कि बड़े-बड़े कारखानों के मालिकों ने अपना जीवन निर्धन लड़कपन से ही आरम्भ किया था। —सेथलो

हमारी वास्तविक निर्धनता यह है कि दूसरों को सुधारने का अधिक से अधिक प्रयत्न करते हैं, और स्वयं को सुधारने का अल्प से अल्प। —धूमकेतु

निर्धन व्यक्ति तो केवल कुछ ही वस्तुओं का इच्छुक है, परन्तु लोभी तो हर वस्तु का मुहताज है। —'अनमोल रत्न' से

जो अब भी हंस सकता है, वह निर्धन नहीं।—रेमंड हिचकॉक

ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपने पास सब कुछ बताते हैं, फिर भी उनके पास कुछ नहीं है। ऐसे भी हैं जो स्वयं को विपन्न बताते हैं, फिर भी उनके पास अतुल सम्पदा है। —बाइबल

सम्पदा अनेकों मित्र बना लेती है, किन्तु निर्धन अपने पड़ोसी से भी वियुक्त हो जाता है। —बाइबल

धन दुर्गुणों पर पर्दा डाल देता है, किन्तु सद्गुण निर्धनता में ही आश्रय पाते हैं। —थियोग्निस

इतिहास का सबसे महान व्यक्ति सर्वाधिक निर्धन था।

—इमसन

हमारी सर्वोच्च सभ्यता में भी मनुष्य अभावों में मरते जाते हैं, इसका कारण प्रकृति की कृपणता नहीं, अपितु मनुष्य का अन्याय है। —हेनरी जार्ज

निर्धनता कोई पाप नहीं है। —हार्बर्ट

वे धन्य हैं जो निर्धनों का भी ध्यान रखते हैं। —बाइबल

निराशा व निराशावाद

निराशा का गहरा धक्का मस्तिष्क को वैसा ही शून्य बना देता है जैसाकि लकवा शरीर को। —ग्रेविल

जो इस पृथ्वी पर कदम रखते हो तो सारी आशाओं को त्याग दो। —दांते

निराशा मूर्खता का परिणाम है। —डिज़राइली

निराशा हमारी शक्ति को द्विगुणित कर देती है। —अंग्रेज़ी लोकोक्ति

निराशा का आत्मा पर वही प्रभाव होता है जो मेघ-गर्जन का वायु पर। —शिलर

निराशावादी कितने सुखी हैं! उनको उस समय कितनी प्रसन्नता होती होगी जब वे यह सिद्ध कर देते हैं कि प्रसन्नता कुछ है ही नहीं! —मेरी एबनर एशिनबाश

नीतिज्ञ व नीति

नीतिज्ञ वह व्यक्ति है जो स्त्री के जन्मदिवस को तो स्मरण रखता है, किन्तु उसकी उम्र को भुला देता है। —अनाम

देखकर पांव रखे, छानकर पानी पिए, सच बोले और मन से पवित्र आचरण करे। —मनुस्मृति

मीठा लगनेवाला सच बोले, कड़वा लगनेवाला नहीं। पर मीठा लगनेवाला झूठ न बोले, यही सनातन धर्म हैं। —मनुस्मृति

विनाश के समय अकल उलटी हो जाती है। —चाणक्य

निर्लिप्त

संसार में रहो किन्तु संसार के माया-मोह से निर्लिप्त रहो। जिस प्रकार कमल पंक में विकसित होता है, तथा उसके दल पंक के स्पर्श से परे निर्मल हो रहते हैं। —विवेकानन्द

निन्दा

तुम अपने जीवन को इतना पवित्र रखो कि कोई तुम्हारी निन्दा करे, फिर भी लोग उसका विश्वास न करें।

—'अमूल्य शिक्षा' से

एक निन्दाशील वह व्यक्ति है जो मूल्य तो सभी वस्तुओं का जानता है, किन्तु महत्त्व किसीका भी नहीं। —आस्कर वाइल्ड

नेता

'महान नेताओं में कतिपय ऐसे गुण होते हैं जो सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रेरणा देते हैं और उन्हें महान कार्य करने को प्रेरित करते हैं।

—पं० नेहरू

जिस समय हम समझते हैं कि हम नेतृत्व कर रहे हैं, उस समय प्राय: हम स्वयं दूसरे के नेतृत्व में होते हैं। —बायरन

यदि नेत्रहीन व्यक्ति का नेतृत्व करनेवाला भी नेत्रहीन ही हो तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे। —बाइबल

तर्क और निर्णय एक नेता के गुण हैं। —टेसीटस

किसी भी व्यक्ति के मस्तक पर नेतृत्व की पट्टिका चिपकने से वह नेतृत्व की क्षमता से युक्त नहीं हो सकता। नेता के लिए विशेष स्वभाव चाहिए, विशेष गुण चाहिए। —अनाम

नैतिकता

सामग्री द्वारा नहीं अपितु नैतिकता के बलद्वाराही मनुष्यों और उनके कर्मों पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। —कार्लाइल

नैतिकता एक बहुमूल्य एवं व्यक्तिगत विलासिता है।

—बी० एडम्स

मानवता को नाक के बल चलाने के सर्वसाधनों में नैतिकता सर्वोत्तम है। —नीत्शे

अत्यधिक नैतिक मत बनो, अन्यथा तुम धोखा खा सकते हो। अपने ध्येय को नैतिकता से भी ऊपर रखो। केवल अच्छे मत बनो, किसी उद्देश्य के लिए अच्छे बनो। —थोरो

परिवर्तन

केवल परिवर्तन को छोड़कर शेष सभी वस्तुएं परिवर्तनशील हैं। —ज़ैंगविल

पृथ्वी परिवर्तनशील है, किन्तु आत्मा और परमात्मा अचल-अविचल हैं। —ब्राउनिंग

जो कुछ मैं पहले था, वह अब नहीं हूं। —बायरन

सभी वस्तुएं नवीन और विचित्र रूपों में परिवर्तित होती रहती हैं। —लांगफेलो

क्रांतियां की नहीं जातीं, वे होती हैं। —वैण्डेल फिलिप

परिस्थितियां

यदि परिस्थितियां अनुकूल न रहें तो भगवान को दोष न दो। अपना ही निरीक्षण करो। यदि ज़रा गहराई से सोचोगे तो तुम्हें स्वयं ही अपनी कठिनाइयों के कारण ज्ञात हो जाएंगे। —एनन

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, अपितु परिस्थितियां मनुष्य की दासी हैं। —डिज़राइली

परिस्थितियां जीवन को बदल देती हैं। —हैली बर्टन

दूसरों की परिस्थितियां हमें सुन्दर प्रतीत होती हैं, जबकि स्वयं हमारी दूसरों को सुन्दर प्रतीत होती हैं। —साइरस

पतन

जिसने स्वयं गिरकर अपने को कीट के समान बना दिया है, उसे अधिकार नहीं कि कुचले जाने पर उसके मुख से शिकायत का

—काण्ट

बोल भी निकले।

नित्य ही मैं सोचता हूं तो मुझे प्रतीत होता है कि वास्तव में उन भले लोगों ने भूल की जिन्होंने पतितों को पुनः खड़ा करने की चेष्टा की, बजाय इसके कि जो पतनोन्मुख थे, उन्हें संभालने का प्रयास करते।

—रस्किन

पाप

संसार में पाप कुछ भी नहीं है। वह केवल मनुष्य के दृष्टि-कोण की विषमता का दूसरा नाम है। —भगवतीचरण वर्मा

हम न पाप करते हैं न पुण्य करते हैं। हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता है! —भगवतीचरण वर्मा

अपने पापों पर पर्दा डालना अपने भविष्य पर पर्दा डालना है।

—अनाम

पाप तो इतिहास के आरम्भकाल से चला आ रहा है, किन्तु उसकी उपासना हमने अभी आरम्भ की है। —म० गांधी

जो पाप में फंस जाता है मानव है; जो उसपर खेद प्रकट करता है, देवता है; जो उसपर घमंड करता है, दानव है।—थामस फुलर

दरिद्रता और ऐश्वर्य तुलनात्मक पाप हैं। —विक्टर ह्यूगो

जो कुछ हम करते हैं हम केवल उसीके लिए उत्तरदायी नहीं होते, अपितु जो कुछ नहीं करते उसके लिए भी उत्तरदायी होते हैं।

—मोलियर

हे पुत्र, यदि पापी तुझे फंसाने का प्रयास करे, तो भी तू मत फंस।

—बाइबिल

पाप का पारिश्रमिक है मृत्यु! —अनाम

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। —म० गांधी

पुस्तक

आज के लिए और सदा के लिए सबसे बड़ा मित्र है अच्छी

पुस्तक ! —टपर

पुस्तकों का संकलन ही आज के युग का वास्तविक विद्यालय है। —कार्लाइल

सच्चे मित्रों के चुनाव के पश्चात् सर्वप्रथम एवं प्रधान आवश्यकता है : उत्कृष्ट पुस्तकों का चुनाव। —कोल्टन

जो पुस्तकें हमें अधिक विचारने को बाध्य करती हैं, वे ही हमारी सबसे बड़ी सहायक हैं। —थ्योडोर पार्कर

पुस्तक ही एकमात्र अमरत्व है। —र्‌यूफस कोएट

असभ्य राष्ट्रों को छोड़कर शेष सम्पूर्ण विश्व पर पुस्तकों का ही शासन है। —वाल्टेयर

बुद्धिमानों की रचनाएं ही एकमात्र ऐसी अक्षय निधि हैं जिन्हें हमारी सन्तति विनष्ट नहीं कर सकती। —लेण्टर

मैंने प्रत्येक स्थान पर विश्राम खोजा, किन्तु वह एकान्त कोने में बैठकर पुस्तक पढ़ने के अतिरिक्त कहीं प्राप्त न हो सका।

—थामस ए० केम्पिस

कुछ पुस्तकें चखने-मात्र को होती हैं, दूसरी निगल डालने योग्य और कुछ ही ऐसी होती हैं जिन्हें चबाया और पचाया जा सके।

—बेकन

केवल पुस्तक ही अमर है। —र्‌यूफस कोएट

अधिक पुस्तकें संजोने का कहीं अन्त नहीं है। अधिक अध्ययन भी शरीर की थकावट है। —बाइबल

पुराना कोट पहनो और नई किताब खरीदो। —थोरो

पुस्तक-प्रेमी सबसे अधिक धनी और सुखी हैं।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

प्रसन्नता

प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है। इसके विपरीत मलिनता ही रोग है।

—हैलीबर्टन

सम्पन्नता और प्रसन्नता एक ही वस्तुएं नहीं हैं, अपितु दो

विभिन्न वस्तुएं हैं। प्रसन्नता एक मन की अवस्था है, मूड है, जो बाहरी दशा पर निर्भर नहीं है। —अज्ञात

प्रसन्नता तो एकात्मभाव के सत्य की पहचान-मात्र है ; अपनी आत्मा का विश्वात्मा से एकात्मभाव और विश्वात्मा का सर्वोपरि प्रेमी से। —रवीन्द्र

कोई वस्तु सर्वथा हमारी उसी समय हो सकती है जब वह हमारी प्रसन्नता की वस्तु हो। —रवीन्द्र

जो कुछ लोग कहते हैं कि तुम नहीं कर सकते, उसे करके दिखा देना ही जीवन की सबसे बड़ी प्रसन्नता है।

—वाल्टर बेगहाट

अपने व्यापार को प्रसन्नता और प्रसन्नता को व्यापार में परिणत कर देना ही मेरे जीवन का नियम है। —आरोन बर

कोई प्रसन्नता ऐसी नहीं है जो तिक्तता के स्पर्श से भींगी न हो।

—हाफिज़

जो प्रसन्नता तुम्हें कल दंशित करनेवाली हो उसे ठुकरा दो।

—हूरबर्ट

यदि तुम प्रसन्नता की कामना करो तो प्रसन्नता तुमसे दूर भाग जाएगी और यदि तुम प्रसन्नता से दूर भागोगे, तो प्रसन्नता तुम्हारा अनुसरण करेगी। —हेवुड

जो प्रसन्नता से प्रेम करता है, वह अवश्य ही एक निर्धन व्यक्ति बनेगा। —लोकोक्ति

प्रशंसा

प्रशंसा एक अत्यन्त क्षणभंगुर उत्तेजना-मात्र है, जो इसके पात्र से निकटता प्राप्त करते ही शीघ्र नष्ट हो जाती है। —एडीसन

दूरी ही प्रशंसा की गहराई का मूल कारण है। —डाइडरॉट

हम सदैव उनको प्रेम करते हैं जो हमारी प्रशंसा करते हैं, हम सदैव उन्हें प्रेम नहीं करते जिनकी हम प्रशंसा करते हैं।

—रोश फूको

प्रशंसा श्रेष्ठ मस्तिष्कवालों को सत्प्रेरणादायिनी होती है, और क्षीण मस्तिष्कवालों के लिए अन्त। —कोल्टन

प्रशंसा निरर्थक शब्दों की प्रतिध्वनि-मात्र है। —बायर्स

मैं प्रशंसा उन्मुख स्वर से करता हूं, किन्तु निन्दा धीमे स्वर से। —रूस का द्वितीय केथरीन

प्रशंसा से इन्कार करने का अर्थ है: दुबारा प्रशंसा सुनने को लालायित होना। —ला रोश फूको

यदि तुमने मेरी कम प्रशंसा की होती तो मैं तुम्हारी अधिक प्रशंसा करता। —लुई १४वां

एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उसकी अनुपस्थिति में कीजिए। किन्तु स्त्री की प्रशंसा उसके मुख पर। —वेल्स की लोकोक्ति

ध्वनियों में सर्वमधुर है प्रशंसा की ध्वनि। —ज़ेनोफोन

प्रजातन्त्र

प्रजातन्त्र इस दृढ़ विश्वास की आधारशिला पर स्थित है कि साधारण मनुष्य में भी असाधारण कार्य करने की संभावनाएं निहित हैं। —हैरी इमर्सन फासडिश

प्रथम प्रजातन्त्रवादी दानव था। —बायरन

जो स्वतन्त्रता संरक्षित रखना चाहता है, उसे अपनी आस्था प्रजातन्त्र में रखनी आवश्यक है। —नारमन थामस

यदि कोई राष्ट्र देवताओं से निर्मित होता तो वह राष्ट्र प्रजातन्त्र द्वारा शासित होता। इतनी पूर्ण शासन-विधि मनुष्य के लिए उपयोगी नहीं है। —रूसो

जनता के लिए, जनता के द्वारा संचालित, जनता की ही शासन-प्रणाली का नाम प्रजातन्त्र है। —लिंकन

अधिक प्रजातन्त्र ही प्रजातन्त्र द्वारा उत्पन्न बुराइयों का निराकरण है। —स्मिथ

मैं प्रजातन्त्र में इसलिए विश्वास करता हूं कि यह प्रत्येक मनुष्य की शक्ति को उन्मुक्त करता है। —वुडरो विल्सन

प्रेम

पुरुष के लिए प्रेम एक भाव है, नारी के लिए भावना।
—अज्ञात

पुरुष अक्सर प्रेम करता है, किन्तु थोड़ा ही। नारी कभी ही प्रेम करती है पर जब करती है तो असीम। —वास्टा

विवाह में परिणति पानेवाला प्रेम मानव की सृष्टि करता है; किन्तु मानव को पूर्णता वही प्रेम दे पाता है जो बन्धनमुक्त रहे और जहां दोनों एक-दूसरे के मित्र रहें। —बेकन

पुरुष के प्रेम का आरम्भ प्रेम से होता है, पर अन्त नारी पर; नारी के प्रेम का आरम्भ पुरुष से होता पर अन्त प्रेम पर।—अनाम

प्रेम और वासना में उतना ही अन्तर है जितना कंचन और कांच में। —प्रेमचन्द

प्रेम की रखवाली करने के लिए प्रेमी प्रिय के हृदय में दयाभाव निरन्तर जगाता रहता है। —अनाम

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका सौरभ। —विक्टर ह्यूगो

प्रेम समय और स्थान की सीमा से परे है। यह निरंकुश है।
—विवेकानन्द

यदि तुम्हें कोई प्रेम नहीं करता तो निश्चय समझो, यह तुम्हारी अपनी त्रुटि है। —डाड्रिज

प्रेम करने का अर्थ है—अपनी प्रसन्नता को दूसरे की प्रसन्नता में लीन कर देना। —लीननिज

प्रेम ही साहस है और प्रेम ही बल; प्रेम ही जीवन का अनन्त क्रम। —स्वामी स्वरूपानन्द

वे सबसे कम प्रेम करते हैं जो अपना प्रेम सबके सम्मुख विज्ञापित करते हैं। —शेक्सपियर

जीवन का मधुरतम आनन्द और कटुतम वेदना प्रेम ही है।
—बेली

प्रेम की प्रथम झलक ही बुद्धिमत्ता की अन्तिम झलक है।
—एण्टनी ब्रेट

पुरुषों के साथ प्रेम कोई भावुकता नहीं होता, विचार होता है। —मदाम द' जिरार्दीन

हम सभी प्रेम करने के लिए उत्पन्न हुए हैं—यही अस्तित्व का सिद्धांत है और एकमात्र अन्त। —डिजराइली

यदि तुम प्रिय बनना चाहते हो तो प्रेम करो और प्रेम के योग्य बनो। —फ्रैंकलिन

सम्पूर्ण मानव समाज एक प्रेमी से प्रेम करता है। —इमर्सन

प्रेम प्रायः विवाह का फल होता है। —मोलियर

एक भयानक मानसिक रोग है प्रेम। —प्लेटो

प्रत्येक व्यक्ति प्रेम में अंधा हो जाता है। —प्रापर्टियस

प्रेम खोजना सुन्दर है, किन्तु बिना खोजे प्रेम दे देना सुन्दरतर। —शेक्सपियर

अपार जलराशि से भी प्रेम की पिपासा शांत नहीं हो सकती और न ही भयानक बाढ़ इसे डुबा सकती है। —सालोमन

यह कहना कि तुम एक व्यक्ति को आजीवन प्रेम करते रहोगे, यही कहने के समान है कि एक मोमबत्ती जब तक तुम चाहोगे, तब तक जलती ही रहेगी। —टॉल्स्टॉय

प्रेम-भरा हृदय अपने प्रेमपात्र की भूल पर दया करता है और स्वयं घायल हो जाने पर भी उससे प्यार करता है। —म० गांधी

प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है। —भगवान बुद्ध

अपने प्रेम की परिधि हमें इतनी बढ़ानी चाहिए कि उसमें गांव आ जाएं, गांव से नगर, नगर से प्रांत, यों हमारे प्रेम का विस्तार संपूर्ण संसार तक होना चाहिए। —म० गांधी

प्रतिरोध और सहनशीलता से हम प्रेम को ईश्वर के समकक्ष पहुंचा सकते हैं। —म० गांधी

यह प्रेम ही है, केवल प्रेम जो विश्व का संचालन करता है। —अनाम

प्रेम एक वेदनापूर्ण प्रसन्नता है। —अनाम

केवल वही, जो प्रेम के बाणों से घायल हो चुका है, प्रेम की

शक्ति को पहचानता है। —अनाम

अन्य सभी पदार्थों की भांति प्रेम की जन्मदात्री भी प्रकृति ही है। —अलेन

अत्यधिक नखरे प्रेम को विनष्ट कर देते हैं। —रोम्यां रोलां

जिस नारी को कोई प्रेम करता है, उसके लिए प्राण दे देना सरल है, किन्तु साथ जीवित रहना कठिन है। —रोम्यां रोलां

प्रेमी-प्रेमिका के अधरों पर ही आत्मा का आत्मा से मिलन होता है। —शेली

आओ, मेरे हृदय में वास करो और कोई किराया मत दो।

—सेमुएल लवर

प्रेम क्या है ? दूसरों में स्वार्थ पाना। —विष्णु प्रभाकर

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरहु चटकाय।
टूटे से फिर ना मिलै, मिलै गांठ परि जाय॥ —रहीम

बिनु गुन, जोबन, रूप, धन, बिन स्वारथ हित जानि।
शुद्ध कामना ते रहित, प्रेम सकल रसखानि॥—रसखान

दम्पति सुख अरु विषय रस, पूजा, निष्ठा, ध्यान।
इतने परे बखानिए शुद्ध प्रेम रसखान॥—रसखान

हरि के सब आधीन पै, हरि प्रेम आधीन।
याही ते हरि आपहूं, याहि बड़प्पन दीन॥—रसखान

जैसो बन्धन प्रेम को, तैसो बंध न और।
काठहि भेदै कमल को, छेद न निकरै भौंर॥ —वृन्द

प्रेम छिपाया न छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥ —कबीर

देखो करणी कमल को, कीन्हों जल सों हेत।
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूखो सरहि समेत॥—सूरदास

पुत्री

मेरा पुत्र तभी तक मेरा है जब तक उसका विवाह नहीं होता किन्तु मेरी पुत्री आजीवन मेरी है। —थामस फुलर

एक कर्तव्यविमुख पुत्री सदैव एक असफल पत्नी सिद्ध होगी।
—अनाम

बुद्धिमान और बुद्धिमत्ता

मूर्ख स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं, किन्तु वास्तविक बुद्धिमान स्वयं को मूर्ख ही समझते हैं। —शेक्सपियर

मूर्खों से अपनी प्रशंसा सुनने की अपेक्षा बुद्धिमानों की लताड़ सुनना श्रेयस्कर है। —बाइबल

अरे आलसी! तुच्छ पिपीलिका को देख, उसकी अनवरत साधना को निरख और बुद्धिमान बन। —बाइबल

अपने प्रति बुद्धिमान बनने की अपेक्षा दूसरों के प्रति बुद्धिमान बनना सरल है। —बाइबल

बुद्धिमत्ता का मूल्य लाल मणियों से भी ऊंचा है। —बाइबल

यौवन और सौन्दर्य में बुद्धिमत्ता अत्यन्त विरल होती है।
—होमर

अवसर बीत जाने पर बुद्धिमान होना सरल है।
—अंग्रेज़ी लोकोक्ति

बुद्धिमान मनुष्य मूर्खों से जितनी शिक्षा प्राप्त करते हैं उतनी मूर्ख बुद्धिमानों से नहीं। —केटो

ज्ञान तो अध्ययन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु बुद्धि तो महान अनुभवों के बीच ही उत्पन्न होती है।
—निर्मला हरबंससिंह

सारी बुद्धिमत्ता बीते युगों की बुद्धिमत्ता का परिणाम है। हमारी पुरानी संस्थाओं के मूल के अवशेषों पर ही नई संस्थाएं अंकुरित होती हैं। —बीचर

बुद्धिमत्ता ज्ञान का उचित व्यवहार है। कई व्यक्ति बहुत कुछ जानते हैं, परन्तु उतने ही मूर्ख होते हैं। बहुत जाननेवाले मूर्खों के समान मूर्ख और नहीं होता। अपनी जानकारी का उचित व्यवहार ही बुद्धिमत्ता है। —स्पर्जन

एक मूर्ख भी एक मिनट में उतने प्रश्न कर सकता है जिनका उत्तर एक दर्जन बुद्धिमान एक घंटे में भी नहीं दे सकते। —लेनिन

वह मनुष्य परम सुखी है जिसे सुबुद्धि प्राप्त है और जिसके पास विवेक का वास है। —बाइबल

बुद्धिमत्ता केवल सत्य में वास करती है। —गेटे

बुद्धिमत्ता माणिक से भी अधिक मूल्यवान है और जितनी वस्तुओं की तू इच्छा करता है वे सब मिलकर भी उसकी तुलना में नहीं आ सकतीं। उसके दक्षिण हस्त में दीर्घायु है, और वाम हस्त में अतुल धन एवं सम्मान। —बाइबल

बुद्धिमान ही निर्मल यश के अधिकारी होंगे और लज्जा मूर्खों की प्रगति होगी। —बाइबल

महान पुरुष सदैव बुद्धिमान नहीं होते। —बाइबल

हमारी अपनी अज्ञानता का ज्ञान ही बुद्धिमत्ता के मन्दिर का स्वर्ण-सोपान है। —स्पर्जन

बुराई

अच्छाई और बुराई तो ईश्वर के दक्षिण और वाम कर हैं। —बेली

बुराई का संपर्क हमारी अच्छी आदतों को भी दूषित कर देता है। —बाइबल

उनके प्रति शोक प्रकट करो जो भले को बुरा और बुरे को भला समझते हैं। —बाइबल

बुराई क्या है?—जो कुछ दुर्बलता से उत्पन्न होती है। —नीत्शे

कभी कीचड़ मत उछालो। हो सकता है कि तुम अपने लक्ष्य से चूक जाओ, किंतु तुम्हारे हाथ तो गन्दे हो ही जाएंगे। —जोज़ेफ पार्कर

ब्रह्मचारी, अविवाहित

ब्रह्मचारी वह है जो आखेट का आनन्द लेता है किन्तु स्वयं उसका भक्षण नहीं करता। —अनाम

संसार की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक ज्ञान की रचनाएं प्रायः ब्रह्मचारी लेखकों की लेखनी से ही निःसृत हुई हैं। —बेकन

अकेले व्यक्ति का कभी भी उतना मूल्य नहीं हो सकता जितना कि उसका विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन में होता है। वह अपूर्ण व्यक्ति है और कैंची के केवल एक फलक के समान अनुपयोगी है। —फ्रैंकलिन

हठपूर्वक अविवाहित रहनेवाले व्यक्ति के प्रति समाज स्थायी रूप से ललचा उठता है। —वाइल्ड

भलाई

हमारा उद्देश्य संसार के प्रति भलाई करना है, अपने गुणों का गान करना नहीं। —विवेकानन्द

जो मनुष्य जगत् की जितनी भलाई करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। —स्वामी दयानन्द

सम्पूर्ण भलाई और श्रेष्ठता का किरीट है : बन्धुत्व की भावना। —एडविन मार्कहम

जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है, वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है, न पुरस्कार का ; यद्यपि दोनों स्वतः ही उसे अन्त में प्राप्त हो जाते हैं। —विलियम पेन

भय

भय सदैव अज्ञानता से उत्पन्न होता है। —इमर्सन

जो पतितों और दुर्बलों के पक्ष में बोलते हुए भयभीत होते हैं, वे दास हैं। —लावेल

हमें केवल भय से ही भयभीत न होना चाहिए। —रूज़वेल्ट

ईश्वर का भय ही ज्ञान का उदय है। —बाइबल

भ्रम

अपने निकट की वस्तुओं की हम उपेक्षा करते हैं और अपने नेत्रों के सामने की वस्तुओं का तिरस्कार करते हैं, किन्तु उन वस्तुओं की खोज करते हैं जो हमसे अत्यन्त दूर हैं।

महानता

महान बनो और अन्य मनुष्यों में होनेवाली महानता तुम्हारी महानता से मिलने के लिए उठ खड़ी होगी। —लॉवेल

पानी जैसी चंचलता से मनुष्य महान नहीं बनता। —बर्क

दुनिया के विरुद्ध खड़े रहने के लिए घमण्डी या तुच्छ बनने की आवश्यकता नहीं। —म० गांधी

संसार के इतिहास में कभी भी काफी सुलझे हुए आदमी सभी जगहों पर नहीं हुए। —चिज़म

ऐसा कोई वास्तव में महान व्यक्ति नहीं हुआ जो वास्तव में, सदाचारी न रहा हो। —फ्रैंकलिन

विश्व को महापुरुषों की परम अपेक्षा है; महापुरुषों के पुजारियों एवं खुशामदियों की नहीं। —बीरजी

महान व्यक्ति दूसरे से हंसी-मज़ाक करने और मिलने-जुलने में भी अपने व्यवहार से महान बना रहता है, लेकिन जो उससे मिलता है, उसके साथ उठता-बैठता है, वह भी कभी छोटा नहीं दिखाई देता। —आंद्रे जीद

धरती उनकी भी आश्रयदात्री है जो उसका उत्खनन करते हैं। इसी प्रकार तुम भी उनकी बातें सहन करो जो तुम्हें सताते और तुम्हारा अपमान करते हैं; क्योंकि महानता इसीमें निहित है।

—तिरुवल्लुवर

परिणाम किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की महानता की निकृष्टतम कसौटी है। —जवाहरलाल नेहरू

महान दोषों से सम्पन्न होना महान व्यक्तियों का ही अधिकार है। —रोश फूको

सभी महान व्यक्ति मध्यवर्ग से ही उत्पन्न होते हैं। —इमर्सन

आज तक कोई भी व्यक्ति अनुकरण-मात्र से महान नहीं बना। —सेमुएल जॉनसन

ज्यों-ज्यों हम महान पुरुषों के निकट आते हैं, त्यों-त्यों हमें स्पष्ट होता जाता है कि वे केवल मानव हैं। अपने निकटवर्ती सेवकों को वे कभी महान प्रतीत नहीं होते। —लाब्रुयेर

कुछ जन्मजात महान होते हैं, कुछ महानता प्राप्त करते हैं और कुछ पर महानता लाद दी जाती है। —शेक्सपियर

महान व्यक्ति हमें इसलिए महान लगते हैं कि हम घुटनों पर टिके हुए हैं। —स्टर्नर

मस्तिष्क

मनुष्य का मस्तिष्क विधाता की एक अद्वितीय कृति है। —डा० रघुवीर

यदि तू मस्तिष्क को शांत रख सकता है तो तू विश्व पर विजयी होगा। —गुरु नानकदेव

एक निर्बल मस्तिष्क अणुवीक्षण-यन्त्र की भांति है जो छोटी-छोटी निरर्थक वस्तुओं को बड़ा भले ही कर दे, किन्तु बड़ी वस्तुओं को नहीं देख सकता। —चैस्टरफील्ड

सतत अभ्यास ही मस्तिष्क का बल है, विश्राम नहीं। —पोप

जिनके मस्तिष्क अन्धविश्वास से मुक्त हैं, उनको मृत्यु रंच-मात्र भी भयभीत नहीं कर सकती। —गुरु नानक

क्षुद्र मस्तिष्क अपनी क्षुद्र सीमा से परे किसी भी वस्तु को उचित नहीं समझते। —रोशे फुकाल्ड

आयु-वृद्धि के साथ-साथ चेहरे की भांति मस्तिष्क के दोष भी

निरन्तर भद्दे होते जाते हैं। —रोशे फुकाल्ड

एक सत्य, स्वस्थ और पूर्ण मस्तिष्क महान और साधारण सभी वस्तुओं को समभाव से ग्रहण कर सकता है। —सैमुएल जॉनसन

मस्तिष्क का अपना विशेष स्थान है, और वह स्वतः ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में परिणत कर सकता है।—मिल्टन

क्षीण शरीर मस्तिष्क को भी क्षीण कर देता है। —रूसो

मन (हृदय)

मन एक श्रमिक है; यदि वह श्रमिक नहीं बन सकता तो कुछ भी नहीं बन सकता। —जोसेफ कानरैड

हृदय उन पुष्पों की भांति है जो कोमलता से गिरी हुई ओस के लिए तो खिले रहते हैं किन्तु मूसलाधार वर्षा में बन्द हो जाते हैं। —अज्ञात

अपने हृदय को व्यथित मत करो। —बाइबल

जहां तुम्हारा कोष है, वहीं तुम्हारा हृदय भी होगा। —बाइबल

हृदय अपनी कटुता को जानता है। —बाइबल

प्रसन्नहृदय व्यक्ति का चेहरा सदैव खिला रहता है। —बाइबल

जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहु कित जाहिं।
जल में ज्यों छाया परी, काया भीजति नाहिं॥—रहीम

मधुमक्खी

दूसरे सभी जीवों की अपेक्षा मधुमक्खी का अधिक आदर होता है। इस कारण नहीं कि वह श्रम करती है, अपितु इस कारण कि वह दूसरों के लिए श्रम करती है। —सन्त क्रिसोस्तम

जिस मधुमक्खी के मुख में मधु रहता है उसीके पृष्ठ में कटुतम डंक भी छिपा रहता है। —लायली

मानव

यदि तुम पढ़ना जानते हो तो प्रत्येक मनुष्य स्वयं में पूर्ण एक ग्रन्थ है।
—चैनिंग

मनुष्यों के केवल तीन ही वर्ग हो सकते हैं—विपरीतगामी, स्थिर और अग्रगामी।
—लैवेटर

मनुष्य का मापदंड उसकी सम्पदा नहीं, अपितु उसकी बुद्धिमत्ता है। आज वस्तुतः राष्ट्र को ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता भी है।
—टी० एल० वास्वानी

प्रकृति की अनुरूपता नहीं, अपितु संघर्ष ही मनुष्य को, जो कुछ वह है, बनाता है।
—विवेकानन्द

अत्यधिक विरोधी परिस्थितियों में ही मनुष्य की परीक्षा होती है।
—म० गांधी

ज्यों-ज्यों मनुष्य बूढ़ा होता जाता है, त्यों-त्यों जीवन से प्रेम और मृत्यु से भय होता जाता है।
—जवाहरलाल नेहरू

बहुत-से मनुष्य इतने अशक्त होते हैं कि छोटी-सी बात के लिए क्षमा कर देना उनकी शक्ति से बाहर होता है।
—धूमकेतु

कोई मनुष्य १७वीं और १९वीं शताब्दी में एकसाथ नहीं रह सकता।
—कार्लाइल

व्यक्ति समाज से तिरस्कृत होने पर दार्शनिक, शासन से प्रताड़ित होने पर विद्रोही, परिवार से उपेक्षित होने पर महात्मा और नारी से अनादृत होने पर देवता बनता है।
—रमण

मनुष्य की महिमा को अनुभव करने के लिए ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। ईश्वर की छाप न मानने पर भी हम मनुष्य के प्रति श्रद्धा प्रकट कर सकते हैं।
—प्लैखनोव

मनुष्य जब पशु बन जाता है, उस समय वह पशु से भी बदतर होता है।
—टैगोर

मानव ! अश्रु और मुस्कान के मध्य स्थित दोलक ! —बायरन

प्रत्येक मनुष्य का जीवन ईश्वर की उंगलियों से लिखी गई परी-कथा है।
—एण्डरसन

मनुष्य अपनी श्रेष्ठता का आन्तरिक रूप से प्रकट करते हैं, पशु बाह्य रूप से। —रूसी लोकोक्ति

मनुष्य को प्रकृति ने ही असमान उत्पन्न किया है, अतः उनसे समानता का व्यवहार करना ही व्यर्थ है। —फ्राउद

प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है। —सालस्ट

यदि एक मनुष्य तनिक भी जानने योग्य है, तो वह पूर्णतः जानने योग्य है। —अलैक्ज़ेंडर स्मिथ

हम चमत्कारों के भी चमत्कार हैं और ईश्वर का अगाध रहस्य। —कार्लाइल

मनुष्य की मनुष्य के प्रति अमानवता असंख्यों को रुला देती है। —बर्न्स

मातृभूमि

भूमि मेरी माता है, मैं पृथ्वीपुत्र हूं। —अथर्ववेद

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। —वाल्मीकि

मार्क्सवाद

मार्क्सवाद फौलाद के एक टुकड़े से ढाला गया है। उसके आधारभूत सिद्धान्तों में से एक को छोड़ देने पर यथार्थ से विमुख हुए बिना आप नहीं रह सकते। —लेनिन

मित्रता

मित्रता का प्रकाश तो ज्वलित फास्फोरस के प्रकाश की भांति होता है, जिसका तीव्रतम आभास घनीभूत तमराशि में ही होता है। —क्रामवैल

मित्र के लिए जीवनदान देना उतना कठिन नहीं है जितना कठिन कि ऐसा खोजना जिसके लिए जीवनदान किया जा सके। —होमर

मित्रता को धीरे-धीरे उच्चता के शिखर पर चढ़ने दो। यदि

शीघ्रता करोगे तो यह शीघ्र ही क्लान्त हो उठेगी। —फुलर

जीवन का आनन्द केवल उसने खो दिया है जो नये मित्रों पर विजय नहीं पा सकता। —मिशेल

कभी उस व्यक्ति से मित्रता मत करो जिसने तीन मित्र बनाकर त्याग दिए हों। —लैवेटर

न तो संसार में कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु; तुम्हारा अपना व्यवहार ही शत्रु अथवा मित्र बनाने का उत्तरदायी है।

—चाणक्य

मित्रता करने में धैर्य से काम लो, किन्तु मित्रता कर ही लो तो उसे अचल और दृढ़ होकर निबाहो। —सुकरात

सम्पन्नता तो मित्र बनाती है, किन्तु उसकी परख विपदा में ही होती है। —अनाम

एक सच्चा मित्र दो शरीर में एक आत्मा के समान है।

—अरस्तू

अपने मित्रों को सदैव सन्तुष्ट रखने का सर्वोत्तम ढंग है कि न तो उन्हें ऋण दो और न कभी उनसे ऋण लो। —पाल द' कॉक

सच्चा मित्र वही है जो संकट के समय काम आए।

—अंग्रेज़ी लोकोक्ति

अपने मित्रों की भर्त्सना एकान्त में करो, किन्तु प्रशंसा सर्वत्र और उन्मुक्त कण्ठ से। —साइरस

मित्रों की आलोचना करते समय यदि आपके मन को संताप पहुंचता है तो आप उनकी आलोचना करना बन्द न कीजिए—जो कहना हो निर्भय होकर कहिए; किन्तु आपको यदि उनकी आलोचना में रस आने लगे तो कृपया तत्काल अपनी वाणी पर लगाम लगा लीजिए। —डेल कार्नेगी

जीवन में मित्रता से अधिक और कोई प्रसन्नता नहीं।

—जानसन

अगर तुम्हारे पचास मित्र हैं तो भी कम हैं, और यदि तुम्हारा एक भी शत्रु है तो भी पर्याप्त है। —इटालियन लोकोक्ति

जिस प्रकार पुरानी लकड़ी जलने में उपयोगी है, पुराना घोड़ा

पढ़ने में अच्छा, पुरानी पुस्तकें पढ़ने में सुन्दर तथा पुरानी मदिरा पीने में लाभकर, उसी प्रकार पुराने मित्र भी सदैव विश्वसनीय एवं श्रेष्ठ होते हैं। —लियोनार्ड राइट

जीवन में केवल तीन सच्चे मित्र हैं—वृद्ध पत्नी, पुराना कुत्ता और वर्तमान धन। —फ्रैंकलिन

कभी परिहास में भी मित्र को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए। —साइरस

सैकड़ों मित्र बनाने चाहिए, चाहे वे जो कोई हो।—हितोपदेश

विवाह और मित्रता समान स्थितिवाले से करनी चाहिए। —हितोपदेश

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत।। —रहीम

मिलन

आत्मा का आत्मा से मिलन होना अधिक अच्छा है। इस मिलन को संसार की कोई सत्ता नहीं रोक सकती। —म० गांधी

मूर्खता

जो व्यक्ति मूर्खों के सम्मुख विद्वान दिखलाई पड़ने का प्रयास करते हैं, वे विद्वानों के सम्मुख मूर्ख दिखलाई देंगे। —क्विकट

मूर्ख को स्वयं से भी अधिक मूर्ख व्यक्ति प्रशंसा के लिए मिल जाता है। —ब्वायली

तरुणों के विचार में वृद्ध पुरुष मूर्ख होते हैं, जबकि वृद्ध तरुणों को मूर्ख समझते हैं। —जार्ज चैपमैन

मूर्ख और उसकी सम्पत्ति दोनों को शीघ्र ही विलग होना पड़ता है। —अंग्रेज़ी लोकोक्ति

एक शिक्षित मूर्ख एक अज्ञानी से कहीं अधिक मूर्ख होता है। —मोलियर

जहां जाते हुए देवदूत भी भय खाते हैं, मूर्ख उधर ही जाते हैं।

—पोप

मौन रहने पर मूर्ख भी विद्वानों की कोटि में आ जाता है।

—लोकोक्ति

मूर्ख स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं, जबकि बुद्धिमान स्वयं को मूर्ख ही मानते हैं। —शेक्सपियर

मूर्ख आदमी बिना बुलाए भीतर घुस आता है और बिना पूछे बोलने लगता है, जिसपर विश्वास नहीं करना चाहिए, उसका विश्वास करता है। —महाभारत

मृत्यु

मृत्यु में आतंक नहीं होता, बल्कि मृत्यु तो एक प्रसन्नतापूर्ण निद्रा है जिसके पश्चात् जागरण का आगमन होता है।—म० गांधी

मृत्यु जीवन से उतनी ही सम्बन्धित है जितना जन्म।

—रवीन्द्र

क्या मृत्यु अन्तिम निद्रा है? नहीं, यह अन्तिम चेतावनी है।

—वाल्टर स्काट

जब तक चिरनिद्रा में अपने नेत्र निमीलित न कर ले, तब तक कोई भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं होता। —एसाइलस

जीवन के बीच भी हम मृत्यु में ही होते हैं।

—बुक ऑव कामन प्रेयर

नारी के गर्भ से उत्पन्न होनेवाला इस मानव का जीवन कितना संक्षिप्त और संतापों से पूर्ण है! उसका निर्माण होता है और पुष्प की भांति वह विनष्ट भी हो जाता है।

—बुक ऑव कामन प्रेयर

मृत्यु मनुष्य को रुला देती है और फिर भी तीसरा जीवन पुनः निद्रालीन ही व्यतीत होता है। —बॉयरन

हे मृत्यु! तेरा कटु दर्शन कहां है?
हे समाधि! तेरी मधुरतम विजय कहां है? —बाइबल

मृत्यु से डरना क्यों ! यह तो जीवन का सर्वोच्च साहसिक अभियान है। —चार्ल्स फ्राहमैन

अब मैं गहन अंधकार में अग्रसर होकर अपनी अन्तिम यात्रा को चलनेवाला हूं। —थामस हाब्स

ईश्वर ने ही जीवन दिया था, ईश्वर ने ही जीवन ले लिया। धन्य है वह ईश्वर ! —बाइबल

अन्त सदा ही आदि से सम्बद्ध होता है, उसी प्रकार हम उत्पन्न होने के समय से ही मृत्यु के ग्रास बनने लगते हैं। —मनीलियस

ज़रा-सी निद्रा, ज़रा-सी खुमारी और निद्रा के उपक्रम में अंगों का संकोचन—यही मृत्यु है। —बाइबल

जब तक श्रम श्लथ रहता है तब तक वह शयनलीन रहता है और जीवन का खेल समाप्त हो चुकता है। —पोप

जीवन में प्रथम हमारी प्रसन्नता नष्ट होती है और तब हमारी आशा, भय भी चले जाते हैं। इनके समाप्त होते ही धरा अपना ऋण मांगती है और हम भी चिरनिद्रा में लीन हो जाते हैं।—शैली

ईश्वर की उंगली ने उसका कोमल स्पर्श किया और वह निद्रा-लीन हो गया। —टैनीसन

मृत्यु से अधिक सुन्दर और कोई घटना नहीं हो सकती।
—वाल्ट व्हिटमैन

जो एक से अधिक बार जीवित रहता है उसे एक से अधिक बार मृत्यु का ग्रास भी होना पड़ेगा। —वाइल्ट

मृत्यु के, कुछ समय पूर्व स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म-भर की घटनाएं एक-एक करके सामने आती हैं, सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं। समय की धुंध बिलकुल उनपर से हट जाती है।
—गुलेरी

गगन-सी वारिधि-सी गंभीर,
भाग्य जैसी निश्चल अज्ञात !
प्रलय-सी मारुत-सी बलवान,
अंधेरी-सी जीवन की रात।

—महादेवी वर्मा

मौन

मौन ही मूर्खों का लेख है और बुद्धिमानों का एक सद्गुण ।
—बोनार्ड

मौन के वृक्ष पर शांति के फल फलते हैं। —अरबी लोकोक्ति

मौन कभी-कभी वाणी से अधिक वाचाल होता है।
—म० गांधी

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना है तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं। —म० गांधी

मौन कभी-कभी तीव्रतम आलोचना होती है।
—चार्ल्स बक्सटन

मौन प्राय: सम्मत्ति का द्योतक है। —पोप वोनीफेस

मौन सर्वाधिक असह्य एवं कटु व्यंग्योक्ति है। —चैस्टरटन

बर्तन तभी सबसे अधिक ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जब वे रिक्त होते हैं। —जॉन ज्वेल

केवल मौन धारण किए रहो और व्यक्ति तुम्हें दार्शनिक समझने लगेंगे। —लेटिन लोकोक्ति

मौन रहो और अपनी सुरक्षा करो। मौन कभी तुम्हारे साथ विश्वासघात नहीं करेगा। —जॉन ब्वायल

जो अपनी जिह्वा को वश में रखता है वह जीवन-भर नियंत्रण रखता है; किन्तु जिसका जिह्वा पर वश नहीं, वह नाश को प्राप्त होता है। —बाइबल

जहां नदी गहरी होती है, वहां जलप्रवाह अत्यन्त शांत व गम्भीर होता है। —शेक्सपियर

मुझे कभी इसका खेद नहीं हुआ कि मैं मौन क्यों रहा, किन्तु इसका खेद अनेक बार हुआ है कि मैं बोल क्यों पड़ा। —साइरस

खामोश रहो या ऐसी बात कहो जो खामोशी से बेहतर है।
—पिथागोरस

मौन और एकान्त आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं। —लांगफेलो

युद्ध

युद्ध विनाश-विद्या का नाम है। —जॉन एस० सी० एबट

हम दुर्ग तभी छोड़ते हैं जब उसकी रक्षा के लिए एक भी व्यक्ति शेष नहीं रह जाता। —जेनरल क्रोधम

संसार में आज तक अच्छा युद्ध और बुरी शान्ति कभी नहीं हुई। —फ्रैंकलिन

युद्ध के समान अवश्यंभावी संसार में और कुछ नहीं है। यदि युद्ध होता है तो सदैव मनुष्यों की असफलताओं के परिणामस्वरूप ही होता है। —बोनर लॉ

युद्ध मनुष्यता के लिए सबसे भयानक महामारी है; यह धर्म को मिटा देता है, राष्ट्रों का विनाश कर देता है और परिवारों का विध्वंस कर देता है। —मार्टिन लूथर

योग्यता

योग्य व्यक्ति के सान्निध्य में सदैव योग्य व्यक्तियों का वास होता है। —चीनी लोकोक्ति

हम ज्यों-ज्यों जीवन में प्रगति करते जाते हैं, त्यों-त्यों हमें अपनी योग्यताओं की सीमा का ज्ञान होता जाता है। —फ्राउद

दूसरे व्यक्ति हमारी योग्यता की परख, जो कुछ हम कह चुके हैं, उसके आधार पर करते हैं जबकि हम अपनी परख उससे करते हैं जो कुछ करने की हममें सामर्थ्य है। —लांगफेलो

सुयोग के अभाव में योग्यता का मूल्य बहुत कम रह जाता है। —नेपोलियन

क्योंकि उन्हें विश्वास है कि वे योग्य हैं, इसीलिए वे योग्य हैं। —वर्जिल

साधारण योग्यता को बुद्धिमानी से काम में लाने पर ही प्रशंसा प्राप्त होती है। उससे इतनी ख्याति होती है जितनी वास्तविक चमक में नहीं होती। —रोश फूको

यौवन

अपने युवाकाल के स्वप्नों के प्रति वफादार रहो। —शिलर

यदि यौवन को वार्धक्य का ज्ञान और वृद्धावस्था को यौवन की कार्यक्षमता प्राप्त हो पाती तो निर्धनता केवल काल्पनिक गाथा-मात्र रह जाती। —लोकोक्ति

युवाकाल जीवन में केवल एक बार आता है। —लांगफेलो

यौवन! तेरी आशाएं कितनी प्रेरक होती हैं! सूर्यमुखी पुष्पों की भांति वे भी सदा आलोक-पक्ष की ओर उन्मुख रहती हैं। —जीन एंजिलो

युवावस्था में हम शिक्षण प्राप्त करते हैं और वृद्धावस्था में उस ज्ञान की वास्तविकता की थाह पाते हैं।

—मेरी एबनर एशेनवाश

जिस तारुण्य को नियति आलोक एवं सफल मनुजत्व के लिए सुरक्षित रखती है, उसके शब्दकोष में 'असफल' नाम का कोई शब्द नहीं होता। —बुलवर लिटन

यौवन के गुलाब के विकीर्ण दलों को कोई नहीं चुन सकता।

—अनाम

प्रेम की सम्पूर्ण पेय मात्राओं में यौवन सर्वाधिक शक्तिशाली है। —अलेन

यौवन में दिन छोटे प्रतीत होते हैं किन्तु वर्ष बड़े, जबकि वृद्धावस्था में वर्ष छोटे किन्तु दिन बड़े। —पेनिन

वृद्ध सभी बातों का विश्वास कर लेते हैं, मध्य आयुवाले सभी बातों पर सन्देह करते हैं, युवक सभी बातों को जानते हैं।

—वाइल्ड

रहस्य

जो व्यक्ति अपना रहस्य अपने सेवक को बताता है वह सेवक को अपना स्वामी बना लेता है। —ड्राइडेन

जो व्यक्ति अपने रहस्य को छिपाए रखता है वह अपनी कुशलता अपने हाथ में रखता है। —हज़रत उमर

कभी कोई गुप्त कार्य मत करो अथवा गुप्त रूप से मत करो।
—पं० नेहरू

कोई व्यक्ति सारी बातें छिपा सकता है किन्तु दो बातें नहीं—एक तो यह कि वह मदिरा-पान किए है और दूसरी यह कि वह प्रणय का शिकार है। —ऐण्टीफेनीस

कोई भी ऐसा रहस्य नहीं है जिसका उद्घाटन नहीं होगा।
—ल्यूक

यदि तुम इच्छा करते हो कि दूसरे तुम्हारे रहस्य को गुप्त रखें, तो प्रथम तुम स्वयं ही इसे गुप्त रखो। —सेनेका

राष्ट्र और राष्ट्रीयता

एक सहस्र वर्ष भी कठिनता से एक राष्ट्र का निर्माण कर पाते हैं, किन्तु एक घंटे-मात्र में वह धराशायी हो सकता है।—बायरन

व्यक्तियों के समान राष्ट्रों का भी नाश और निर्माण होता है, किन्तु सभ्यता कभी भी नष्ट नहीं हो सकती। —मेज़िनी

राष्ट्रीयता भयानक रूप से संक्रामक बीमारी है।
—अल्बर्ट आइन्स्टाइन

राजनीति व राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ वह जन्तु है जो एक बाड़े पर बैठकर भी दोनों कान पृथ्वी से सटाए रख सकता है। —अनाम

राजनीति और धर्म दो वस्तुएं हैं जिनमें प्रायः कम ही सामंजस्य होता है। —बर्क

सभी राजनीतिक संस्थाएं अपने झूठों के परिणामस्वरूप ही अन्त में मिट जाती हैं। —जान आरबुथनॉट

मनुष्य प्राकृतिक रूप में एक सामाजिक प्राणी है। —अरस्तू

राजनीति वास्तविक अर्थ में कोई विज्ञान नहीं। —बिस्मार्क

राजनीतिज्ञ भावी निर्वाचन के विषय में सोचता है, जबकि राजनीतिकुशल भावी पीढ़ी के विषय में चिन्ताग्रस्त रहता है।

—जेम्स क्लार्क

जो नैतिकता में अनुचित है, वह राजनीति में कभी उचित नहीं हो सकता। —डेनियल अ' कौन्नेल

राजनीति एक साधारण नाड़ी की धड़कन-मात्र है, और क्रांति ही इसका ज्वर है। —वैण्डेल फिलिप

रुदन

जो युवक रोया नहीं, जंगली है ; और जो बूढ़ा हंसता नहीं है, बेवकूफ है। —जार्ज सन्तायन

ऋण

ऋण तो एक अथाह सागर के समान है। —कार्लाइल

ऋण लेनेवाला ऋण देनेवाले का दास है। —लोकोक्ति

ऋणी होना ही सबसे बड़ी निर्धनता है।—एम० जी० लिश्वर

ऋण लेना भी भिक्षावृत्ति से अधिक अच्छा नहीं है।—लैसिंग

ऋण लेने का अर्थ है दुःख मोल लेना। —टसर

राष्ट्रीय ऋण यदि अधिक न हो तो हमारे लिए राष्ट्रीय वरदान बन जाएगा। —हैमिल्टन

जो मर गया वह समस्त ऋणों से उऋण हो गया।

—शेक्सपियर

लक्ष्मी

जिस प्रकार एक युवती वृद्ध पुरुष का आलिंगन करना नहीं चाहती, उसी प्रकार लक्ष्मी भी आलसी, भाग्यवादी और साहस-

विहीन व्यक्ति को नहीं चाहती। —अनाम

लक्ष्मी जिसे अपना प्रिय पात्र बनाती है उसे मूर्ख बना देती है। —बेकन

जीवन में बुद्धि का नहीं, लक्ष्मी का साम्राज्य है। —सिसेरो

लक्ष्मी उन्हींकी सहायता करती है, जिनका निर्णय विवेकशील होता है। —यूरीपीडीज़

एकसाथ ही लक्ष्मी और सद्विवेक का वरदान प्रायः मनुष्यों को कम ही मिलता है। —लिवी

लड़का

सभी जंगली पशुओं में कठिनता से वश में आनेवाला है लड़का। —प्लेटो

लापरवाही

लापरवाही प्रायः अज्ञानता से भी अधिक क्षति पहुंचाती है। —फ्रैंकलिन

एक लापरवाह व्यक्ति की पत्नी विधवा के समान है।
—हंगेरियन लोकोक्ति

लेखक

बुरे लेखक वे हैं जो अपने अशक्त विचारों की अभिव्यक्ति दूसरों की सुन्दर भाषा के माध्यम से करते हैं।
—जी० सी० लिचटेनबर्ग

विचारो अधिक, बोलो अत्यल्प, लिखो थोड़ा।
—इटालियन लोकोक्ति

यदि तुम लेखक बनने के आकांक्षी हो तो लिखो।
—इपिकटेटस

लेखनी मस्तिष्क की जिह्वा है। —सर्वेण्टिस

अपनी पुस्तकों की प्रशंसा करनेवाला लेखक अपने बच्चों की प्रशंसा करनेवाली माता के ही समान है। —डिज़राइली

लेखकों की मसि शहीदों के रक्त-बिन्दुओं से अधिक पवित्र है। —ह० मोहम्मद

अच्छी पुस्तकों की संख्या इतनी कम क्यों है, इसका एकमात्र कारण यह है कि इतने विरले व्यक्ति ही लेखक हैं जोकि कुछ जानते हैं। —वाल्टर बेगहाट

जिस बात को हम भली प्रकार समझते हैं, उसीको भली प्रकार व्यक्त भी कर सकते हैं। —ब्वायलू

लेखक वे चीज़ें प्रायः कम ही लिखते हैं, जो वे सोचते हैं। न केवल वही चीज़ें लिखते हैं, जोकि दूसरे सोचते हैं, वे सोचते होंगे। —एल्बर्ट हुबार्ड

लेखनी करवाल से अधिक शक्ति की धात्री है। —बुल्वर लिटन

विवाह

प्रत्येक व्यक्ति विवाह के दूसरे ही दिन से स्वयं को उम्र में सात वर्ष अधिक बूढ़ा अनुभव करता है। —बेकन

प्रेम में मनुष्य स्वप्नों में खोया रहता है, किन्तु विवाह होते ही उसके नेत्र खुल जाते हैं। —पोप

विवाह के पूर्व मनुष्य को नेत्र पूर्णतः उन्मीलित रखने चाहिए, किन्तु विवाह के पश्चात् अर्धनिमीलित। —मदाम शूरे

विवाह में मनुष्य को उतना ही विश्वास रखना चाहिए जितना कि आत्मा की अमरता में। —बाल्ज़क

अपने से उच्च कुल में विवाह करने का अर्थ है अपनी स्वतन्त्रता बेचना। —मैसेंजर

विवाह का आदर्श शरीर के द्वारा आध्यात्मिक मिलन है। मानवी प्रेम दैवी अथवा विश्वप्रेम का सोपान है। —म० गांधी

विवाह ही एकमात्र विषय है जिसपर सभी स्त्रियां एकमत होती हैं, किन्तु सभी पुरुष भिन्नमत होते हैं। —वाइल्ड

एक सन्नारी के साथ विवाह जीवन के झंझावातों में नौकाश्रय के समान है, इससे विपरीत एक बुरी स्त्री से विवाह जीवन के शांत नौकाश्रय में झंझा के समान। —जे० पी० सेन

विवाह एक ऐसी प्रणय-कथा है जिसमें नायक प्रथम अंक में ही मर जाता है। —बुलवर

नारी विवाह के पूर्व क्रन्दन करती है; पुरुष विवाह के पश्चात्। —ए० ड्यूपाई

यदि तुम स्वयं को नष्ट करना चाहते हो तो एक सम्पन्न महिला से विवाह कर लो। —मिश्लेट

प्रथम बार विवाह करना एक पावन कर्तव्य है, दूसरी बार एक मूर्खता, और तीसरी बार एक पागलपन। —डच लोकोक्ति

कुमारियां पति के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहतीं। जब उन्हें पति प्राप्त हो जाते हैं तब वे सब कुछ चाहने लगती हैं। —शेक्सपियर

मनुष्य विवाह करते हैं अन्त करने के लिए, स्त्रियां प्रारम्भ करने के लिए। —ए० ड्यूपाई

विवाह तो मदिरा के समान है। इसकी यथार्थता भी द्वितीय चषक से पूर्व नहीं जानी जा सकती। —जेरोल्ड

किसी नारी के लिए यह श्रेयस्कर है कि वह उस पुरुष से विवाह करे जो उसे प्रेम करता हो बजाय इसके कि उससे विवाह करे जिसे वह प्रेम करती है। —अरबी लोकोक्ति

नारी में श्रेष्ठ पति बनाने की प्रतिभा होनी अपेक्षित है। —बाल्जक

प्रेम विवाह का प्रत्यूष है और विवाह प्रेम की संध्या। —फ्रांसीसी लोकोक्ति

स्वर्ग भी मेरे लिए स्वर्ग नहीं होगा, यदि वहां मुझे मेरी अर्धांगिनी न मिली। —एण्ड्रू जैक्सन

विवाह एक जूए के समान है जिसमें पुरुष को अपनी स्व-

तन्त्रता और स्त्री को अपनी प्रसन्नता दांव पर लगानी पड़ती है।
—मदाम द' रियू

स्मरण रखो, एक धनी महिला से विवाह करना भी उतना ही सरल है जितना एक निर्धन से। —ठैकरे

पुरुष इसलिए विवाह करते हैं कि वे थक जाते हैं, स्त्रियां इसलिए कि वे उत्सुक होती हैं। दोनों ही निराश होते हैं। —वाइल्ड

जो विवाह से भयभीत होकर पीछे हटता है, वह उसीके समान कायर है जो युद्धभूमि से पलायन करता है। —म० गांधी

विवाह में पुरुष का जीवन स्त्री की पूर्ति करता है और स्त्री का जीवन पुरुष के जीवन को पूर्ण बनाता है। स्त्री और पुरुष सम्मिलित होकर मानवता को पूर्ण बनाते हैं। —हिप्पेल

विवाह में चिन्ताएं बढ़ जाती हैं, किन्तु एकाकी जीवन तो ऐसी इच्छाओं से घिरा है जो इससे भी अधिक कठिन और चिन्ताजनक है। —जे० टेलर

विवाह मुख्य रूप से पुरुष और स्त्री की ऐन्द्रीय वासनाओं को शांत करने का साधन-मात्र नहीं है, अपितु वह संस्था है जिसका उद्देश्य है शिशु-कल्याण। —कैनेथ वालसर

जीवन या मरण, चिरआनन्द या चिरदुःख, सभी विवाह को शक्ति से नियन्त्रित हैं। —जेरेमी टेलर

एक विवाहित पुरुष अर्धपुरुष से कुछ भी अधिक नहीं।
—रोम्यां रोलां

स्त्री का कर्तव्य यही है कि वह जितनी शीघ्र हो विवाह कर डाले, पुरुष का कर्तव्य यही है कि जहां तक हो अविवाहित रहे।
—बर्नार्ड शॉ

विश्व

विश्व एक सुन्दर पुस्तक के समान शिक्षापूर्ण है, किन्तु उसके लिए इसका रंच-मात्र भी उपयोग नहीं जो इसको पढ़ नहीं सकता।
—गोल्डोनी

आकाश के अन्य सुन्दर लोकों की भांति हमारा विश्व भी सुन्दर है। यदि हम अपने कर्तव्य-मात्र को कर पाते तो यह भी उन्हींकी भांति प्रेम से परिपूर्ण हो जाता ! —जीराल्ड मासी

अच्छी-बुरी सभी प्रकृतियों के व्यक्तियों के सम्मिलन से विश्व की रचना होती है। —डोगलास जेरोल्ड

मृत्यु और कर के अतिरिक्त इस विश्व में कुछ भी निश्चित नहीं है। —फ्रैंकलिन

जिस प्रकार हम ईर्ष्या एवं कुटिलता के द्वारा संसार को नरक बना सकते हैं, वैसे ही प्रेम के द्वारा इसे स्वर्ग भी बनाया जा सकता है। —अनाम

जो केवल विचारते हैं उनके लिए विश्व सुखमय है, जो अनुभव करते हैं उनके लिए दुःखमय। —होरेस वालपोल

संसार पानी का एक बुलबुला है। —बेकन

संसार के विषय में कही गई प्रत्येक बात का विश्वास कर लो, क्योंकि इस अपार संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है।

—बाल्ज़क

इस विश्व में राष्ट्र उसी प्रकार हैं जिस प्रकार बाल्टी में एक बूंद। —बाइबल

जब तक तुम स्वदेश-प्रेम को मानवता से बाहर नहीं खदेड़ देते, तब तक तुम कभी भी एक शान्तिमय विश्व का निर्माण नहीं कर सकते। —जार्ज बर्नार्ड शॉ

सम्पूर्ण विश्व एक मंच है और स्त्री तथा पुरुष इसपर अभिनय करनेवाले पात्र। —शेक्सपियर

सारा संसार संतुष्ट है और सारा असन्तुष्ट। प्रत्येक प्राणी को इस खिचड़ी का भाग मिला है। कहीं दाल अधिक ; कहीं भात अधिक। —सद्गुरुशरण अवस्थी

विचार

मानव-जीवन में दो ही ऐसे विचार आते हैं जब उसे विचारना

नहीं चाहिए—एक तो जब वह किसी काम के लिए समर्थ हो, और दूसरे जब वह असमर्थ हो। —मार्क ट्वेन

केवल मूर्ख और मृतक ये दो ही अपने विचारों को कभी नहीं बदलते। —लावेल

जीवन में आधी गलतियां तो केवल इसलिए होती हैं कि जहां हमें विचार से काम लेना चाहिए, वहां हम भावुक हो जाते हैं और जहां भावुकता की आवश्यकता है, वहां विचारों को अपनाते हैं।

—जान कालिंस

विचार पुष्पों के समान हैं और सोचना उनको सुन्दर माला में गुम्फित करने के समान है। —स्वेटशीन

त्रुटि तो प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है, किन्तु उसपर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं। —सिसेरो

बिना चिन्तन का अध्ययन तो परिश्रम का व्यर्थ जाना है।

—कन्फ्यूशियस

महान विचार जब कर्म में परिणत हो जाते हैं तो महान कार्य बन जाते हैं। —हैज़लिट

जो आहार मस्तिष्क को मिलता है उसीके आधार पर वह विकसित होता है। —जे० जी० हालण्ड

जैसाकि वह अपने हृदय में विचारता है, वैसा ही वह है भी।

—बाइबल

संसार में न कुछ भला है न बुरा। केवल हमारे विचार ही उसे भला-बुरा बना देते हैं। —शेक्सपियर

जो व्यक्ति उच्च विचारों की सुखद संगति में रहते हैं, वे कभी भी एकाकी नहीं हो सकते। —फिलिप सिडनी

सारे महान विचार हृदय से ही उत्पन्न होते हैं।

—बावे नार्गोज

भौतिक संसार केवल मस्तिष्क में निवास करता है।

—जोनाथन एडवर्ड

विचारों को वीर और साहसियों को भुजाओं और मस्तिष्क द्वारा कार्य में परिणत होना चाहिए, अन्यथा वे स्वप्न-मात्र रह

जाएंगे। —इमर्सन

वे केवल विचारों की तरल धाराएं हैं जो मनुष्यों और संसार को चलाती हैं। —वैण्डेल फिलिप्स

विश्वास (आस्था)

एक मनुष्य को उससे अधिक विश्वास नहीं करने चाहिए जितने वह निभा सके। —एलिस

आस्था कहते हैं उस वस्तु में विश्वास करने को जिसे हम देख नहीं सकते, और इसका पुरस्कार होता है उस वस्तु का दर्शन जिसमें हम विश्वास करते हैं। —सन्त आगस्तीन

हम विश्वास के आधार पर चलते हैं, दृष्टि के आधार पर नहीं। —बाइबल

जो कुछ मैंने देखा है, वह मुझे यह शिक्षा देता है कि जो कुछ मैंने नहीं देखा, उसके लिए विश्व के स्रष्टा पर विश्वास करूं।

—इमर्सन

प्रथम हम विश्वास करें कि न्याय ही शक्ति का आवास है, और फिर इस विश्वास के आधार पर ही अन्त तक अपने कर्तव्य को समझकर चलते चलें। —लिंकन

मैंने एक भयानक संग्राम किया है, मैंने अपनी धारणा को पराजित कर दिया और विश्वास को सुरक्षित रखा है। —बाइबल

विश्वास ही जीवन की प्रेरक शक्ति है। —टालस्टाय

जाके मन विश्वास है, सदा गुरू है संग।
कोटि काल झकझोरि ही, तऊ न होय चित भंग।।

—कबीर

विजय

कई युद्ध ऐसे भी हैं जिनमें हारना ही विजय है। —म० गांधी

प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण ही एक महान

विजय है। —फेबर

विजय कितनी सुन्दर है, किन्तु कितनी मूल्यवान भी !

—बाउफ्लर्स

विजेताओं का ही विनाश होता है। —अनाम

जो शक्ति के बल पर विजय प्राप्त करता है वह अपने शत्रु पर अपूर्ण विजय ही प्राप्त कर पाता है। —मिल्टन

कतिपय पराजय ऐसी भी होती हैं जो विजय से अधिक महत्त्व की होती हैं। —मानटेन

एक महान पराजय को छोड़कर महान विजय के समान भयानक संसार में कुछ भी नहीं है। —एडिंगटन के विषय में

विश्राम

वह विश्राम क्या है ?—आलस्य-भरी मदिरा का प्याला है। उस विश्राम में अपने पूर्वसंचित समय के मूल्य को वे खो बैठते हैं। उस विश्राम में उन्हें फिर वर्तमान और भविष्य का धुंधला प्रकाश भी नहीं दीखता। —स्वेट मार्डेन

समय पर ठीक तौर से काम न करने की आदत का ख्याल रखो। जो कुछ करना हो शीघ्र कर डालो, और काम कर लेने के बाद आराम करो, पहले आराम करने की चेष्टा मत करो।

—स्वेट मार्डेन

श्रम का अन्त ही विश्राम है। —अरस्तू

जो विश्राम प्राप्त कर सकता है, वह बड़े-बड़े नगरों के विजेता से कहीं महान है। —फ्रैंकलिन

जितने भी श्रम करने वाले हों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। —बाइबल

वीरता

मारने में वीरता नहीं पशुता है, परन्तु जिसमें स्वयं मारने

की शक्ति है, वही वीर है। त्याग का आदर्श महान है, और वही संसार में कुछ कर सकता है जिसमें त्याग की मात्रा अधिक हो।

—अनाम

अपने संपूर्ण देश की शुभकामनाओं की शीतल छाया में वीर कितने विश्राम से शयन करते हैं ! —कोलिंस

वीरता एक सस्ता और अशिष्ट गुण है, जिसके सर्वाधिक उदाहरण निकृष्ट कोटि के अभ्यासों में मिलते हैं। —चैट फील्ड

वास्तविक वीरता तो वह है कि जो कुछ कोई संपूर्ण विश्व को दिखाकर कर सकता है, वही बिना किसीको दर्शाए कर डाले।

—ला रोश फूको

भौतिक वीरता एक पाशविक प्रवृत्ति है, नैतिक साहस उससे कहीं अधिक सत्य, साहस और वीरता का द्योतक है।

—वैण्डेल फिलिप

वाद-विवाद

एक सुन्दर मुख से प्रस्तुत विवाद भी सुन्दर लगते हैं।

—एडीसन

विवाद अनेकों कर सकते हैं, किन्तु वार्तालाप अनेकों नहीं कर सकते। —एलकॉट

उपालम्भ का तीख़ापन कोई विवाद नहीं है। —र्‌यूफस कोएट

विरोधियों के सम्मुख विवाद करने को मैं बाध्य हूं, किन्तु उन्हें समझाने को नहीं। —डिज़राइली

तीव्र और कटु सत्य एक निर्बल कारण के द्योतक हैं।

—विक्टर ह्यू गो

अविनय कोई तर्क नहीं है। —इञ्जरसोल

भोजन के समय कभी विवाद मत करो, क्योंकि जो बिलकुल भूखा नहीं होता उसीके विवाद सफल होते हैं। —व्हैटले

जब व्यक्ति मुझसे सहमत हो जाते हैं तो मैं सदा यही विचारता हूं कि मैं गलती पर हूं। —वाइल्ड

व्यवहार

अपने प्रति दूसरों के जिस व्यवहार को तुम पसन्द नहीं करते, वैसा व्यवहार स्वयं भी दूसरों के प्रति मत करो। —कन्फ्यूशियस

व्यवहार वह दर्पण है जिसमें प्रत्येक का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। —गेटे

जो मिट्टी से भी सोना बनाते हैं वही व्यवहारकुशल हैं।
—डिज़राइली

व्यापार

मूल्य तो प्रत्येक व्यक्ति घटा सकता है, किन्तु सुन्दर वस्तु उत्पन्न करने के लिए मस्तिष्क की आवश्यकता होती है।—पी० डी० अरमर

व्यापार में धर्म और धर्म में व्यापार होना चाहिए। जो व्यक्ति अपने धार्मिक जीवन को व्यापार का रूप नहीं देता उसका धार्मिक जीवन शक्तिहीन होता है और जो अपने व्यापारिक जीवन को धार्मिक नहीं बना सकता उसका व्यापारिक जीवन चरित्रहीन हो जाता है। —बेबकॉक

व्यापार तो तेल की भांति है। यह व्यापार को छोड़कर और किसी भी वस्तु से नहीं मिल सकता। —जे० ग्राहम

जो व्यापार सार्वजनिक व्यापार है वह किसीका भी व्यापार नहीं है। —आइज़क वाल्टन

व्यापारी आदमी से केवल व्यापार के समय अपना व्यापार सुलझाने के लिए मिलो और उसे अपना व्यापार करने का अवकाश देकर अपना व्यापार करने चले जाओ। —वेलिंगटन

धन का प्रसन्नता-विलासोपयोग रोकने का मार्ग चालक को रोकना है, न कि गाड़ी को रोक देना। —वुडरो विल्सन

यह आधुनिक व्यापार का छल नहीं है जिससे हम भयभीत होते हैं, अपितु यह तो ईमानदार आदमी की अनभिज्ञता है कि वह क्या कर रहा है। —डी० यंग

वृद्धावस्था

जैसे मैं वृद्धावस्था के कुछ गुणों को अपने अन्दर समाविष्ट रखनेवाले युवक को चाहता हूं, उतनी ही प्रसन्नता मुझे युवाकाल के गुणों से युक्त वृद्ध को देखकर भी होती है, जो इस नियम का पालन करता है, शरीर से भले ही वृद्ध हो जाए, किन्तु मस्तिष्क से कभी वृद्ध नहीं हो सकता। —सिसेरो

वृद्ध के सीखने का समय सदैव रहता है। —एशाइलस

यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चात्ताप। —डिज़राइली

वृद्ध कैसे होते हैं, यह जानना एक बुद्धिमत्ता का कार्य है और जीवन-यापन की कला एक क्लिष्टतम पाठ है। —एमिएल

बीस वर्ष की अवस्था में हमारी अभिलाषा प्रधान होती है, तीस की अवस्था में बुद्धि और चालीस में निर्णय प्रधान होता है। —फ्रैंकलिन

यदि वृद्धावस्था की झुर्रियां पड़ती ही हैं तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो।

—जेम्स गारफील्ड

जीवन के प्रथम चालीस वर्ष पाठ्य हैं और द्वितीय तीस वर्ष इसपर व्याख्या। —शोपेनहावर

शब्द (वाणी)

सुन्दर वर्णयुक्त किन्तु गन्धहीन पुष्प के समान ही उसके वचन भी हैं जो उसके अनुसार कार्य नहीं करता। —बुद्ध

शब्द मानव-समाज द्वारा प्रयोगों में लाया जाने वाला सर्वोत्तम रसायन है। —किपलिंग

संसार को दुःखमय बनानेवाली अधिकांश दुष्टताएं शब्दों से ही उत्पन्न होती हैं। —बर्क

शब्द पत्रों के समान हैं। जहां वे बहुतायत से रहते हैं, वहां

फलयुक्त ज्ञान-रूपी बातें कठिनाई से दिखलाई पड़ती हैं। —पोप

अलादीन के खज़ाने की भांति और भी कई खज़ाने हैं, जो केवल शब्दों की कुंजी द्वारा खुल सकते हैं। —वेन डाइक

ईश्वर ने नक्षत्रों, मेघमालाओं और पक्षियों द्वारा सौंदर्य का अपूर्व ताना तान दिया है, किन्तु शब्दों के समान सुन्दर कोई वस्तु नहीं बनाई। —ऐना हैप्सटेन

प्रेम के शब्द चाहे कितने ही विलम्ब से और किसी प्रकार भी व्यक्त किए जाएं, सदैव सर्वश्रेष्ठ होते हैं। —जोना देली

एक बार निकले हुए शब्द कभी वापस नहीं आ सकते।

—डिलसन

अपने शब्दों को अल्पतम रखो। —बाइबल

हमारे शब्दों के पंख होते हैं, फिर भी जहां हम चाहते हैं वहां उड़कर नहीं जा सकते। —जार्ज इलियट

न्यायसंगत शब्दों में कितनी शक्ति होती है! —बाइबल

मैं कोष-रचना में इतना लीन नहीं हूं जो यह विस्मृत कर बैठूं कि शब्द पृथ्वी की पुत्रियां हैं और कार्य स्वर्ग के पुत्र हैं।

—सेमुएल जानसन

मेरे शब्द ऊपर उड़ जाते हैं किन्तु मेरे विचार पृथ्वी पर ही रह जाते हैं। शब्द बिना विचारों के कभी स्वर्ग नहीं जा सकते।

—शेक्सपियर

वाणी की सार्थकता इसीमें है कि वह आकाश में सीढ़ी बांधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ा दे जहां से वाणी का उद्गम हुआ है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

शरीर

एक स्वस्थ शरीर आत्मा के लिए अतिथिशाला के समान है, और अस्वस्थ शरीर बन्दीगृह के समान। —बेकन

तुम्हारा शरीर पवित्रात्मा का मन्दिर है। —बाइबल

एक मनुष्य के लिए अपने शरीर की रचना, उसके अंगों और

उनके कार्यों से अधिक संतोषजनक कोई ज्ञान नहीं हो सकता।

—जेफरसन

जिस प्रकार घोंघा अपने खोल से बद्ध है, उसी प्रकार हम भी अपने शरीर से बद्ध हैं। —प्लैटो

यदि कोई पवित्र वस्तु है, तो वह है मनुष्य का शरीर।

—व्हिटमैन

शहीद

शहीदों के रक्तबिन्दु ही उपासनाओं की आधारशिला होते हैं। —लार्ड मेकाले

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

—अनाम

शान्ति

अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा; अगर तुम्हारा आचरण सुन्दर है तो तुम्हारे परिवार में शांति रहेगी, यदि तुम्हारे परिवार में शांति रहेगी तो राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी और यदि राष्ट्र में सुव्यवस्था है तो संपूर्ण विश्व में शान्ति और सुख का साम्राज्य होगा। —चीनी लोकोक्ति

ऊंची कीमत पर तो शान्ति भी खरीदी जा सकती है।

—फ्रैंकलिन

शांति की विजय भी युद्ध की विजयों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। —मिल्टन

यदि सम्मान के साथ शान्ति नहीं रह सकती तो वह शान्ति नहीं कहला सकती। —लार्ड रसेल

युद्ध को प्रस्तुत रहना ही शान्ति-स्थापना का सर्वोपयुक्त साधन है। —वाशिंगटन

शिशु और शैशव

विश्वास और निर्दोषता शिशु के अतिरिक्त और किसी में नहीं पाये जाते। —दांते

शिशु भी बड़ों के समान ही होते हैं, उन्हें भी दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाना नहीं आता। —डाडेट

उस व्यक्ति को दुष्ट मत कहो जो असंख्य त्रासों को सहन करते हुए भी किसी शिशु से प्रेम करता है। —साउदी

सबसे छोटे बच्चे ईश्वर के सर्वाधिक निकट होते हैं, जिस प्रकार की सबसे छोटे ग्रह सूर्य के निकट होते हैं। —रिश्टर

जिस प्रकार प्रातःकाल दिन का द्योतक होता है, उसी प्रकार ही शैशव भी मनुष्य का परिचायक होता है। —मिल्टन

बच्चों का केवल घृणापात्र होने की अपेक्षा वृद्धों के समाज से तिरस्कृत होकर निकाला जाना श्रेयस्कर है।

—आर० एच० डाना

शिशुओं के केवल सौंदर्य और भोलेपन को निरखिए, उनकी सुनिए मत। —अंग्रेजी लोकोक्ति

अपने बालक को मौन रहना सिखाइए और वह अत्यन्त शीघ्रता से बोलना सीख लेगा। —फ्रैंकलिन

शिशुओं को मेरे निकट आने दो, रोको मत, क्योंकि ईश्वर का साम्राज्य शिशुओं से निर्मित है। —मार्क

एक बुद्धिमान पुत्र एक प्रसन्न पिता बनता है। —बाइबल

जंगली बछेड़े ही सुन्दर घोड़े बनते हैं। —प्लूटार्क

शिशु को वही शिक्षा दो जिस मार्ग पर उसे चलना चाहिए, और वृद्ध हो जाने पर भी वह इसे भूलेगा नहीं। —बाइबल

अच्छे बच्चों के निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उपाय है उन्हें प्रसन्न रखना। —वाइल्ड

शिशु मनुष्य का पिता है। —वर्ड्सवर्थ

धारा प्रेम-सागर की लाई शिशु को है यहां,
विधि ने बनाया क्या खिलौना एक न्यारा है।

न्यारा सब जग से है उसका अनूप रूप,
विकसित कंज के समान अति प्यारा है।।
प्यारा वह मंजुता की मूर्ति-सा किसे है नहीं,
व्योम से गिरा हुआ क्या कोई लघु तारा है?
तारा लोक-लोचन का सबका दुलारा मानो,
माता के स्नेह ने सगुण रूप धारा है।।

—अनाम

शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य मानव-ज्ञान की वृद्धि करना नहीं है। उसका उद्देश्य मस्तिष्क को विकसित करना है, भरना नहीं। —डाडेट

जो मनुष्य अपने कर्तव्य को अच्छी तरह करने की शिक्षा पा चुका है, वह मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाले सभी कामों को भली भांति करेगा। —रूसो

वह शिक्षा नहीं है जो नारी को गृहस्थी के योग्य नहीं रहने देती, वह सम्पदा है। —कैथरीन गलाघर

मानव-मस्तिष्क की शिक्षा शैशव के पालने से ही प्रारम्भ होती है। —टी० कोगन

पालने से लेकर कब्र तक ज्ञान प्राप्त करते रहो। —कुरान

प्रत्येक व्यक्ति को दो शिक्षाएं मिलती हैं—प्रथम वह जो वह दूसरों से प्राप्त करता है, दूसरी वह जो वह स्वयं को देता है।—गिबन

महाविद्यालय की शिक्षा व्यक्ति को इसका बोध कराती है कि दूसरे कितने अल्पज्ञ हैं। —हैलीबर्टन

बहुधा देखा गया है कि वास्तविक शिक्षा तभी प्रारंभ होती है जब व्यक्ति विद्यालय या विश्वविद्यालय से निकलते हैं।

—सन्त निहालसिंह

शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधारस्तम्भ हैं—अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना।

—कैथराल

शिक्षित व्यक्ति वह आलसी है जो कोरे अध्ययन द्वारा समय का नाश करता है। —बर्नार्ड शॉ

शिक्षा माता के चरणों से ही आरम्भ होती है, और शैशव की बातों में शिशुओं से कहा प्रत्येक शब्द उनके चरित्र का निर्माण करता है। —बैल

एक प्रजातन्त्र को हम अपने तरुणों को शिक्षित करने से बढ़कर और कौन-सा उपहार दे सकते हैं। —सिसेरो

जो चीजें हमें विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं वे ही शिक्षा नहीं हैं, अपितु वे शिक्षा का साधन-मात्र हैं। —इमर्सन

यदि मनुष्य अपना धन अपने मस्तिष्क में भर ले तो कोई उससे छीन नहीं सकता। —फ्रैंकलिन

शिक्षा एक प्रशंसनीय वस्तु है, किन्तु समय-समय पर इसका भी अनुसरण करना चाहिए कि जो जानने योग्य वस्तुएं हैं वे कभी सिखाई नहीं जा सकतीं। —वाइल्ड

शिष्टाचार

शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य संसार में अपनी उन्नति कर सकता है। —अनाम

तुम्हें क्या चाहिए ? जो कुछ भी चाहिए, उसे मुस्कराहट के बल से प्राप्त करो, न कि तलवार से। —शेक्सपियर

शिष्टाचार शारीरिक सुन्दरता की कमी को पूर्ण कर देता है। वही व्यक्ति सर्वाधिक सुन्दर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं। —स्वेट मार्डेन

श्रम और श्रमिक

स्वच्छता और श्रम मनुष्य के सर्वोत्तम वैद्य हैं। —रोमसिन

स्वर्ग का शृंगारपूर्ण विश्राम अवश्य है, किन्तु पृथ्वी का वर-

दान तो श्रम ही है। —हेनरी वेनडाइक

ज़ंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस-घिसकर खत्म होना कहीं अच्छा है। —बिशप कम्बरलैंड

कोई भी व्यक्ति जब किसी वस्तु के लिए श्रम नहीं करेगा, वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो सकती। —गारफील्ड

जिस श्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिए अमृततुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है। —शेक्सपियर

यदि तुम अपवित्रता और संसार-भर के पापों से बचना चाहो तो अपना कार्य खूब परिश्रम और चुस्ती से करो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ करने का ही क्यों न हो। —थोरो

अरे आलसी, पिपीलिका के पास जा, उसके श्रम को देख और बुद्धिमान बन। —बाइबल

श्रमिक ही समाज के उद्धारक हैं, और जाति के पुनर्निर्माता।

—इयूजिनी वी० देव

मनुष्य का श्रम कोई सौदा या वाणिज्य की वस्तु नहीं है।

—क्लेयन ऐण्टी ट्रस्ट एक्ट

श्रम प्रत्येक वस्तु पर विजय प्राप्त कर लेता है। —होमर

यदि हम सही तरीके से विचार करें कि वस्तुओं में कितना अंश प्राकृतिक है और कितना श्रमोत्पादित, तो हमें ज्ञात होगा कि १०० में से ९९ अंश श्रम के ही परिणाम हैं। —जॉन लॉक

श्रम और पूंजी

पूंजी श्रम का परिणाम हैं और श्रम ही इसे उन्नति के लिए उपयोग में लाता है। श्रम ही सक्रिय और मूल शक्ति है अतः यही पूंजी का उपयोगकर्ता भी है। —हेनरी जार्ज

श्रम पूंजी से पहले आता है और उससे स्वतन्त्र है। पूंजी तो केवल श्रम का फल है। यदि श्रम का अस्तित्व न होता तो पूंजी का अस्तित्व भी न होता। श्रम पूंजी से बढ़कर है और उससे अधिक ध्यान देने योग्य भी। —लिंकन

पूंजी तो मृत श्रम है, जो जीवित श्रम का शोषण करते हुए पिशाच की भांति जीवित रहती है और यह जितनी अधिक जीवित रहती है उतना ही अधिक शोषण करती है। —कार्ल मार्क्स

श्रम और पूंजी अन्योन्याश्रित हैं। पूंजी श्रम के बिना नहीं पनप सकती और श्रम का पूंजी के अभाव में कोई अस्तित्व नहीं।
—पोप लियो १३वां

समय

हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम समय किस प्रकार व्यतीत कर रहे हैं, क्योंकि हम अपने भाग्य के निर्माण में अपनी सहायता कर रहे हैं। —राबर्ट हीप

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है? तो समय को व्यर्थ मत गंवाओ, क्योंकि जीवन इसीसे बना है। —फ्रैंकलिन

मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझको नष्ट कर रहा है। —शेक्सपियर

दिन मित्रों के वेश में हमारे सामने आते हैं और प्रकृति की अमूल्य भेंट लाते हैं। अगर हम उनका उपयोग न करें तो वे चुपचाप लौट जाएंगे। —स्वेट मार्डेन

ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है। और दूसरा क्षण देने से पूर्व उस क्षण को ले लेता है। स्वेट मार्डेन

समय ही धन है। —बुल्वर लिटन

मैं तुम्हें यही शिक्षा दूंगा कि तुम केवल मिनटों का ध्यान रखो, घण्टे स्वयं अपना ध्यान रखेंगे। —चैस्टरफील्ड

समय को नष्ट मत करो, क्योंकि यही जीवन का निर्माण-अवयव है। —फ्रैंकलिन

कभी न करने की अपेक्षा विलम्ब से करना श्रेयस्कर है।
—लिवी

समय की कसौटी पर ही मनुष्य की आत्मा की परीक्षा होती है। —थामस पेन

समय ही सबसे योग्य शिक्षक है। —पैरीक्लीज़

बीते हुए सहस्रों वर्ष भी केवल कल के समान रह जाते हैं।

—बाइबल

एक युग विशाल नगरों का निर्माण करता है, एक क्षण उसका विध्वंस कर देता है। —सेनेका

सत्य

सत्य एक विशाल वृक्ष है; उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुए नज़र आते हैं; उसका अन्त ही नहीं होता। —म० गांधी

सत्य से स्वाधीनता मिलती है, केवल यही बात ठीक नहीं है। उसके साथ-साथ यह भी ठीक है कि स्वाधीनता हमें सत्य प्रदान करती है। —रवीन्द्र

सत्य को पहचानने और उसका पालन करने की शक्ति शास्त्रीय योग्यता द्वारा संभव नहीं। —पैरासेलसस

सत्य की खोज एक परम सौभाग्य है, किन्तु इसका पूरा मूल्य तभी आंका जा सकता है जब हम सिद्ध कर सकें कि जो कुछ हमें ज्ञात है वह सत्य है। —बर्ज़ेलियस

सत्य और दया को मत त्याग। उन्हें अपनी ग्रीवा पर मालावत् पिरो ले, अपने हृदय-पटल पर अंकित कर ले। —बाइबल

सत्य का अपना ही नियम है और अपनी ही प्रसन्नता।

—रवीन्द्र

सत्य एक ऐसी वस्तु है जिसका कोई विश्वास नहीं करेगा।

—बर्नार्ड शॉ

सभी व्यक्ति सत्य, पवित्रता व स्वार्थहीनता की उपासना करते हैं, केवल इसी कारण उन्हें इसका तनिक भी अनुभव नहीं। काश, वे इन्हें जान-भर पाते! —बर्नार्ड शॉ

सत्य को यदि दबा दिया जाए तो वह स्वतः प्रकट हो उठेगा।

—ब्रायण्ट

सृष्टि के आदि से ही सत्य चिरसुन्दर रहा है, आततायियों का वह शत्रु अवश्य है, परन्तु मानव का मित्र ही है। —कैम्पबैल

समय मूल्यवान अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है। —डिजराइली

सत्य ही महान है और परम शक्तिशाली ! —बाइबल

और जब तुम सत्य को पहचान सकोगे तो सत्य तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा। —बाइबल

विश्व के सम्पूर्ण महान सत्य भ्रम के रूप में उत्पन्न हुए थे। —बर्नार्ड शॉ

सत्य बोलते समय भी दो व्यक्तियों की आवश्यकता है। एक तो वह जो सत्य कहे और दूसरा वह जो सुनकर विश्वास कर सके। —थोरो

सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। —संस्कृत लोकोक्ति

सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। —संस्कृत लोकोक्ति

सफलता

जिस कार्य में तुम्हारी प्रवृत्ति हो, उसीमें लगे रहो। अपनी बुद्धि के अनुकल मार्ग को मत छोड़ो। तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी। —ज्ञान एञ्जिलो

तुम्हारे स्वागत के लिए कहीं दूर पर कृत्रिम बादलों की ओट में सफलता की देवी खड़ी है। केवल दृढ़ता से उस ओर बढ़ने-भर की आवश्यकता है। —स्वेट मार्डेन

हमारी सफलता पूर्णतः हमारी नियन्त्रण-योग्यता तथा व्यक्तियों को अनुशासित करने की शक्ति पर निर्भर करती है। —म० गांधी

अनवरत सफलता हमें विश्व का एक ही रूप दिखाती है जबकि आपत्तियां चित्र के दूसरे रूप को भी स्पष्ट कर देती हैं। —कोल्टन

सफल मस्तिष्क सदैव बर्मे के समान एक बिन्दु पर केन्द्रित होकर ही कार्य करते हैं। —बोवी

तुम्हें जीवन में सबसे बड़ी आवश्यकता अभिज्ञता और विश्वास की है—और सफलता निश्चित है। —एम० एल० क्लीमेंस

सफलता सबसे मधुमती उनको लगती है जो कभी सफल नहीं होते। —एमिली डिकिंसन

संसार में सफलता प्राप्त करने और उन्नत होने के केवल दो मार्ग हैं। एक तो स्वयं अपने श्रम द्वारा और दूसरा दूसरों की मूर्खता से लाभ उठाकर। —ला ब्रुयेर

मैंने सदैव यही देखा है कि इस संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को वस्तुतः विद्वान होते हुए भी मूर्ख ही दिखाई पड़ना चाहिए। —माण्टेस्की

या तो आरम्भ ही मत करो, और यदि आरम्भ कर चुके हो तो पूर्ण करके ही हटो। —ओविद

ढालू पर्वतों पर आरोहण के लिए पहले धीमी गति की आवश्यकता है। —शेक्सपियर

सतत साधना के महापरिणाम का नाम ही सफलता है।

सम्पदा

सम्पदा तो बुरे सेवकों के समान है जो सदैव चलते रहते हैं और एक स्वामी के साथ अधिक नहीं ठहरते। —बर्क

यदि तुम धनी हो तो धन बचाने का भी उतना ही ध्यान रखो जितना धन प्राप्त करने का। —फ्रैंकलिन

समाज की आदर्श अवस्था वह नहीं है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्पत्ति का समान भाग मिलता है, अपितु आदर्श दशा वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति उसी अनुपात में धन का भागी होता है जिस अनुपात में वह सामान्य कोष को भरता है। —हेनरी जार्ज

धन या तो अपने स्वामी की सेवा करता है, या उसपर शासन। —होरेस

राष्ट्रों की सम्पत्ति तो मनुष्य है—रेशम, कपास या स्वर्ण नहीं। —रिचार्ड हॉवे

जीवन अत्यन्त संक्षिप्त है, अतः जितनी जल्दी अपने धन का उपभोग कर सकते हैं, उतना ही अच्छा है। —सैमुएल जॉनसन

ईश्वर संपत्ति उन्हीं मूर्खों को प्रदान करता है जिन्हें वह इसके अतिरिक्त और कोई अच्छी वस्तु प्रदान नहीं करता। —लूथर

एक ऊंट का सुई की नोक में होकर निकल जाना सरल है, किन्तु धनी व्यक्ति का स्वर्ग के साम्राज्य तक पहुंचना सरल नहीं।

—बाइबल

लोभ की सीमाओं से परे मैं धनी हूं। —एडवर्ड मूर

सारी सम्पत्ति श्रम का उत्पादन-मात्र है। —लोक

जो धनी बनने की शीघ्रता में है, वह कभी निर्दोष नहीं हो सकता। —बाइबल

कोई भला आदमी कभी अचानक ही धनी नहीं बन गया।

—साइरस

सद्गुण

धन से सद्गुण नहीं उत्पन्न होते, अपितु सद्गुणों से ही धन एवं अन्यान्य इच्छित वस्तुएं प्राप्त होती हैं। —कन्फ्यूशियस

व्यसनों के प्रति विरोध का नाम ही सद्गुण नहीं है, अपितु व्यसनों की ओर प्रवृत्ति का न जाना ही सद्गुण है।

—बर्नार्ड शॉ

किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण उसके सद्गुण का एक अंश होता है। —अलकॉट

अपने बच्चों को केवल सद्गुण की शिक्षा दीजिए। सद्गुण अकेला ही उन्हें सुखी बना देगा, स्वर्ण नहीं। —बीथोवेन

सम्मान ही सद्गुण का पुरस्कार है। —सिसेरो

मेरा विश्वास है कि सद्गुण चिथड़ों में भी उतना ही चमकता है जितना भव्य वेशभूषा में। —डिकेन्स

बहुत-से व्यक्ति सद्गुणों की प्रशंसा करते हैं, किन्तु उनका पालन नहीं। —मिल्टन

हमारे सद्गुण प्रायः वेश बदले हुए हमारे दुर्व्यसन ही होते हैं। —ला रोश फूको

सद्गुण स्वास्थ्य है और दुर्व्यसन रोग। —पेट्रार्क

सहानुभूति

एक गाड़ी में जुते हुए भार ढोनेवाले दो घोड़ों की भांति सहा-अनुभूति की गाड़ी में भी दो हृदय परस्पर जुटे रहते हैं।

—सी० एन० पार्क हिटर्स

दीवार के छेद से एक छोटा-सा नामहीन फूल खिल रहा था। फुलवारी के सभी फूल उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। प्रातः सूर्यदेव ने उठकर उससे पूछा—कहो, कुशल से तो हो? —रवीन्द्र

डूबनेवाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ, बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयत्न करो।

—आचार्य विनोबा

जो आनन्द लेते हैं उनके साथ आनन्द के भागी बनो। किन्तु जो अश्रुप्रवाह करते हैं उनके साथ रुदन में भाग बंटाओ।

—बाइबल

संगति

जब फाख्ता का कौओं से संयोग होता है तो उसके पर श्वेत रह जाते हैं; किन्तु हृदय काला हो जाता है।

—जर्मन लोकोक्ति

यदि तुम सदैव उनके साथ रहोगे जो लंगड़े हैं तो तुम स्वयं भी लंगड़ाना सीख जाओगे। —लैटिन लोकोक्ति

जो बुद्धिमानों की संगति करता है, वह बुद्धिमान ही होगा।

—लोकोक्ति

मुझे व्यक्ति की संगति बता दो और मैं उसका चरित्र बता दूंगा। —सर्वेण्टिस

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि मद समुझहिं तब ताहि॥
—रहीम

सन्तोष

सन्तोष तो प्रयासों में है, उपलब्धियों में नहीं। —म० गांधी

सबसे अधिक प्राप्ति उसीको होती है जो सन्तुष्ट होता है।
—शेक्सपियर

बिना किसी दूसरे से तुलना किए हुए ही अपने जीवन का उपभोग करो, यही परम संतोष है। —कण्डोरसेट

पूर्ण संतोष का उपभोग मनुष्य का धर्म नहीं है। —साउदी

गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतनधन खान।
जब आवै सन्तोष धन, सब धन धूरि समान॥ —कबीर

सभ्यता

अपने देश और युग की सभ्यता को नेता सदा उसके विकास का पूर्ण रूप कहता है, विद्वान विचारक उसे आरम्भिक रूप ही मानते हैं। —अनाम

सभ्यता का पर्याप्त मापदंड उस समाज पर स्त्रियों का प्रभाव है। —इमर्सन

हम समझते हैं कि हमारी सभ्यता अपने सर्वोच्च शिखर पर है, किन्तु वह केवल अपने शैशव में ही है। —इमर्सन

सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दर्शाता है। —म० गांधी

सभ्यता और धर्म की प्राचीनता की दृष्टि से कोई राष्ट्र आर्य-सभ्यता की समता नहीं कर सकता। —हे-ऐन थांग

यदि तुम मनुष्य को सभ्य बनाना चाहते हो तो इसका प्रारम्भ उसकी दादी से करो। —विक्टर ह्यूगो

सम्मति

स्वयं तुमसे बढ़कर सम्मति तुम्हें और कोई नहीं दे सकता।

—अनाम

भीड़ के स्थल पर कभी सलाह (सम्मति) मत दो।

—अरबी लोकोक्ति

जब तक पूछा न जाए तब तक सलाह (सम्मति) मत दो।

—जर्मन लोकोक्ति

जब कभी भी सलाह (सम्मति) दो तो सदैव संक्षेप में दो।

—होरेस

अच्छी सलाह अमूल्य होती है। —मेज़िनी

न तो किसीको युद्ध में जाने की सलाह दो, और न विवाह की। —स्पेनी लोकोक्ति

सलाह तो अनेकों प्राप्त करते हैं, किन्तु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है। —साइरस

संगठन

जिसमें फूट हो गई है और पक्ष-भेद हो गए हैं, ऐसा समाज किस काम का? आत्मप्रतिष्ठा और आत्मा की एकता की मूर्ति का समाज चाहिए। अलग रहकर जितना काम होता है, उससे सौ गुना संघ-शक्ति से होता है। —योगी अरविन्द

सब एक के लिए और एक सबके लिए। —अलेक्जेंडर ड्यूमा

हमें संगठित होकर प्राण देने को प्रस्तुत होना चाहिए, अन्यथा हम अलग-अलग तो प्राण दे ही बैठेंगे। —फ्रैंकलिन

देखो, बन्धुत्व की भावना से सम्मिलित होकर, एक सूत्र में बंधकर रहने में कितना आनन्द है! —बाइबल

संगठन द्वारा छोटे-छोटे राज्य भी उन्नत हो सकते हैं किन्तु विभेद उत्पन्न होने से बड़े राज्य भी विनष्ट हो जाते हैं। —सालस्ट

संगठित होकर हम खड़े रह सकते हैं, विभाजित होते ही गिर

पड़ेंगे । —कैण्टकी का उद्देश्य

जिस संगठन में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य, सब सदस्यों के देखते हुए मारा जाता है, वहां सब मृतक के समान हैं, मानो उनमें कोई भी नहीं जीता । —महर्षि दयानन्द

संक्षेप

चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, संक्षेप में कहना हमेशा ही अच्छा है । —बटलर

अपने भावों को संक्षेप में व्यक्त करो, अल्प शब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करो । —बाइबल

तुम जितना अधिक बोलोगे, लोग उतना ही कम याद रखते हैं । जितना ही तुम संक्षेप में कहोगे, उतना ही तुम्हें लाभ होगा । —फीनेलन

अल्प शब्दों की प्रार्थना सुन्दरतम होगी । —लूथर

किसी राष्ट्र की पूर्ण विद्वत्ता उसकी लोकोक्तियों में प्रदर्शित होती है, जो अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित होती हैं । —विलियम पेन

संक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमत्ता की आत्मा है । —शेक्सपियर

संयम

जो अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है । —बाइबल

दुराचारिणी नारी के सौंदर्य पर अपने हृदय को मुग्ध मत कर और न ही स्वयं को उसकी चल चितवन का शिकार बना ।—बाइबल

स्वतन्त्रता, स्वाधीनता

उस स्वाधीनता को तिलांजलि दे दो जो पाप की अनुचरी

हो। —रामकृष्ण परमहंस

जो व्यक्ति अपना स्वामी (इन्द्रियजित) नहीं वह कभी स्वतंत्र नहीं। —इपिक्टेटस

स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है। —विवेकानन्द

जिसे सत्य ने स्वाधीन बना दिया केवल वही स्वाधीन है, शेष सभी दास हैं। —कपूर

मानव के लिए क्रूरतम अभिशाप है—पराधीन रहना।

—सुभाषचन्द्र बोस

वासना की भूमि पर कभी भी स्वतन्त्रता अंकुरित नहीं होती, स्वतन्त्रता ज्ञान के बीच उदित होती है। —टी० एल० वास्वानी

उनसे अधिक दयनीय दासता किसीकी भी नहीं जो स्वयं इस भ्रम में रहते हैं कि वे स्वतन्त्र हैं। —गेटे

मानवता का संगीत स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर होता है।

—सुभाषचन्द्र बोस

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही मानव-समाज की मर्यादा एवं प्रसन्नता का प्रथम सोपान है। —बुल्वर लिटन

एक स्वतन्त्र देश में संतापों की अल्पता में भी अधिक क्रन्दन रहता है, किन्तु स्वेच्छाचारी शासन में संतापों का बाहुल्य रहते हुए भी क्रन्दन अत्यल्प होता है। —कारनट

तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र कर देगा।—जान

जो दूसरों को स्वतन्त्रता से वंचित रखने की चेष्टा करते हैं, वे स्वयं भी स्वतन्त्र होने के अधिकारी नहीं होते ; और ईश्वर की सृष्टि में वे अधिक दिन तक अपनी स्वतन्त्रता कायम नहीं रख सकते। —लिंकन

क्षुधित जनता को कितनी मात्रा में भी राजनैतिक स्वतन्त्रता संतुष्ट नहीं कर सकती। —लेनिन

स्वाधीनता और दासता मन के खिलवाड़ हैं। जिसका मन स्वाधीन है, वह विष्ठा का टोकरा उठाता हुआ भी राजा है।

—म० गांधी

स्वतन्त्रता केवल अनुशासन की शृंखलाओं द्वारा प्राप्त की

जा सकती है।	—म० गांधी

जो लोग आज़ादी के आराम को ज्यादा पसन्द करते हैं, स्वतन्त्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे न आराम ही पाते हैं और न आज़ाद ही रह सकते हैं।	—दादा धर्माधिकारी

स्वतन्त्रता कितनी मोहक कल्पना है! व्यक्ति सर्वस्व की बाज़ी लगाकर भी उसे साकार करने के लिए आतुर हो उठता है।

—अनाम

स्वदेश-प्रेम

जब मेरे बच्चे बड़े हों तो उन्हें समझा देना कि मुझे अपने देश से कितना प्रेम था!	—मैनोटी

भूखे पेट कोई भी देशभक्त नहीं हो सकता।

—डब्ल्यू० सी० ब्रन्न

मुझे प्रतीत होता है कि स्वदेश-प्रेम ही पर्याप्त नहीं है, अपितु मुझे किसीके प्रति घृणा न करना भी अपेक्षित है। —एडिथ केवैल

मुझे दुःख है कि मैं केवल एक ही बार जीवन को स्वदेश पर अर्पित कर सकता हूं।	—नाथन हेल

स्वदेश-प्रेम दुरात्मा की अन्तिम शरण है। —सेमुएल जॉनसन

वसुधा ही मेरा देश है, सम्पूर्ण मानव-जाति मेरी बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है।	—थामस पेन

असंख्य कीर्ति-रश्मियां, विकीर्ण दिव्य दाह सी,
सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी,
अराति सैन्य-सिन्धु में, सुबाड़वाग्नि से जलो।
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो। —प्रसाद

बलि होने की परवाह नहीं, मैं हूं, कष्टों का राज्य रहे,
मैं जीता, जीता, जीता हूं माता के हाथ स्वराज्य रहे।
—माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं मैं गुंथ अलकों में, बिंध प्यारी को ललचाऊं॥

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि ! डाला जाऊं।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं ।।
मुझे तोड़कर हे वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएं वीर अनेक ।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

नहीं जीते जी सकता देख, विश्व में झुका तुम्हारा भाल ।
वेदना-मधु का भी कर पान, आज उगलूंगा गरल कराल ।।

—दिनकर

बलि के कंपन से जो आती भटकी हुई मिठास ।
यौवन के बाजीगर करता हूं उसपर विश्वास ।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

सुनूंगी माता की आवाज,
रहूंगी मरने को तैयार,
कभी भी उस वेदी पर देव,
न होने दूंगी अत्याचार ।
न होने दूंगी अत्याचार,
चलो मैं हो जाऊं बलिदान,
मातृ-मंदिर में हुई पुकार,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान !

—सुभद्राकुमारी चौहान

स्वास्थ्य

अपने और श्रेष्ठ पत्नी के सुन्दर स्वास्थ्य की सुरक्षा स्वर्ण और मुक्ता के बराबर है। —गेटे

प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है और इसके विपरीत मलिनता ही रोग है। —हैली वर्टन

जिसके पास स्वास्थ्य है उसके पास आशा है, और जिसके पास आशा है उसके पास सब कुछ है। —अरबी लोकोक्ति

कभी दूसरों से मत कहो कि तुम बीमार हो, न कभी बीमार

ही बनो। बीमारी एक ऐसी वस्तु है जिसे पनपते ही रोकने का प्रयास करना चाहिए। —बुलवर लिटन

प्रथम महान सम्पत्ति है सुन्दर स्वास्थ्य। —इमर्सन

स्वास्थ्य परिश्रम में वास करता है, और उस तक पहुंचने का श्रम को छोड़कर अन्य कोई मार्ग नहीं। —वैण्डेल फिलिप्स

स्वर्ग

पुण्य से सुन्दर स्त्री मिलती है, स्त्री से सच्चरित्र पुत्र होते हैं, पुत्रों से दिन-दिन विमल यश का उदय होता है, और यश से यह लोक स्वर्गतुल्य हो जाता है। —'भामिनी विलास' से

स्वर्ग में दासता करने की अपेक्षा नरक में शासन करना कहीं श्रेयस्कर है। —मिल्टन

स्वर्ग का अर्थ है—ईश्वर में लीन हो जाना।

—कन्फ्यूशियस

स्वर्ग में दुष्ट सताना छोड़ देते हैं और थके हुए विश्राम करते हैं। —बाइबल

मेरे पिता के घर (स्वर्ग) में असंख्य विशाल राजप्रासाद हैं।

—बाइबल

पृथ्वी पर कोई ऐसा दुःख नहीं है स्वर्ग जिसका निवारण न कर सके। —मूर

स्वर्ग में देवदूत का कोई विशेष स्थान नहीं होता।

—बर्नाड शॉ

सावधानी

इन पांचों से सदैव सावधान रहो :

१. जिस व्यक्ति के वचन जल-प्रवाह की भांति प्रवहमान हों।
२. जिसके हृदय के कपाट अनावृत हों।

३. जो भक्त अपनी भक्ति का प्रदर्शन कान में तुलसीदल लगाकर संसार में करता फिरे।

४. जो स्त्री दीर्घ अवगुण्ठन में रहती हो।

५. जो तालाब सिवार-आवृत हो (क्योंकि उसका जल स्वास्थ्य के लिए परम हानिकारक है।) —रामकृष्ण परमहंस

बुद्धिमान व्यक्ति अपने सारे अंडे एक टोकरी में कभी नहीं रखेगा। —सर्वेण्टिस

जब तुम वस्तुएं मोल लेने जाते हो, अपने नेत्रों का उपयोग करो श्रवणों का नहीं। —चेक लोकोक्ति

जिह्वा की अपेक्षा अपने नेत्रों को अधिक तीव्र रखो।

—सर्वेण्टिस

सावधान व्यक्ति प्राय: कम ही भूलें करते हैं। —कन्फ्यूशियस

क्षुद्र नौकाओं का तट के निकट ही रहना उचित है।

—फ्रैंकलिन

सावधानी बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी बालिका है।

—विक्टर ह्यूगो

बिना देखे कभी किसी वस्तु का पान न करो, और बिना पढ़े कभी कहीं हस्ताक्षर न करो। —स्पेनिश लोकोक्ति

दूसरों के दुर्भाग्य से सावधानी सीखना ही अधिक उचित है।

—साइरस

साधना और साधक

जिस प्रकार पीतल के पात्रों को यदि नित्य स्वच्छ न किया जाए तो वे अपनी चमक खो देते हैं और जंग लग जाता है, उसी प्रकार यदि साधक नित्य साधना न करे तो उसका हृदय भी अपवित्र होने लगता है। —तोतापुरी

नौका जल में रह सकती है किन्तु जल नौका में नहीं रहना चाहिए। उसी प्रकार साधक संसार में रहे, किन्तु संसार का माया-मोह साधक के मन में न रहे। —रामकृष्ण परमहंस

मैं उन्मत्त प्रेम की लोभिन,
हृदय दिखाने आई हूं !
जो कुछ है बस यही पास है,
इसे चढ़ाने आई हूं ।
चरणों पर अर्पित है इसको,
चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो या प्यार करो।
—सुभद्राकुमारी चौहान

सादगी (सरलता)

सरलता प्रकृति का प्रथम चरण है, और कला का अंतिम ।
—बेली

महानता से बढ़कर और कोई सरलता नहीं, वस्तुतः ही सरलता महानता की पथदर्शिका है —इमर्सन

चरित्र की सरलता गंभीर चिन्तन का ही प्राकृतिक परिणाम होता है । —हैज़लिट

कृत्रिम सरलता का प्रदर्शन केवल छल है, और कुछ नहीं ।
—रोश फूको

हमारी आवश्यकताएं जितनी कम होती हैं, हम ईश्वर के उतना ही निकट होते जाते हैं । —सुकरात

साम्यवाद

प्रत्येक व्यक्ति को योग्यतानुसार और प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार । —लुई ब्लैंक

साम्यवादी समाजवादी ही है, किन्तु भयानक शीघ्रता में !
—जी० गफ

साम्यवाद के समस्त सिद्धान्तों को एक वाक्य में व्यक्त किया

जा सकता है कि समस्त व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन कर दो।

—कार्ल मार्क्स

सिद्धान्त

मनुष्य की सचाई का एकमात्र प्रमाण यह है कि अपने सिद्धान्त के लिए वह अपना सब कुछ स्वाहा कर देने को तत्पर रहे।

—लावेल

वास्तविकता के द्वारा सिद्धान्त कार्य में परिणति पा जाते हैं।

—कपूर

यदि सिद्धान्त किसी वस्तु के लिए ठीक है तो वह जीवन-भर के लिए ठीक है।

—फ्रैंकलिन

महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त लचीले होने आवश्यक हैं। —लिंकन

सुख (आनन्द)

यदि मनुष्य केवल सुखी ही होना चाहे तो उसकी इच्छा पूर्ण हो सकती है, किन्तु हम मनुष्यों की अपेक्षा सुखी होना चाहते हैं, अतः इसीमें कठिनाई उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि हम दूसरों को वास्तविकता से भी अधिक सुखी समझते हैं। —इमर्सन

यदि आप कम धन में सुख का अनुभव करना नहीं जानते तो अपार धनराशि भी आपको सुखी नहीं बना सकती। —अनाम

सुख सर्वत्र विद्यमान है। उसका स्रोत हमारे हृदयों में है।

—रस्किन

पहाड़ सरीखा ऊंचा होना मुझे सुखकर नहीं लगता। मेरी मिट्टी आसपास की भूमि पर फैल जाए, इसीमें मुझे आनन्द है।

—आचार्य विनोबा

सबसे पहले सुख स्वास्थ्य में निहित है। —विलियम कर्टिस

हम न कभी उतने सुखी होते हैं और न कभी उतने दुःखी जितना कि हम स्वयं को समझते हैं। —ला रोश फूको

उस सुख का क्या महत्त्व जो थोड़ी या बहुत वेदना के मूल्य पर नहीं खरीदा गया। —मार्गरेट ओलीफेंट

मैंने अपनी इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त करना सीखा है, उनकी पूर्ति द्वारा नहीं। —जॉन स्टुअर्ट मिल

सुख के विषय में कहते सभी हैं किन्तु जानते कम हैं।

—पी० रौलैंड

वह मूर्खों में भी भारी मूर्ख है जो मानता है कि संसार में सुख है। मुझे जो मिला दुःख की कहानी सुनाता ही मिला।

—विनोबा भावे

कर दिया मधु और सौरभ दान सारा एक दिन।
किन्तु रोता कौन है तेरे लिए दानी सुमन?
मत व्यथित हो फूल, किसको सुख दिया संसार ने?
स्वार्थमय सबको बनाया है यहां करतार ने।

—महादेवी वर्मा

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै तो दुख काहे को होय॥—कबीर
यों रहीम सुख होत है उपकारी के संग।
बांटनवारे को लगै ज्यों मेंहदी को रंग॥—रहीम

सुयश

मस्तिष्क नश्वर है, सम्पत्ति अचिरस्थायी है, जीवन अत्यन्त लघु है और यौवन क्षणभंगुर है। पृथ्वी की सारी वस्तुएं नाशवान हैं, केवल विमल यश ही अविनश्वर है और चिरस्थायी। —हितोपदेश

महानता के कार्यों का परिमल प्रवाह ही विमल यश है।

—सुकरात

यदि मृत्यु के पश्चात ही कीर्ति प्राप्त होती है तो मुझे इसके लिए कोई शीघ्रता नहीं है। —मार्शल

कीर्तिवान मनुष्यों के लिए कीर्तिनाश की अपेक्षा मृत्यु कहीं श्रेयस्कर है। —गीता

विमल यश मृत व्यक्ति के हृदय पर सुसज्जित गंधित पुष्प के समान है।

—मदर वैल

अपयश का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा सादर मृत्यु प्राप्त करना कितना सुन्दर है !

—बाबर

सुधार

लोग अपनी दशाओं को तो सुधारने और संवारने में व्यस्त रहते हैं, किन्तु स्वयं को सुधारने का प्रयास नहीं करते ; इसी कारण तो वे अटूट पाशों में वद्ध रहते हैं।

—रघुवीरसिंह 'वीर'

निन्दा से बचने का अचूक एवं शीघ्र इलाज स्वयं को सुधार लेना ही है।

—डिमास्थनीज़

दूसरों के स्वामी तो सभी बनना चाहते हैं, पर अपना कोई नहीं।

—गेटे

सुधार घर से ही प्रारम्भ होने चाहिए और वहीं तक सीमित भी।

—अनाम

बीस वर्ष की अवस्था में मनुष्य आशा और पुरुषत्व से पूर्ण होता है, वह विश्व में सुधार करना चाहता है। जब वह सत्तर वर्ष का हो चुकता है तब भी वह सुधार करना चाहता है, किन्तु अनुभव करता है कि वह नहीं कर सकता।

—एस० डैरो

एक मुड़ी हुई छड़ी को सीधा करने के लिए हमें इसे विपरीत दिशा में मोड़ना पड़ता है।

—मानटेन

सौन्दर्य

सौन्दर्य के लिए प्रसन्नता से बढ़कर और कोई शृंगार नहीं है।

—लेडी ब्लैसिंगटन

जो कुछ आकर्षक और सुन्दर है, वह सदैव श्रेष्ठ नहीं होता ; किन्तु जो कुछ श्रेष्ठ है, वह सदैव सुन्दर होगा।

—निनन

सौन्दर्ययुक्त वस्तु आनन्द का चिरन्तन स्रोत होती है।—कीट्स

सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य। —कीट्स

सौन्दर्य ही वह उपकार है जो प्रकृति नारी को देती है और सर्वप्रथम ही लेती है। —मीरी

सौन्दर्य एक शक्ति है और मुस्कान इसका अस्त्र।

—चार्ल्स रीड

स्मरण रखो, संसार की सर्वाधिक सुन्दर वस्तुएं सर्वाधिक अनुपयोगी होती हैं, उदाहरणतः मयूर और कुमुदिनी। —रस्किन

दृश्य सौन्दर्य का आंशिक आवास दर्शक में भी होता है।

—बोवी

सुन्दरता का आभास संसार की महान वस्तुओं में से है। जो व्यक्ति उस वस्तु को पहचान लेते हैं जो साधारण व्यक्ति ग्रहण नहीं कर सकते, वे भी महान व्यक्तियों में से हैं।

—जनरल स्मट्स

सौन्दर्य प्रायः मद्य से भी अधिक भयानक होता है। यह सौंदर्य-वान और सौंदर्यदर्शक दोनों को मदहोश बना देता है।

—जिमरमैन

सौन्दर्य का सर्वोत्तम अंश वही है जो किसी कलाकृति के द्वारा व्यक्त न हो सके। —बेकन

भलाई सौन्दर्य को कितना निखार देती है! —हन्ना मोर

जो कुछ सुन्दर है वह श्रेष्ठ होगा, और जो श्रेष्ठ है वह शीघ्र ही सुन्दर बनकर रहेगा। —साफो

सौन्दर्य तो सर्वत्र विराजमान है, अतः प्रत्येक वस्तु हमें प्रसन्नता प्रदान करती है। —रवीन्द्र

सौन्दर्य वह लोभ है जो पुरुष को नारी की ओर आकर्षित करता है, और शक्ति चाहे मानसिक हो या शारीरिक, स्त्री को पुरुष की ओर आकर्षित करती है। —कैनेथ वालसर

सौन्दर्य तो दर्शक के नेत्रों में वास करता है। —रोम्यां रोलां

सुन्दर वही है जिसकी कृतियां सुन्दर हों। —फील्डिंग

नैन सलोने अधर मधु, कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लौन पै, अरु मीठे पै लौन॥ —रहीम

हास्य

हास्य वह यन्त्रांश है जिसके अभाव में जीवन-रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है।

—स्वामी रामतीर्थ

शुभ्र हास्य तो गृहस्थी में सूर्य के उज्ज्वल रश्मिहास के समान है।

—ठैकरे

सबसे सुन्दर हास्य उसीका है जो अन्त तक हंसता रहे।

—अंग्रेज़ी लोकोक्ति

बिना हास्य में भाग लिए हुए भी हास्य स्फुटित कर देना हास्य के प्रभाव को और भी बढ़ा देता है।

—बाल्ज़क

मैं हर वस्तु पर हंसने की शीघ्रता इसलिए करता हूं कि कहीं मुझे रोना न पड़े।

—ब्यूमार्काइ

केवल मनुष्य ही ऐसा जीव है जो हास्य की शक्ति से सम्पन्न है।

—ग्रविल

मनुष्य को संतापों की दाहक अग्नि में इतना झुलसना पड़ा है कि उसे बाध्य होकर हास्य का निर्माण करना पड़ा।

—नीत्शे

तुम हंसोगे तो संसार हंस पड़ेगा, किन्तु रोते समय तुम्हें अकेले ही रोना पड़ेगा, क्योंकि यह मर्त्यलोक केवल हास्य का इच्छुक है, रुदन तो इसके पास स्वयं अपना ही पर्याप्त है।

—एला व्हीलर विलकाक्स

मुस्कराहट से केवल होंठों का फड़क उठना ही हंसी की अन्तिम सीमा है।

—बालकृष्ण भट्ट

पद्य-भाग

गोस्वामी तुलसीदास

प्रेम सरीर प्रपंच रुज, उपजी अधिक उपाधि ।
तुलसी भली सुबैदई, बेगि बांधिए व्याधि ।।

तुलसी संत सुअंब-तरु, फूलि-फलहिं परहेत ।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत ।।

मुखिया मुख सो चाहिए, खानपान को एक ।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ।।

बिना तेज के पुरुष की, अवशि अवज्ञा होय ।
आग बुझे ज्यों राख को, आप छुवै सब कोय ।।

काम क्रोध मद लोभ की, जौ लौं मन में खान ।
तौ लौं पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान ।।

तुलसी तरु फूलत फलत, जेहि विधि कालहि पाय ।
तैसे ही गुण दोष-गत, प्रगटत समय सुभाय ।।

संत कबीर

सबसे सांचा है भला, जो सांचा दिल होय ।
सांच बिना सुख नाहिना, कोटि करै जो कोय ।।

माया त्यागे का भया, मान तजा नहिं जाय ।
जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सभनि को खाय ।।

हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय ।
मूरख था सो बहि गया, पारखि लिया उठाय ।।

संगति कीजै साधु की, हरै अवर की व्याधि ।
ओछी संगति कूर की, आठों पहर उपाधि ।।

प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय ।
कह कबीर प्रभु को भजै. प्रभुता चेरी होय ।।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित हुआ न कोय ।
एकै अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय ।।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
कह कबीर पुनि पाइये, मन ही की परतीत ।।

साधू ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय ।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ।।

न्हाए धोए का भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय॥

मांगन मरन समान है, मत कोई मांगो भीख।
मांगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

चन्दन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ।
चातुर तो एकहि भला, मूरख भले न साठ॥

सुख का सागर सील है, कोई न पावै थाह।
शब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहिं साह॥

गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान।
जब आवै सन्तोष-धन, सब धन धूरि समान॥

यह ऐसा संसार है, जैसे सेमर फूल।
दिन दस के व्यवहार को, झूठे रंग न भूल॥

सांचे साप न लागई, सांचे काल न खाय।
सांचा को सांचा मिलै, सांचे माहिं समाय॥

मन मथुरा, दिल द्वारिका, काया कासी जानि।
दसवां द्वारा देहरा, तामें ज्योति पिछानि॥

प्रीतम को पतिया लिखूं, जो कहुं होय बिदेस।
तन में, मन में, नैन में, ताको कहा संदेस॥

मारग चलते जो गिरैं, ताको नाहीं दोस ।
कह 'कबीर' बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस ॥

मीराबाई

ग्रौर सखी मद पी-पी माती, मैं बिन पियां ही माती ।
प्रेम भटी को मैं मद पीयो, छकी फिरू दिन राती ॥

ग्रगर चंदन की त्रिता रचाऊं, ग्रपने हाथ जला जा ।
जल-बल भई भस्म की ढेरी, ग्रपने ग्रंग लगा जा ॥

ऐसे बर को क्या करूं, जो जन्मे मरि जाय ।
बर वरिये इस सांवरो, मेरो चुड़लो ग्रमर हो जाय ॥

लोकलाज कुल की मर्यादा, यामें एक न राखूंगी ।
पिब के पलंगा जा पौढूंगी, मीरा हरि रंग रा चूंगी ॥

रैदास

तसबी फैरों प्रेम की, दिल में करौं नमाज ।
फिरौं सगल दीदार को, उसी सनम के काज ॥

तोड़ूं न पाती, पूजू न देवा ।
सहज समाधि करूं हरि सेवा ॥

उज्जू पाक किया मुंह धोया,
क्या मसजिद सिर नाया ।
दिल में कपट, नमाज पढ़े क्या,
क्या हज कावे जाया ।।

सो कत जानै पीर पराई।
जाकै अन्तर दरद न पाई ।।

जनमु सिरानो पंथु न संवारा ।
सांझ परि दह दिसि अंधियारा ।।

छांड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर[1] होई।
कहि रैदास जासौं और करत है, परमतत्त्व अब सोई ।।
राम-भगत को जन न कहाऊं, सेवा करूं न दासा।
जोग जग्य गुन कछू न जानूं, ताते रहूं उदासा ।।
भगत भया तो चढ़ै वड़ाई, जोग करूं जग मानै ।
जो गुन भया तो कहैं गुनी जन, गुनी आपको जानै ।।
ना मैं ममता मोह न महिमा, ये सब जाहिं बिलाई।
दोजख भिस्त दोउ सम करि जानूं, दुहुं ते तरक है भाई ।।
मैं अरु ममता देखि सकल जग, मैं से मूल गंवाई ।
जब मन ममता एक एक मन, तवहि एक है भाई ।।
कृस्न करीम राम हरि राघव, जब लगि एक न पेखा।
वेद कितेव कुरान पुरानन, सहज एक नहिं देखा ।।

---

१. सत्य का ।

गली - गली को जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो।
संगति से परताप महातम, नाम गंगोदक पायो ।।

धनी धरमदास

आगे-आगे दहि चलै, पाछे हरियर होइ ।
बलिहारी वा वृक्ष की, जड़ काटे फल होइ ।।

कागद की नइया वनी, डोरी साहेब हाथ ।
जौने नाच नचैहैं हो, नाचव वोही नाच ।।

तीरथ बरत कछू नहिं करहूं, वेद पढ़ौं नहिं कासी।
जंत्र मंत्र टोटका नहिं जानौं, निसदिन फिरत उदासी ।।
यहि घटि भीतर अधिक बसत है, दिये लोभ की टाटी।
धरमदास बिनवै कर जोरी, सतगुरु चरनन दासी ।।

माला तिलक उरमाइके, नाचै अरु गावै ।
अपना मरम जानै नहीं, औरन समुझावै ।।

जोवन जोर झकोर, नदी उर अन्तर बाढ़ी ।
सन्तो हो हुसियार, कियो ना वाहू गाढ़ी ।।

लख चौरासी भूमि के, पायो मानुष देह ।
सो मिथ्या कस खोवते, झूठी प्रीति - सनेह ।।

केती बार धुलाइये, दे - दे करड़ा धोय ।
ज्यों - ज्यों भट्टी पर दिये, त्यों - त्यों उज्जल होय ।।

दादू दयाल

आसिक मासुक ह्वै गया, इसक कहावै सोइ ।
'दादू' उस मासूक का अल्लहि आसिक होइ ।।

भोरे - भोरे तन करै, वंडै करि कुरवाण ।
मीठा कौड़ा ना लगै, 'दादू' तोहू साण ।।

रस ही रस बरषिहै, धारा कोटि अनंत ।
तहँ मन निहचल राखिये, 'दादू' सदा बसंत ।।

मुन सुरत रंगीली हो, कि हरि-सा यार करौ ।
छूटै विघन-बिकार, कि भौजल तुरत तरौ ।।

आपन को मारै नहीं, पर को मारन जाइ ।
'दादू' आपा मारे बिना, कैसे मिले खुदाइ ।।

मेहर मुहब्बत मन नहीं, दिल के वज्र कठोर ।
काले काफिर ते कहिय, मोमिन मालिक और ।।

'दादू' कथनी और कुछ, करनी करै कुछ और ।
तिनथें मेरा जिव डरै, जिनका ठीक न ठौर ।।

'दादू' निबरे नाम बिन, झूठा कथें गियान ।
बैठे सिर खाली करैं, पंडित वेद पुरान ।।

निंदक बपुरा जिन मरै, पर - उपकारी सोइ ।
हमकूं करता ऊजला, आपण मैला होइ ।।

दयाधर्म का रूखड़ा, सत सों बधता जाइ ।
संतोष सों फूलै - फलै, 'दादू' अमर फल खाइ ।।

यह मसीत यह देहरा, सतगुरु दिया दिखाइ ।
भीतर सेवा बंदगी, बाहिर काहे जाहि ।।

'दादू' सरवर सहज का, ता में प्रेम तरंग ।
तहं मन झूले आतमा अपने सांई संग ।।

सुरग नरक संसय नहीं जीवन मरण भय नाहिं ।
राम विमुख जे दिन गये, सो सालें मन माहिं ।।

'दादू' पाती प्रेम की विरला बांचे कोइ ।
वेद पुरान पुस्तक पढ़ें प्रेम बिना क्या होइ ।।

रोम - रोम रस पीजिये, ऐसी रसना होय ।
'दादू' प्याला प्रेम का, भौं बिन तृपति न होय ।।

हम सब देखा सोधि कैं, दूजा नाहीं आन ।
सब की एक हि आतमा, क्या हिन्दू - मुसलमान ।।

काहे को दुख दीजिए, साईं है सब माँहि ।
'दादू' एकै आतमा, दूजा कोई नाँहि ।।

जे पहुंचे ते पूछिए, तिनकी एकै बात ।
सब साधों का एक मत, बिच के बारह बाट ।।

स्वामी सुन्दरदास

'सुन्दर' पक्षी वृक्ष पर, लियौ बसेरा आनि ।
राहि रहे दिन उठि गये, त्यों कुटुम्ब सब जानि ।।

बीछू काटै दुख नहीं, सर्प डसै पुनि आइ ।।
'सुन्दर' जो दुख दुष्ट तें, सो दुख कह्यौ न जाइ ।।

जिस बंदे का पाक दिल, सो बंदा माकूल ।
सुन्दर उसकी बंदगी, साईं करैं कबूल ।।

मैं ही अति गाफिल हुई, रही सेज पर सोइ ।
'सुन्दर' पिय जागै सदा, क्योंकरि मेला होइ ।।

'सुन्दर' सांची कहतु है, जौ माने तौ मानि ।
यहै देह अति निंद्य है, यहै रतन की खानि ।।

'सुन्दर' याही देह में, हारि जीति को खेल ।
जीतैं सो जगपति मिलै हारे माया मेल ।।

'सुन्दर' सौदा कीजिए, भली वस्तु कछु खाटि।
नाना बिधि का टांगरा, उस बनिया की हाटि ॥

'सुन्दर' पंजर हाड़ कौ, चाम लपेट्यौ ताहि।
ता मैं बैठ्यौ फूलि कै, मो समान को आहि ॥

बाबा मलूकदास

सव बाजे हिरदे बजैं, प्रेम पखावज तार।
मंदिर ढूंढत को फिरै, मिल्यौ बजावन हार ॥

मसीत संवारी माणसा, तिसकूं करै सलाम।
ऐन आप पैदा किया, सो ढाहै मुसलमान ॥

कुंजर चींटी पसू नर, सब में साहिब एक।
काटै गला खुदाय का, करे सूरमा लेख ॥

मका मदीना द्वारका, बद्री अरु केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहै 'मलूक' विचार ॥

जे दुखिया संसार में, खोवो तिनका दुख।
दलिदर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख ॥

'मलूका' सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर ॥

सुमिरन ऐसा कीजिए, दूजा लखै न कोय।
होठ न फरकत देखिए, प्रेम राखिए गोय।।

देही तोय न ग्रापुनी, समुझि परी है मोहिं।
ग्रबहीं ते तजि राख तूं, ग्राखिर तजिहै तोहिं।।

इस जीने का गर्व क्या कहा देह की प्रीत।
बात कहत ढह जात है. वारू की सी भीत।।

दया धर्म हिरदै वसै, बोलै ग्रमरत वैन।
तेई ऊंचे जानिए, जिनके नीचे नैन।।

रहीम

'रहिमन' जो रहिवो चहै, कहै वाहि के दांव।
जो वासर को निसि कहै तो कचपची दिखाव।।
रीति-प्रीति सब सौं भली, बैर न हित मित गोत।
'रहिमन' याही जनम की, बहुरि न संगति होत।।

मान-सहित विष खाइके, सम्भु भए जगदीस।
बिना मान ग्रमृत पिये, राहु कटाये सीस।।

जो रहीम गति दीप की, कुल कुपूत की सोय।
वारे उजियारो लगे, बढ़े ग्रंधेरो होय।।

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
उहिं खाये बौराय जग, इहिं पाये बौराय ।।

यों रहीम सुख होत है उपकारी के संग ।
बांटनवारे के लगै, ज्यों मेहंदी को रंग ।।

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौ धीम ।
केहि की प्रभुता नहीं घटी, पर घर गये रहीम ।।

सब कोऊ सब सों करै, राम जुहारु सलाम ।
हित रहीम तब जानिए, जा दिन आवै काम ।।

दीन सबन को लखत है दीनहिं लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय ।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहां काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।

अमी पियावत मान बिन, रहिमन मोहि न सुहाय ।
प्रेम सहित मरिबौ भलौ, जो विष देय बुलाय ।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
विपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत ।।

•

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२

यदि आपको अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेता, रेलवे/रोडवेज़ बुक-स्टाल पर अपनी मनपसंद पुस्तकें मिलने में कठिनाई हो तो……

हिन्दी में प्रकाशित तथा उपलब्ध

किसी भी भाषा की कोई-सी भी पुस्तकें

घर बैठे

कम मूल्य पर

बिना डाक-खर्च

प्राप्त करने के लिए कहीं और जाने की जरूरत नहीं

भारत में पुस्तक-क्रांति लाने वाले प्रकाशन संस्थान

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० द्वारा संचालित

भारत के सर्वप्रथम बुक-क्लब

घरेलू लाइब्रेरी योजना

(बुक-क्लब)

के सदस्य बनिए

पूरा विवरण अगले पृष्ठों पर देखिए →

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० द्वारा संचालित 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' की विशेषताएं

1–यह बुक-क्लब पिछले दस वर्षों में सवा दो लाख से अधिक घरों में घरेलू लाइब्रेरियां खुलवा चुका है।

2–अपने सदस्यों की संतोषजनक सेवा करना तथा उनकी सम्मतियों और सुझावों के अनुरूप क्लब का संचालन करना इस बुक-क्लब की नीति का आधार है।

3–केवल बाज़ारू किस्म की छिछली और अश्लील पुस्तकें देकर ही अपने सदस्यों को दिमागी एय्याशी की बान डालना इस बुक-क्लब का लक्ष्य नहीं है।

4–यह भारत का एकमात्र ऐसा बुक-क्लब है जो अपने सदस्यों को संसार के किसी भी विषय की हिन्दी में उपलब्ध सारी पुस्तकों में से उनकी मनपसंद पुस्तकें चुनने की सुविधा देता है।

5–यह बुक-क्लब क्योंकि हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० जैसे प्रतिष्ठित-संस्थान द्वारा संचालित है, इसलिए इसके सदस्यों के आर्थिक हित सुरक्षित हैं।

6–इस बुक-क्लब की सदस्यता ग्रहण करके व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा मान में वृद्धि होती है।

यह उचित ही है कि जनसाधारण को सुन्दर और कम मूल्य की पुस्तकों के द्वारा साहित्यकारों और विद्वानों के विचारों की जानकारी मिले। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आपकी संस्था दस वर्षों से यह उपयोगी काम करती रही है।

—इन्दिरा गांधी

कृपया यहां दस
पैसे का डाक-
टिकट लगाएं

घरेलू लाइब्रेरी योजना
(बुक-क्लब)
जी० टी० रोड, शाहदरा,
दिल्ली-३२
DELHI-32

व्यवस्थापक
घरेलू लाइब्रेरी योजना
शाहदरा, दिल्ली-32

कृपया यह कार्ड भरकर आज ही हमें भेज दें। इसपर 10 पैसे का टिकट अवश्य लगाएं

महोदय,

मैंने घरेलू लाइब्रेरी योजना के नियम पढ़ लिए हैं। मैं योजना का सदस्य बनना चाहता हूं। नीचे लिखी मेरी पसन्द की पुस्तकों में से क्रमवार नौ रु० मूल्य की पुस्तकें आठ रु० में भिजवा दीजिए।

1. 2. 3.

4. 5. 6.

पहली बार सदस्यता-शुल्क के दो रुपये (जो मेरी अमानत के रूप में आपके पास जमा रहेंगे) जोड़कर कुल दस रुपये की वी० पी० भेजें। वी० पी० आते ही छुड़ा ली जाएगी।

पुस्तकों के अलावा यह सामग्री भी निःशुल्क भिजवाएं :

(क) प्लास्टिक कवर (ख) 50 पैसे का 'उपहार कूपन' (ग) सदस्यता-प्रमाणपत्र (घ) मासिक पत्रिका 'साहित्य संगम' (ङ) सूचीपत्र

नाम..

व्यवसाय..

पूरा पता..

डाकघर..

प्रदेश........................... हस्ताक्षर

W

ये सारी सुविधाएं और लाभ 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्यों के लिए हैं—

- हर महीने के पहले सप्ताह में सदस्यों को 9 रु० मूल्य की उनकी मनपसन्द पुस्तकें केवल 8 रु० की वी० पी० से भेजी जाती हैं। इस प्रकार प्रति मास 1 रु० का लाभ।
- हर महीने प्रत्येक पैकेट में 50 पैसे का एक 'उपहार कूपन' भी डाला जाता है, जिसपर महीने का नाम भी छपा होता है। इस प्रकार वर्ष-भर में इकट्ठे हुए 6 रु० के कूपनों के बदले आप इतने ही मूल्य की अपनी मन-पसंद पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। क्रम से चार महीनों के कूपनों के बदले आप हर चार महीने बाद 2 रु० मूल्य की पुस्तकें भी ले सकते हैं। कूपन महीनों के अनुसार क्रमवार ही भेजें।
- प्रतिमास लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र 'साहित्य संगम' नि:शुल्क ('साहित्य संगम' का वार्षिक चंदा 6 रु० है)।
- प्रति मास पैकिंग तथा डाक-खर्च 2 रु० 25 पैसे आता है। यह खर्च हम करेंगे। इस प्रकार एक वर्ष में 27 रुपये डाक-खर्च की आपको बचत होगी।
- पहले महीने पुस्तकों की रक्षा के लिए प्लास्टिक का बना 1 रु० मूल्य का पारदर्शक कवर बिना मूल्य।
- नई पुस्तकों की सूचना हर महीने के प्रथम सप्ताह में ही प्रत्येक सदस्य को नियमित रूप से दे दी जाती है।

अब आप स्वयं देखिए कि 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' आपके लिए कितनी लाभप्रद है! आज ही सदस्य बनिए।

सदस्यता-कार्ड पुस्तक के अंत में लगा है। आज ही भरकर भेज दीजिए

• सदस्य कैसे बनें ?

इस पुस्तक के अंत में लगे कार्ड पर अपना नाम, पूरा पता और अपनी पसंद की 9 रुपये मूल्य की पुस्तकों के नाम लिखकर हमें भेज दें। पुस्तकों का चुनाव अगले पृष्ठों पर दी हुई सूची में से कीजिए। यह कार्ड हमारे यहां पहुंचते ही आप 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्य बन जाएंगे। और हम आपको तुरन्त ही पहले पैकेट में 9 रुपये मूल्य की पुस्तकें, 1 रुपया मूल्य का प्लास्टिक का पारदर्शक पुस्तक-रक्षक कवर, 50 पैसे का 'उपहार कूपन', 'साहित्य संगम', बड़ी पुस्तक-सूची, सदस्यता-प्रमाण-पत्र आदि सभी कुछ 8 रुपये में भेज देंगे। केवल पहली वी० पी० में सदस्यता-शुल्क के 2 रुपये जोड़े जाएंगे (ये 2 रुपये आपकी अमानत के रूप में हमारे पास जमा रहेंगे)। इस प्रकार पहला पैकेट आपको 10 रुपये देकर छुड़ाना होगा। उसके बाद, हर मास 9 रुपये की पुस्तकें केवल 8 रुपये की वी० पी० से भेजी जाएंगी।

मैंने हिन्द पॉकेट बुक्स देखी हैं। हिन्दी में सस्ते दामों की पुस्तकों में यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। आप उपयोगी काम कर रहे हैं। मैं आपकी सफलता चाहता हूं।

—डॉ० राधाकृष्णन

हिन्द पॉकेट बुक्स अच्छी और सुन्दर छपी हैं। देखने में भी अच्छी हैं, पढ़ने में भी अच्छी और फिर सस्ती। अच्छे विचारों और अच्छी जानकारी को जनता में फैलाने में ये बहुत काम देंगी।

—डॉ० ज़ाकिर हुसेन

केवल इस बार निम्नलिखित पुस्तकों में से अपनी पसन्द की 9 रुपये मूल्य की पुस्तकें चुनिए। भविष्य के लिए 1,000 के लगभग उत्कृष्ट पुस्तकों की सूची तथा हर मास नई प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की सूचना महीने के प्रथम सप्ताह में ही नियमित रूप से आपको मिलती रहेगी।

उपन्यास : कहानी

एक रुपया सीरीज़

निर्मला — प्रेमचन्द
अंधी दुनिया — प्रतापनारायण टंडन
मिट्टी के सनम — कृश्न चन्दर
एक गधे की आत्मकथा — ,,
ग़द्दार — ,,
यादों के चिनार — ,,
खोया हुआ आदमी — कमलेश्वर
मन की घाटियां — अमरकान्त
मधुपुरी — राहुल सांकृत्यायन
पापी — रांगेय राघव
चेयरमैन — सत्यकाम विद्यालंकार
गुजराती की श्रेष्ठ कहानियां — सं० गोपालदास नागर
निन्नी — राजेन्द्र यादव
एक सवाल — अमृता प्रीतम

दो रुपये सीरीज़

अपराधिनी — शिवानी
एक चादर मैली सी — राजेन्द्रसिंह बेदी
यादें — आचार्य चतुरसेन
नीलमणि — ,,
निमंत्रण — ,,
पत्थर युग के दो बुत — ,,
संगम — वृन्दावनलाल वर्मा
झांसी की रानी — ,,
संकल्प — ,,
सितारों से आगे — कृश्न चन्दर
बोरबन क्लब — ,,
जब खेत जागे — ,,
प्यार एक खुशबू है — ,,
पराजय — ,,
कागज़ की नाव — ,,
चांदी का घाव — ,,
कार्निवाल — ,,
गंगा बहे न रात — ,,
आंख की चोरी — ,,
जलावतन — अमृता प्रीतम
एक थी अनीता — ,,
डाक्टर देव — ,,
नीना — ,,
हीरे की कनी — ,,
नागमणि — ,,
दिल्ली की गलियां — ,,
जेबकतरे — ,,
मैला आंचल — फणीश्वरनाथ रेणु
आत्महत्या — सुदर्शन चोपड़ा
मैली चांदनी — गुलशन नन्दा
बिन बरसा बादल — शेखर
कुंवारी सुहागिन — ,,
आंधियां — ,,

लांछन शेखर
बदचलन ,,
जन्मकैद के बाद ,,
सात समुन्दर पार
मुल्कराज आनन्द
भूल गुरुदत्त
ममता ,,
वनवासी ,,
परिवर्तन ,,
जागृति ,,
अनाड़ी अश्क
सुहाग के नूपुर अमृतलाल नागर
दादा कामरेड यशपाल
सुखदा जैनेन्द्रकुमार
भंवर भैरवप्रसाद गुप्त
दिल की दुनिया इस्मत चुगताई
सपने टूट गए दत्त भारती
बासठ दिन ,,
प्रायश्चित्त आदिल रशीद
मुक्ति-पथ इलाचन्द्र जोशी
बम्बई रात की बांहों में अब्बास
कलाकार का प्रेम नानकसिंह
अंधेरे बंद कमरे मोहन राकेश
न आने वाला कल ,,
आखिरी आवाज़ रांगेय राघव
बंदूक और बीन ,,
राई और पर्वत ,,
घरौंदा ,,
नरक मन्मथनाथ गुप्त
उनसे न कहना
भगवतीप्रसाद वाजपेयी
पतिता की साधना ,,
सूना आसमान बलवन्तसिंह
चढ़ती धूप रामेश्वर शुक्ल अंचल
मैं फिर आऊंगी ए० हमीद

तूफान की रात ए० हमीद
गुमराह ,,
चरित्रहीन शरत्चन्द्र
शरत् की श्रेष्ठ कहानियां ,,
दो बहनें रवीन्द्रनाथ ठाकुर
आनन्द मठ
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
अपनी छाया आस्कर वाइल्ड
यौवन की आंधी पियरे लुई

दो रुपये पचास पैसे सीरीज़

प्रतिशोध गुरुदत्त
प्रेम या वासना टाल्स्टाय

तीन रुपये सीरीज़

वैशाली की नगरवधू
आचार्य चतुरसेन
सोमनाथ ,,
अद्भुत मानव ,,
मृगनयनी वृन्दावनलाल वर्मा
मृगतृष्णा गुरुदत्त
प्रवंचना ,,
विक्रमादित्य ,,
तब और अब ,,
झील के उस पार गुलशन नन्दा
कोई शिकायत नहीं दत्त भारती
कलंक ,,
ओ मेरे अपने ,,
दुनिया एक बाज़ार
ताराशंकर वन्द्योपाध्याय
आंख की किरकिरी टैगोर

चार रुपये सीरीज़

वाममार्ग गुरुदत्त
गिरते महल ,,

धूप-छांव गुरुदत्त
वयं रक्षामः आचार्य चतुरसेन
गोली ,,
सोना और खून ,,

फिल्म-उपन्यास

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

आनन्द हृषिकेश मुकर्जी
तीसरी कसम फणीश्वरनाथ रेणु
दस्तक राजेन्द्रसिंह बेदी
सात हिन्दुस्तानी अब्बास
दो बूंद पानी ,,

प्रत्येक का मूल्य तीन रुपये

सारा आकाश राजेन्द्र यादव
कटी पतंग गुलशन नन्दा
धर्मपुत्र आचार्य चतुरसेन

जासूसी उपन्यास

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

मौत का जाल कर्नल रंजीत
रहस्यमयी रमणी ,,
खून के छींटे ,,
भयानक बौने ,,
उड़ती मौत ,,
सात पर्दे ,,
मेजर बलवंत बंगला देश में
चीनी सुन्दरी चन्दर
मौत की घाटी में ,,
पीकिंग की पतंग ,,
तरंगों के प्रेत ,,

कविता-शायरी

एक रुपया सीरीज

बच्चन के लोकप्रिय गीत बच्चन
नीरज के लोकप्रिय गीत नीरज
महादेवी के लोकप्रिय गीत महादेवी वर्मा
गीतांजलि रवीन्द्रनाथ ठाकुर
फूल और अंगारे फिराक

दो रुपये सीरीज

मधुशाला बच्चन
फिर दीप जलेगा नीरज
तुम्हारे लिए ,,
मयखाना सं० प्रकाश पण्डित
उर्दू की श्रेष्ठ प्रेम-कविताएं ,,
उर्दू ग़ज़ल के नये रंग ,,
दीवान-ए-ग़ालिब ग़ालिब

हास्य-व्यंग्य

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

ज़माना बदल गया बेढब बनारसी
लफ्टंट पिगसन की डायरी ,,
हँसगुल्ले काका हाथरसी
ससुराल शौकत थानवी
चलता पुर्ज़ा ,,
माडर्न अलादीन फिक्र तौंसवी

जीवनोपयोगी

एक रुपया सीरीज

सफलता के सूत्र संतराम बी० ए०
उन्नति के उपाय ए० पी० परेरा

दो रुपये सीरीज़

सफलता के आठ साधन
जेम्स ऐलन

भावनाओं के चमत्कार
डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा

अमर वाणी (सूक्तियां)
मानसहंस

पंचतन्त्र आचार्य विष्णु शर्मा

तीन रुपये सीरीज़

महान व्यक्तियों की झलक
विराज एम० ए०

ज्ञान-विज्ञान

एक रुपया सीरीज़

कल क्या होगा अनु० अजय

विज्ञान के महारथी
रोजर बर्लिंगेम

दो रुपये सीरीज़

सरल पत्र-व्यवहार
विराज एम० ए०

विविध

दो रुपये सीरीज़

आत्मकथा
खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां

फांसी के फंदे तक यशपाल

जय बांगला देश विनोद गुप्त

चम्बल के हत्यारे
रामकुमार भ्रमर

पति-पत्नी (सेक्स)
डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा

सेक्स और यौवन ,,

योग के आसन सातवलेकर

न्यूयार्क से होनोलूलू
प्राणनाथ सेठ

जर्मनी : देश और निवासी
उदयनारायण तिवारी

प्रेम और हत्या के रहस्यमय
मुकदमे प्रकाश पण्डित

संगीन जुर्म रंगीन मुजरिम
सुदर्शन चोपड़ा

तीन रुपये सीरीज़

भारत के क्रांतिकारी
मन्मथनाथ गुप्त

मेरी कहानी नेहरू

हिन्दुस्तान की कहानी ,,

व्यावहारिक हिन्दी शब्दकोश

चार रुपये सीरीज़

पॉकेट अंग्रेजी-हिन्दी कोश

●

ऊपर दी हुई पुस्तकों में से अपनी मनपसंद नौ रुपये मूल्य की पुस्तकें चुनकर संलग्न कार्ड में भर दें तथा कार्ड पर 10 पैसे का डाक-टिकट लगाकर हमें भेज दें।

अमर वाणी

•

विभिन्न देशों के विचारकों, साहित्यि[illegible] कवियों और महान पुरुषों ने जीवन [illegible] जगत् के संबंध में बहुत सुलझे हुए वि[illegible] सूक्तियों के रूप में कहे हैं। इन सूक्ति[illegible] की विशेषता है उनकी पैनी शैली [illegible] मार्मिकता। सैकड़ों पुस्तकों के सार के रूप में यह 'अमर वाणी' आपका मनोरंजन तो करेगी ही, आपको सोचने के लिए भी प्रेरित करेगी।

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स